॥ श्री ॥

पंडित श्री देवचन्द्र गणि विरचित

॥ अध्यात्मगीता ॥

पंडित श्री अमीकुवरजी कृत बालाबोध सहिता

तथाच

आत्मधारा २ अध्यात्मबत्तीसी ३ आगम अध्यात्म स्वरूप ४ निमित्त उपादानकारण भेदनिर्णय ५ ध्यानबत्तीसी ६ और साधुवन्दना ७ इत्यादि.

जिन्हे

मुमुक्षु जनों के पठनार्थ रतलामनिवासी

श्रावक

ताराचंदजी निहालचंद व धनरूपजी हीराचन्द कोठारी ने

यथामति संशोधन करके मुद्रित कराकर प्रकाशित किये

रतलाम :

पांडे अम्बालालजी रामप्रताप खर्रा के

स्वकीय "डायमंड ज्युबिली" यन्त्रालय में

मुद्रित हुए

सन् १८९९ ई०—संवत् १९५५ विक्रमाब्द

प्रस्तावना.

विदित हो कि श्री पंडित देवचन्द्र गणी विरचित यह अध्यात्म-गीता नामक ग्रन्थ पहले ढाल चौपाई में ही मिलता था इस कारण भव्य जनों की श्रद्धा और आस्था होते हुए भी ग्रन्थ का अर्थ भली भांति समझने में बडी कठिनता पडती थी, इस लिये बहुत दिनों से इस के अर्थ की खोज में थे निदान संवत् १९५५ में श्रीरतलाम नगर मध्ये श्रीनिंबवाले उपासरे के भंडार मे से बालाबोध नामक टीका सहित इस ग्रन्थ की हस्त लिखित प्रति प्राप्त हुई जिस को श्रवण करने से बहुतसे लोगों को अति आनन्द प्राप्त हुवा और उन्हों ने इस को छपाने का आग्रह किया कि यह परम उपकारक ग्रन्थ छप जाय तो बहुत उत्तम बात है. अनेक श्रावकों का ऐसा उत्साह देखकर हम यह ग्रन्थ और इस के साथ और भी उपयोगी ग्रन्थ छपवाकर आप लोगो को भेट करते हैं. हमे दृढ आशा है कि आप लोग पक्षपात तथा दुराग्रह बुद्धि वर्जित करके इन ग्रन्थों को ध्यानपूर्वक पढेगें पढावेगें, श्रवण करेगे, और विचारेंगे तो श्रीजिनराज की कृपा से परम आनन्द को प्राप्त होवेंगे. इन पुस्तको के संशोधन में जहां तक हम से बन सका उतना प्रयत्न किया है तथापि कोई भूलचूक रह गई हो तो उस के लिये आप लोग क्षमा करेंगे; तथा अनुग्रह पूर्वक उस की सूचना हम को अवश्य देवेगे कि दूसरी वार छापने में शुद्ध होजाय

विशेष प्रार्थना यह है कि आप लोग इस पुस
पूर्वक रक्खें तथा असातना नहीं होने देवें; क्योंकि
होने से पूजने योग्य है.

॥ दोहा ॥

पोथी प्यारी प्रेम की, हिय हिवड़े का
जीव जतन करि राखियो, पोथी सेती

इन सब पुस्तकों को शुद्ध करने में डायमंड ज्यु
के अध्यक्ष पंडित रामप्रतापजी खर्रा ने बहुतही सहा
लिये उन का उपकार मानते हैं. तथा जिन २ महा
ग्राहक होकर तथा अन्य प्रकार से सहायता देकर
बढ़ाया है उन को भी धन्यवाद देते हैं.

रतलाम :

मिती चैत्र बदी ८ सं १९५५. निहालचंद

सूचीपत्र।

अध्यात्मगीता	पृष्ठ	१—८०
आत्मधारा	"	८१—९५
श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवन	"	९६
ज्ञानपच्चीसी	"	९७-९८
प्रर्थाना	"	९९—१००
अध्यात्म बत्तीसी	"	१—४
श्रीतीर्थंकर की स्तुति.	"	४
जीवमहिमा.	"	४
आगम अध्यात्मस्वरूप	"	५—१०
अष्टपदी	"	१०
निमित्तउपादानकारण भेद निर्णय	"	११—१७
परमार्थ हिंडोलना.	"	१७—१८
ध्यानवत्तीसी	"	१९—२२
साधुवन्दना	"	२३—३१
रामायण	"	३२
छुट्टा पद	"	३३—३४

पुस्तक मिलन का ठिकाना:—

बाबू चांदमल बालचंद

चौमुखी पुल

रतलाम (मालवा).

विज्ञापन

॥रत्नसार॥

जैन मार्गानुयायी सज्जनों के पढ़ने पढ़ाने और विचारने योग्य तथा धर्मसम्बन्धी यह अति उत्तम ग्रन्थ है. इस में द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरण करणानुयोग इत्यादिक अनेक विषयक प्रश्न है जैसे—पांच इंद्रियना विकार मिटे कीहा गुण निर्मलता होय,? जीव—नें खेद ऊपन्यो किम टलै? दान शील तप श्या वडे होय? भाव नव निधान कोनें कहिये? बोध समाधिक नो श्यो? लक्षण? हेय ज्ञेय, उपादेय के लक्षण, धर्म के प्रकारै? इत्यादिक अनेक गूढ विषयों को प्रश्नोत्तर द्वारा भली भांति समझाकर ग्रन्थकार ने संसारी जीवों का बड़ा उपकार किया है. ऐसे अलभ्य पुस्तक का अध्ययन विचार करके भव्यजीव संसार सागर से तरने का उपाय कर सकें इस आशा से हमने यहग्रन्थ छपाने का काम आरंभ करदिया है. और ग्रन्थ शीघ्रही छपकर तयार होनेवाला है. जिन श्रद्धालु जैनी भाइयों को यह ग्रन्थ लेना हो नीचे लिखे ठिकाने से मंगालेवें. हम ने इस ग्रन्थ का थोड़ी पुस्तकें छपाई हैं इसलिये यह ग्रन्थ लेने में चूकनेसे पछताना पड़े तो कुछ आश्चर्य नहीं. मूल्य १) एक अगाऊ है.

हमारे पास ये पुस्तक छपकर तयार हैं:—

आतमधारा १ ज्ञानपचीसी २ अध्यात्म बत्तीसी ३ आगम अध्यात्म स्वरूप ४ निमित्त-उपादान कारण भेद निर्णय ५ ध्यान बत्तीसी ६ साधुवन्दना ७ इत्यादि सब पुस्तकों को संग्रह का मूल्य।-)

बाबू चांदमल बालचंद
चौमुखी पुल
रतलाम (मालवा)

॥ ॐ श्री वर्द्धमानायनम॰ ॥ ॐ श्री गौतमायनमः ॥

पंडित श्रीदेवचन्द्र गणि विरचित

॥ अध्यात्मगीता ॥

श्री संवेगी सिरदार शिरोमणि, जिन उत्तम पदपंकज रूप,
शिष्य अमी कुंवर कृत बालाबोध सहिता ॥

॥ ढालभंवरगाथानी ॥

प्रणमिये विश्वहित जिनवाणी। माहानंद तरु सींचवा अमृत पाणी॥ माहा मोहपुर भेदवा वज्रपाणी। गहन भवफंद छेदन कृपाणी॥१॥

अर्थः—प्रणमिये कहतां नमस्कार प्रतें करिये छे केहनें नमस्कार करिये छे? के विश्वहित जिनवाणी एटले विश्व कहतां जगत्त्रयना जीव, तेहनें हेतना करणवाली जिनवाणी कहतां जिनेश्वर देवनी वाणी, तेहनें नमस्कार प्रतें करिये छे एटले वली जिनवाणी केहवी छे? के माहानंद तरु सीचवा अमृत पाणी. एटले माहा कहता जे मोटो, अने नद कहता जे आणदमयी, एहवो मोक्षरूपी यो तरु कहतां वृक्ष, तेहनें सीचीने नव पल्लव करवानें जिनवाणी केहवी छे ? के अमृत समाणी कहतां अमृत समान जाणवी एटले वली जिनवाणी केहवी छे ? के माहा मोहपुर भेदवा वज्रपाणी एटले माहा कहता जे मोटो, मोह रूप पुर कहता जे नगर, तेहनें भेदवानें जिनवाणी केहवी

छे ? के वज्रसमाणी कहतां वज्र समान जाणवी. एटले जिम वज्रै करीने इंद्र असुरादिकना नगर प्रते विडारे तिम, इहां जिनेश्वर देव, वाणी रूप वज्रै करी सित्तर कोडाकोड मोहनी कर्म रूप स्थिति छे तेहने विडारी, एक कोडाकोडिनी मांहिली पासे आणी मेलै. ए परमार्थ. एटले वली जिनवाणी केहवी छै ? के गहन भवफंद छेदन कृपाणी. एटले गहन कहतां जे आकरी, एहवी भवरूप फंद कहतां जे अटवी, तेहने छेदवा नें जिनवाणी केहवी छे ? के कौवाड़ी समान जाणवी ॥ १ ॥

॥ चाल सूरती महिनानी ॥

द्रव्य अनंत प्रकाशक, भासक तत्व स्वरूप।
आतम तत्व विबोधक, शोधक सच्चिद्रूप ॥
नय निक्षेप प्रमाणे, जाणे वस्तु समस्त।
त्रिकरण योगे प्रणमूं, जैनागम सुप्रशस्त॥२॥

अर्थः— वली जिनवाणी केहवी छे ? के द्रव्य अनंत प्रकाशक. एटले द्रव्य अनंत कहतां उदय भावने जोगै करी, जीव अजीव रूप अनंता द्रव्य जगत्त्रयने विषै रह्या छे, तेहने जिनवाणी केहवी छे ? के प्रकाशना करणवाली छे. अने भासक तत्व स्वरूप कहतां आतम तत्वनी भासननां करणवाली छे. आतम तत्व विबोधक शोधक सच्चिद्रूप. एटले वली जिनवाणी केहवी छे ? के आतम तत्व विबोधक कहतां आतम तत्वना बोधनी करणवाली छे. एटले जिनवाणी सांभलतां थकां आतम बोध बीजनी प्राप्ती प्रते पांमै. अने वली जिनवाणी केहवी छे ? के शोधक सच्चिद्रूप. एटले शोधक सच्चि-द्रूप कहतां ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंत गुण आत्माने विषै शक्ति-

पणै रह्या छे, तेहने जिनवाणी केहवी छे ? के शुद्धनी करणवाली जाणवी. जिम सोना ने विषे मैल रह्यो छे ते सोनो, अग्निने जोगै करी शुद्ध थाय तिम, आतमा ने विषे कर्म रूप मैल रह्यो छे ते आतमा, जिनवाणीने जोगै करी शुद्ध थाय छे. ए परमार्थ जाणवो. नयनिक्षेप प्रमाणै, जाणै वस्तु समस्त एटले वली जिनवाणी केहवी छे ? के नय कहता नैगमादि सात नय करी, अने निक्षेप कहतां नामादि च्यार निक्षेपे करी, अने प्रमाणै कहतां प्रत्यक्ष परोक्ष बे प्रमाणै करी, जिनवाणी केहवी छे ? के समस्त वस्तु पदार्थनां जाण पणाना करणवाली छे त्रिकरण योगे प्रणमूं, जैनागम सुप्रशस्त एटले अन्यमतीना शास्त्र छे ते तो अप्रशस्त छे, अने जिनमतीना आगम छे ते प्रशस्त छे, एहवो जैनागम, तेहने त्रिकरण जोगे कहतां मनै करी, वचनै करी, कायायै करी प्रणमू कहतां नमस्कार प्रतै करूं छू ॥ २ ॥ इति श्री जिनवाणी ने नमस्कार जाणवा ॥

हवे अध्यातमगीतानो उपदेश करयो ते मुनिप्रतै ओलखावै छे. एटले अध्यातमगीताना उपदेशक, ते मुनि केहवा छे ?

ढालः—जिणै आतमा शुद्धतायै पिछाण्यो।
तिणै लोक अलोकनो भाव जाण्यो ॥
आतमरमणी मुनी जगवदीता । उपदिश्यूं
तेणे अध्यातमगीता ॥ ३ ॥

अर्थ.— एटले वली मुनि केहवा छे? के जिणै आतमा शुद्धतायै पिछाण्यो एटले जिणै पोताना आतमा ने शुद्ध रीतै पिछाण्यो कहतां जाण्यो ओलख्यो छे तिणै लोकालोकनो भाव जाण्यो, एटले ते

पोताना गुणनो कहिये. अने वीर्य पोताना ज्ञानादि अनंत गुणनै विषै फोरवै छे. इति सामान्य प्रकारे दानादि पंच लब्धिनो विचार जाणवो ॥ ४ ॥ एणी रीतै श्रीअध्यात्मगीता नां प्रकाशकरूप कर्त्ता नी स्तुति करी. हवै कर्त्ता, शिष्य ऊपर कृपा करी साते नयै जीवनो स्वरूप प्रतै ओलखावै छे:—

ढालः— संग्रह एक आया वखाण्यो। नैगमै
अंसथी जे प्रमाण्यो॥ दुविध व्यवहार नय
वस्तु विहंचै। अशुद्ध वलि शुद्ध भासन
प्रपंचै ॥ ५ ॥

अर्थः— संग्रह एक आया वखाण्यो कहतां संग्रह नयना मतवालो सत्तानो ग्रहण करै छे. एटले सर्व जीव सत्तायै एक रूप सरीखा छे. माटे संग्रह नयनै मतै सर्व जीव सत्तायै एक रूप जाणवा. अने नैगमे अंस थी जे प्रमाण्यो. एटले नैगमै अंसथी जे प्रमाण्यो कहतां, नैगम नयना मतवालो एक अंस ग्रहीनै सर्व वस्तुनो प्रमाण प्रतै करै छे. माटे सर्व जीव ना आठ रुचक प्रदेस, सदा काल सिद्ध समान निरावर्ण पणै वर्त्तै छे. एटले नैगम नयनै मतै अंसथकी सर्व जीव एक रूप सरीखा जाणवा. दुविध व्यवहार नय वस्तु विहंचै. एटले व्यवहार नयना मतवालो वैहंचण करीनें बोल्यो के एम नहिं; जीव ना बे प्रकार जाणवा अशुद्ध वलि शुद्ध भासन प्रपंचै. एटले एक अशुद्ध प्रकारै अने बीजा शुद्ध प्रकारै. एटले ए अशुद्ध शुद्ध रूप भासन करवा जाणपणारूप ओलखाण करवा सारू, वैहचण करी दिखाड़ै छे. एटले जीवना बे भेद— एक सकल कर्म क्षय करी लोकनै अंतै विराजमान ते सिद्ध, अने बाकी बीजा संसारी. ते संसारी

ना वे भेद— एक अयोगी ने बीजा सयोगी एटले चउदमां गुण स्थान ना जीव ते अयोगी, बाकी बीजा सयोगी. ते सयोगीना वे भेद— एक केवली, बीजा छदमस्त. एटले तेरमा गुण स्थान ना जीव ते केवली वाकी बीजा छदमस्त एटले छदमस्त ना वे भेद— एक चीण मोही, अने बीजा उपसत मोही एटले बारमा गुण स्थान ना जीव ते चीण मोही, अने बाकी बीजा उपसतमोही. ते उपसतमोही ना वे भेद—एक अकपायी अने बीजा सकपायी एटले अग्यारमा गुण स्थान ना जीव ते अकपायी,अने बाकी बीजा सकपायी.ते सकपायीना वे भेद-एक सूक्ष्म कपायी अने बीजा वादर कपायी एटले दसमा गुण स्थान ना जीव ते सूक्ष्म कपायी अने बाकी बीजा सर्व बादर कपायी ते बादर कपायी ना वे भेद—एक श्रेणी प्रतिपन्न अने बीजा श्रेणी रहित. एटले आठमा नवमा गुण स्थानना जीव ते श्रेणी प्रतिपन्न अने बाकी बीजा श्रेणीरहित. ते श्रेणीरहितना वे भेद—एक अप्रमादी अने बाकी बीजा सर्व प्रमादी एटले सातमा गुण स्थानना जीव ते अप्रमादी, अने बीजा सर्व प्रमादी ते प्रमादीना वे भेद—एक सर्व विरति अने बीजा देश विरति ते देश विरतिना वे भेद—एक विरति प्रणाम अने बीजा अवर्ति प्रणाम. ते अवर्ति ना वे भेद— एक अवर्ति सम्यक्ती अने बीजा मिथ्यात्वी. ते मिथ्यात्वीना वे भेद— एक भव्य बीजा अभव्य ते भव्य ना वे भेद— एक गंठी भेदी अने बीजा जीव गठी अभेदी. एटले एणी रीते व्यवहार नयना मत वालो जेहवो देखे तेहवो भेद विहचे ॥ ५ ॥

चालः— अशुद्ध परो पणसयतेसठी भेद
प्रमाण । उदय विभेदे द्रव्यना भेद अनंत
कहाण ॥ शुद्ध परो चेतनता प्रगटे जीव

विभिन्न । क्षयोपसमिक असंख ज्ञायिक एक अनन्न ॥ ६ ॥

अर्थः— वली व्यवहार नयनै मतै अशुद्ध शुद्ध प्रकारै करी जीवनो स्वरूप ओलखावै छे. अशुद्ध पणे पणसयतेसठी भेदप्रमाण एटले अशुद्ध पणै कहतां अशुद्ध प्रकारै करीनें. अने पणसयतेसठी भेद प्रमाण, एटले पण सयतेसठी कहतां जीवद्रव्यनां पांचसैनै त्रेसठ भेदनो प्रमाण जाणवो. उदय विभेदै द्रव्यना भेद अनंत कहाण. एटले उदय विभेदै कहतां उदय भावनें जोगै करीनें जोतां तो द्रव्यना भेद अनंत कहाण कहतां जीव द्रव्यना अनंता भेद जाणवा. शुद्धपणै चेतनता प्रगटै जीव विभिन्न. एटले शुद्धपणै कहतां शुद्ध प्रकारै करीनें, अने चेतनता कहतां जीवनी चेतना, अने प्रगटै कहतां निपजै, अने विभिन्न कहतां अभेदात्म पणे करी जाणवी. ज्ञयोपसमिक असंख ज्ञायिक एक अनन्न. एटले क्षयोपसमिक कहतां ज्ञयोपसम भावना असंख कहता असंख्याता भेद कहिये. अने ज्ञायिक एक अनन्न. एटले ज्ञायिक कहतां क्षायिक भावनो एक भेद जाणवो ॥ ६ ॥

ढालः— नामथी जीव चेतन प्रबुद्ध । क्षेत्रथी असंख देशी विशुद्ध ॥ द्रव्यथी स्वगुण पर्याय पिंड । नित्य एकत्व सहजी अखंड ॥ ७ ॥

अर्थः— हवे च्यार निक्षेपै करी जीवनो स्वरूप ओलखावै छै. नाम थी जीव चेतन प्रबुद्ध एटले नाम थकी जीवनें चेतन कहिये. एटले चेतना लक्षणो ते जीव. चेतना ते श्युं कहिये? के ज्ञान,

दर्शण, चारित्र, तप, वीर्य, अने उपयोग ए जीवनी चेतना. अने प्रबुद्ध कहतां एहवी रीते जाणवी. क्षेत्र थी असख देशी विशुद्ध. एटले चेत्र थकी कहतां जीवनें स्वचेत्र रूप असख प्रदेशी कहिये अने विशुद्ध कहतां शुद्ध निर्मलपणै करी जाणवो द्रव्यथी स्वगुण पर्याय पिंड एटले द्रव्य थकी कहता जीव द्रव्यनें स्वगुणने स्वपर्याय तेहनोज पिंड कहिये नित्य एकत्व सहजी अखंड. एटले नित्य कहता भावथकी जीव सदा काल शास्वतो नित्य वर्तै छै अने एकत्व कहतां निश्चय नयनै मतै जीव सदा काल पोताना स्वरूप में एकत्व पणै वर्तै छै अने सहजी अखंड कहतां सहज थकी जीव अखंड छै, कोईनो छेद्यो छेदाय नहीं, भेद्यो भेदाय नहीं, निर्लेप अखंड सदा काल शास्वतो छै ॥ ७ ॥

चालः—उजु सूयै विकल्प परिणामी जीव स्वभाव । वर्तमान परणातिमय व्यक्तै ग्राहक भाव ॥ शब्द नयै निज सत्ता जोतो इहतो धर्म । शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म ॥ ८ ॥

अर्थः—उजु सूयै विकल्प परिणामी जीव स्वभाव. एटले उजु सूयै कहतां रिजुसूत्र नयनै मतै अने विकल्प परिणामी जीव स्वभाव एटले जीव नो स्वभाव कहता जीव विकल्प रूप परिणामी भावनें ग्रहै छै वर्तमान परणति मय व्यक्तै ग्राहक भाव एटले वर्तमान कहता वर्तमान समय जे जीवनो जेहवो उपयोग वर्त्तै ते समय ते जीव नें, ए नयना मत वालो तेहवो कहि बोलावै शब्द नयै निज सत्ता जोतो इहतो धर्म. एटले शब्द नयनै मतै निज सत्ता कहतां पोतानी

आत्म सत्ता नें जोतो, अने इहतो धर्म कहता ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदै अनंतो धर्म पोतानी आत्म सत्ताने विषै रह्यो छै तेहनी प्रगट करवानी इहा (इच्छा) करतो. शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म. एटले शुद्ध कहतां निर्मल कर्मरूप मलथकी राहित, अने अरूपी कहतां पुद्गलादि विभाव दशा ना रूप थकी रहित, अने चेतन कहतां ज्ञानादि चेतना रूप लक्षण करीने सहित, अणग्रहतो नव कर्म. एटले अणग्रहतो नव कर्म कहतां जे समय जे जीवनो एहवो उपयोग वर्तें ते समय ते जीवनें नवा कर्मनो ग्रहण न जाणवो ॥ ८ ॥

ढालः— इण परै शुद्ध सिद्धात्म रूपी । मुक्तपर शक्त व्यक्त अरूपी ॥ सम्यकती देशवृत्ति सर्व विरती । धरै साध्य रूपै सदा तत्व प्रीति ॥ ९ ॥

अर्थः— एटले वली जीव केहवो छै ? के इण परै शुद्ध सिद्धात्म रूपी. एटले एणी परै शुद्ध कहतां निर्मल कर्म रूप लेप थकी रहित छै. अने सिद्धात्मरूपी कहतां निश्चय नयनै मतै जीव सत्तायें सिद्ध समान अरूपी छै. मुक्तपर शक्त व्यक्त अरूपी. एटले मुक्त पर कहतां जे समय जे जीवनो एहवी रीतें शुद्ध भासन रूप उपयोग वर्तें ते समय ते जीव मुक्तपर कहतां कर्मथकी मुकाय छै. अने एहवी रीते कर्मथकी मुकाय त्यारे शक्त, व्यक्त, अरूपी एटले शक्त कहतां अनंता गुण पोतानी आत्मसत्ता नें विषै शक्ति पणै रह्या छै, ते व्यक्त कहतां व्यक्तिरूप अरूपी पणै प्रगट थता जाय छै. एटले ए किहा किहा जीव ? एहवी रीते जांणपणो कोनें थयो ? एहवी रीते भासन कोनें थयो ? एहवी रीते रमण कोण करै छै ? के सम्यकती

देश वृति सर्व विरति एटले सम्यकती कहतां चोथा गुण स्थान वाला जीव, अने देश विरती कहतां पांचमा गुण स्थान वाला जीव, अने सर्व विरती कहतां छठा सातमां गुण स्थान वाला जीव, तेहनें एहवी रीते जांण पणा रूप भासन रमण थयो छै अने धरै साध्य रूपै सदा तत्व प्रीति. एटले धरै साध्य रूपै कहता पोतानों आत्मतत्व निरावर्ण करवा रुप जेवैजो त्यां जेहनी प्रीति प्रतें लागी छै, अने एहवी रीते प्रीति प्रतें लागी त्यारे ॥ ६ ॥

चालः— समभिरूढ नय निरावर्णी ज्ञाना-
दिक गुण मुख्य । ज्ञायिक अनंत चतुष्टय
भोगी मुग्ध अलक्ष ॥ एवं भूते निर्मल
सकल स्वधर्म प्रकाश । पूर्ण पर्याय
प्रगटै पूर्ण शक्ति विलास ॥ १० ॥

अर्थः— समभिरूढ नय निरावर्णी ज्ञानादिक गुण मुख्य. एटले समभिरूढ नयनें मतै शुक्ल ध्यान रूप अग्नीयै करी घाती कर्म नें क्षयै, निरावर्णी कहतां कर्मरूप आवर्ण नें अभावे, ज्ञानादिक अनंत गुण रूप लक्ष्मी प्रतें प्रगटै. अने ज्ञायिक अनंत चतुष्टय भोगी मुग्ध अलक्ष. एटले क्षायिक अनंत चतुष्टय कहता अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, ए चार अनत चतुष्टय रूप क्षायिक भावे प्रगटै. अने भोगी कहतां तेहना भोगने विषे सदा काल निरतर पणै जेहनो उपयोग प्रतें वर्ते छै. अने मुग्ध कहतां जे भोला लोक, अने अलक्ष कहतां तेहना लख्या में ए स्वरूप न आवे एवंभूते निर्मल सकल स्वधर्म प्रकाश. एटले एवभुत नयनें मतै निर्मल कहतां कर्मरूप मल थकी रहित, अने सकल कहतां सम्पूर्ण,

अने स्व कहतां पोतानो, अने धर्म कहतां ज्ञानादि अनंत गुण र
जे धर्म, अने प्रकाशक कहतां तेहनो सत्तागत ने विषै प्रकाश
प्रगटै. अने एहवी रीते ज्ञानादि अनंत गुण रूप धर्म नो प्रकाश
प्रगट्यो त्यारै, पूर्ण पर्याय प्रगटै पूर्ण शक्ति विलास. एटले पूर्ण कह
सम्पूर्ण अने शक्ति कहतां पर्याय रूप शक्ति नो विलास प्रतें
गवै ॥ १० ॥

ढालः— एम नय भंग संगै सनूरो । साधना सिद्धता रूप पूरो ॥ साधक भाव त्यां लगै अधूरो । साध्य सिद्धै नहीं हेतु सूरो ॥ ११ ॥

अर्थः— हवै साध्य साधन रूप जाण पणो करवा सारू जीव
स्वरूप ओलखावै छै. माटे, एम नय भंग संगै सनूरो. एटले
नय कहतां नयगमादि सात नयरूप नैगम १ संग्रह २ व्यवहार
रिजुसूत्र ४ शब्द ५ समभिरूढ ६ अने एवंभूत ७ एणी री
साते नयै करी, अने तेहना अठ्ठावीस उपनय कहतां नैगमना त्रणभे
एटले प्रथम वर्तमानै अतीत आरोपणी नैगम १, अने वर्तमा
अनागत आरोपणि नैगम २ अने वर्त्तमान नैगम ३ अने संग्र
नयना बे भेद—एक सामान्य संग्रह ४ अने बीजो विशेष संग्रह
अने व्यवहार नय ना बे भेद—एक शुद्ध व्यवहार ६ अने बी
अशुद्ध व्यवहार ७ अने रिजुसूत्र नयना बे भेद—एक सूक्ष्म रिजु
अने बीजो बादररिजु ९ शब्दनयनो एक भेद १० समभिरूढ न
नो एक भेद ११ अने एवंभूत नयनो एक भेद १२. हवै दश द्रव्य
स्तिक नय कहतां नित्य द्रव्यास्तिक १३ एक द्रव्यास्तिक १

सतद्रव्यास्तिक १५ वक्तव्यद्रव्यास्तिक १६ अशुद्ध द्रव्यास्तिक १७ अन्वय द्रव्यास्तिक १८ परम द्रव्यास्तिक १९ शुद्ध द्रव्यास्तिक २० सत्ता द्रव्यास्तिक २१ परमभावद्रव्यास्तिक २२ हवे पर्यास्तिक नय ना ६ भेद कहै छै—एटले प्रथम द्रव्यपर्याय २३ द्रव्य व्यंजन पर्याय २४ गुणपर्याय २५ गुणव्यंजनपर्याय २६ स्वभाव पर्याय २७ अनें विभाव पर्याय २८ एणी रीते अट्ठावीस उपनय नो स्वरूप जाणवो अने भंग कहतां एक एक नयना सौ सौ भांगा करतां ७ नयना सातसौ (७००) भांगा जाणवा. अने सगै कहतां तेहनें सगै करी नें सनूरो कहतां जीवनें दीपतो कहिये. अने साधना सिद्धता रूप पूरो. एटले जीव नें पूरो क्यारै कहिये ? के साधना कहतां शुद्ध व्यवहार नयनै मतै चोथा गुणस्थान थी मांडी यावत् तेरमा चउदमा गुणस्थान पर्यंत साधक भावै करी निश्चय नयनै मतै सिद्धिरूप कार्य प्रतें नीपजै त्यारै जीवनें पूरो कहिये. अने साधक भावत्यां लगै अधूरो. एटले जीव नें अधूरो केम कहिये ? के साधक भाव कहतां शब्द समभिरूढ नयनें मतै देशविरति सर्वविरति रूप साधक भाव छै त्यांलगै जीव ने अधूरो कहिये अने साध्य सिद्धै नहीं हेतु सूरो एटले साध्य कहतां पोतानो आत्मा निरावर्ण करवा रूप जेवेंजो अनेसिद्ध कहतां शुद्ध निश्चय नय सिद्धि रूप कार्य प्रतें नीपजै त्यारै नहीं हेतु सूरो एटले नहीं हेतु कहतां जीवनें साधन रूप कोई हेतु नो प्रयोजन न रह्यो ॥ ११ ॥

चालः— काल अनादि अतीत अनंते जे
पर रक्त। संगांगी परिणामै वर्त्तै मोहाशक्त॥
पुद्गल भोगै रीझ्यो धारै पुद्गल खंध।

पर कर्ता परिणामै बांधै कर्म नो बंध
॥ १२ ॥

अर्थः— हिवै जीवनो स्वरूप निगोदथकी मांडीनें देखावै छै. एटले काल अनादि अतीत अनंतै जे पररक्त. एटले अतीत कहतां अनादि काल नूं जीवनें पर पुद्‌गलादि विभाव दशानें विषे रक्त परिणाम वर्तै छै. तेस्येणै करीनें ? तो कै संगांगी परिणामै वर्तै मोहाशक्त. एटले संगांगी कहतां जीवै कर्‍यो संग, त्यारै मोहै दीधो अंग एटले संगांगी परिणाम थया तेणै करीनें स्यो विगाड़ थयो ? तोकै पुद्‌गल भोगै रींझ्यो धारै पुद्‌गल खंध. एटले पुद्‌गल भोगै रींझ्यो कहतां पुदगलना भोग नें विषै जीव रींझ्यो, एटले जिम २ पुदगलना भोग मिलै तिम तिम जीवनें अधिक २ रींझ उपजै. अने एहवी रीते पुद्‌गलना भोगनें विषै रींझ उपजी त्यारै, धारै पुद्‌गल खंध. एटले धारै पुद्‌गल खंध कहतां पुद्‌गलना खंध नें मेलवानी वंच्छारूप प्रणाम प्रतें वर्तै. अने एहवी रीते पुद्‌गलना खंध नें मेलवानी वंच्छा रूप प्रणाम वर्त्या त्यारै, परकर्ता परिणामै बांधै कर्म नो बंध. एटले पर कर्त्ता कहतां जीव पर नो कर्त्ता थयो अने एहवी रीते पर नो कर्त्ता थयो त्यारै बांधै कर्म नो बंध. एटले बांधै कर्म नो बंध कहतां जीव कर्म रूप पुद्‌गलना बंध प्रतें बांधवा मांड्या ॥ १२ ॥

ढालः— बंधक वीर्य करणै उदेरे ।
विपाकी प्रकृति भोगवै दल विखेरे ॥
कर्म उदयागता स्वगुण रोकै । गुण

विना जीव भवो भव ढोकै ॥ १३ ॥

अर्थः— बंधक वीर्य करणै उदेरे. एटले वधक कहतां जीव नवा नवा कर्मना बंध प्रतें केम वांधे ? तोकै वीर्य करणै उदेरे. एटले वीर्य कहतां पराक्रम, अने करण कहता इंद्री, अने उदेरे कहतां तेहनी प्रेरणायै करीनें, अने विपाकी प्रकृति भोगवै दल विखेरे एटले विपाकी कहतां शुभाशुभ प्रकृति रूप विपाक ना दलीया जीवनी सत्तायै रह्या छै, ते उदै आवै ते भोगवी नें विखेरे कहतां खेरवै. अने तेहनें विषे परिणाम रूप मननी चिकासै करी नवा कर्मना बंध प्रते बांधे, अने एहवीरीते नवा कर्मना बध प्रतें बांध्या त्यारे कर्म उदयागता स्वगुण रोकै. एटले कर्म उदय कहतां एहवी रीते ते कर्म नें उदय करी नें स्व कहतां पोताना गुण, तेहनें रोकै कहतां ढाकै, अने एहवी रीते पोताना गुण नें ढाकै त्यारे गुण विना जीव भवोभव ढोकै एटले गुण विना कहतां गुण विनानो जीव निर्गुणी थयो, अने निर्गुणी थयो त्यारै भवोभव नें विषे ढोकै कहता आथडे (भ्रमण करै) त्यारै शिष्य कहै केम आथडै ? ॥ १३ ॥

चालः— आत्म गुण आवर्णें न ग्रहे आत्म
धर्म। ग्राहक शक्ति प्रयोगे जोडे पुद्गल सर्म॥
पर लाभे पर भोग नें योगे थाये पर कर्त्तार।
एह अनादि प्रवर्तै वाधे पर विस्तार॥ १४॥

अर्थः— एटले आत्म गुण आवर्णें न ग्रहे आत्म धर्म एटले आत्म गुण कहतां एहवी रीते पोताना आत्म गुण नें कर्म रूप आवर्ण प्रतै लागा, त्यारे न ग्रहे आत्म धर्म एटले न ग्रहे आत्म धर्म

कहतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंतो धर्म आत्मा नें विषै रह्यो छै, तेहनो ग्रहण प्रतें न करै अने एहवी रीते आत्म गुण नो ग्रहण प्रतें न करै त्यारै, ग्राहक शक्ति प्रयोगै जोड़ै पुद्गल सर्म, एटले ग्राहक शक्ति कहतां आत्मानी ग्राहकता रूप जे शक्ति, अने प्रयोगै कहतां तेनें करीनें जोड़ै पुद्गल सर्म. एटले जोड़ै पुद्गल सर्म कहतां कर्म रूप पुद्गलना खंध प्रतै जोड़वा मांड्या, अने एहवी रीते कर्म रूप पुद्गलना खंध प्रतें जोड़वा मांड्या त्यारै, परलाभै परभोग नें जोगै थाये पर कर्त्तार. एटले परलाभै कहतां शुभाशुभ रूप पर पुद्गलना लाभ मिल्या तेहनें विषै लाभ पणो मान्यो १ अने दान कहतां शुभाशुभ रूप पर पुद्गलनो दान देईनें तेहनें विषै दान पणो मान्यो २ अने भोग कहतां शुभाशुभ रूप पर पुद्गलना भोग मिल्या, तेहनें विषै भोग पणो मान्यो ३ अने उपभोग कहतां शुभाशुभ रूप पर पुद्गलना उपभोग मिल्या, तेहनें विषै उपभोग पणो मान्यो ४ अने ए दानादिक चार लब्धिने विषै वीर्यनी शक्ति हती ते फोरववा मांडी. एटले ए पंच लब्धि स्वरूप अनुजाइ पणै जीव भूल्यो. त्यारै परअनुजाइ पणै अवली (उलटी) फोरववा मांडी. अने एहवी रीते अवली फोरववा मांडी, त्यारै जोगै थायै पर कर्त्तार. एटले जोगै कहतां तेहनें जोगै करीनें जीव पर नो कर्त्ता थयो अने परनो कर्त्ता थयो त्यारै, एह अनादि प्रवर्तै वाधै पर विस्तार. एटले एह अनादि कहतां एहवी रीते अनादि काल नी जीवनें अवली प्रवर्त्ती, थई त्यारै वाधै पर विस्तार, एटले वाधै पर विस्तार कहतां जीवनें कर्म रूप पर पुद्गल नो विस्तार प्रतै वधवा मांड्यो, त्यारै शिष्य कहै कर्म रूप पर पुद्गलनो विस्तार प्रतै केम वधवा मांड्यो ? ॥ १४ ॥

ढाल:— एम उपयोग वीर्यादि लब्धि ।

पर भाव रंगी करै कर्म वृद्धि ॥ पर दया-
दिक यदा सुह विकल्पै । तदा पुण्य कर्म
तणो वंध कल्पै ॥ १५ ।

अर्थः— एटले एम उपयोग वीर्यादि लब्धि कहतां एहवी रीते वर्यादि पचलब्धि नें विषे जीवनो अवलो उपयोग वर्त्यो, अने एम अवलो उपयोग वर्त्यो त्यारै पर भाव रंगी करै कर्म वृद्धि एटले पर भाव रंगी कहतां जीव पर स्वभाव रूप विभाव दशा नें विषे रंगाणो अने एहवी रीते पर स्वभाव रूप विभाव दशानें विषे रंगाणो त्यारै करै कर्म वृद्धि. एटले करै कर्म वृद्धि कहतां ते जीवे नवा नवा कर्मनी वृद्धि प्रतें करवा मांडी. अने पर दयादिक यदा सुह विकल्पै. एटले यदा कहतां जीवां रै जीवनो पर दयादि शुभ विकल्प थयो तदा पुण्य कर्म तणो बंध कल्पै. एटले तदा कहतां तिवारै जीव पुण्य रूप कर्मनो वंध प्रतें बांधै, अने एहवी रीते शुभाशुभ रूप कर्मना बंध प्रतें बांध्या त्यारै? ॥ ॥ १५ ॥

चालः— तेहिज हिंसादिक द्रव्याश्रव
करतो चंचल चित्त । कटुक विपाकी चेतन
मेले कर्म विचित्त ॥ आतम गुण नें हणतो
हिंसक भावे थाय । आतम धर्म नो रक्षक
भाव अहिंसक कहाय ॥ १६ ॥

अर्थः— तेहिज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चंचल चित्त. एटले तेहिज हिंसादि कहतां ते जीव पहिले गुणस्थान अण उपयोगे

मिथ्यात्व भावै, एहवी रीते हिंसादि आश्रव रूप प्रणामे चंचल स्वभावै शुभाशुभ रूप आश्रव नें दलीयै करी पोताना गुण नें ढांकै कहतां हणै, अने एहवी रीते पोताना गुण नें हण्या त्यारै, कटुक विपाकी चेतन मेलै कर्म विचित्र. एटले कटुक विपाकी कहतां ते जीव कड़वा विपाक प्रतें भोगवै; अने मेलै कर्म विचित्र एटले मेलै कर्म विचित्र कहतां जीव विचित्र विचित्र प्रकार ना कर्म प्रतै मेलवा (ग्रहण करवा) मांड्या, अने एहवी रीते कर्म प्रतें मेलवा मांड्या त्यारै, आत्म गुण नें हणतो हिंसक भावै थाय. एटले आत्म गुण नें हणतो कहतां एहवी रीते जे पोताना आत्मा ना गुण नें हणै तेहनें भाव हिंसा लागै. अने आत्म धर्म नो रक्षक भाव अहिंसक कहाय. एटले आत्म धर्म नो रक्षक कहतां शुभाशुभ विभाव दशा रूप पर पुद्गलनी वंच्छा थकी रहित, अने एक पोतानी आत्म सत्तायै ज्ञानादि अनंत गुण रूप धर्म रह्यो छै, तेहनी रक्षा प्रतें करै छै, ते जीव नें भाव अहिंसक कहतां भाव दया कहिये. अने एहवी रीते भाव दया रूप प्रणाम वर्त्या त्यारै? ॥ १६ ॥

ढालः— आतम गुण रक्षणा तेह धर्म । स्व गुण विध्वंसणा ते अधर्म ॥ भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति । तेहथी होय संसार छित्ति ॥ १७ ॥

अर्थः— आतम गुण रक्षणा तेह धर्म. एटले धर्म कोनें कहिये? तोकै एहवी रीते जे पोताना आत्म गुण नें निरावर्ण कहतां प्रगट करवानी वांच्छा रूप प्रणाम प्रतें वर्तै छै, अने जे गुण प्रगट्या छै

ते गुणनी रक्षा प्रतें करै छै ते जीवनें धर्मी कहिये. अने स्वगुण विध्वंसणा ते अधर्म. एटले अधर्म ते कोनें कहिये ? तो कै स्व कहतां पोताना गुण तेहनें विध्वसणै कहतां कर्म रूप आवर्णै करि हणैं ते जीवनें अधर्मी कहिये. अने भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति एटले भाव अध्यात्म कहतां एहवी रीते जेहने जाण पणो थयो छै, एहवी रीते जेहनें भासन थयो छै, एहवी रीते जे रमण करै छै ते जीव नें भाव अध्यात्मी कहिये. अने एहवीरीते भाव अध्यात्म रूप गुण प्रणम्यो त्यारै, अनुगत प्रवृत्ति एटले अनुगत कहतां एहवी रीते जे पोताना आत्म स्वरूप में प्रवृत्ति कहतां रमण प्रतें करै छै. अने एहवी रीते रमण प्रतें करै त्यारै तेहथी होय ससार छित्ति. एटले ते जीव ससारनो छै कहतां पार प्रतें पांमैं त्यारै शिष्य कहै एहवी रीते ससार नो पार प्रतें केम पामे ? ॥ १७ ॥

चालः— एह प्रबोधनो कारण तारण सद्गुरु संग । श्रुत उपयोगी चरणानंदी कर गुरु रंग ॥ आत्म तत्त्वालंबी रमता आत्म राम । शुद्ध स्वरूप नें भोगै जोगै जसु विश्राम ॥ १८ ॥

अर्थ— एटले एह प्रबोध कहतां एहवी रीते प्रतिबोध किहां पामीयै ? अने कारण कहतां एहवी रीते प्रतिबोधनो कारण किहां मिलै ? अने तारण कहतां एहवी रीते प्रतिबोध देई ने संसार थकी कौण तारै ? तोकै सद् गुरु सग एटले सद् गुरु संग कहतां जे भला गुरु तेहनो सग करतां, तेहनी सेवा करतां, तेहनी भक्ति करतां ससार समुद्र नो पार [illegible] ीयैं वली सद् गुरु केह-

अनंत गुण रूप जे लक्ष्मी तेहनो कर्त्ता कहिये. अने भोक्ता कहता व्यवहार नयनें मतै जीवनें शुभाशुभ रूप पर पुद्गलनो भोक्ता कहिये. अने निश्चय नयै जीवनें पोताना ज्ञानादि अनंत गुण रूप जे पर्य्याय तेहनो भोक्ता कहिये. अने एणी रीते निश्चय व्यवहार नयैं पोताना आत्मा नें कर्त्ता भोक्ता पणै जाण्यो त्यारै, गइ पर भीत. एटले गइ परभीत कहतां ते जीवनें भव ना भय प्रतें टलै, एटले भव ना भय प्रतें केम टल्या ? तोकै श्रद्धा योगै उपनो भाषण सुनयै सत्य. एटले श्रद्धा योगै कहतां श्रद्धा नें योगै अने सु नय कहतां भलै नयै करीनें सत्य भाषण रूप प्रतीत प्रतें प्रगटै. अने एहवी रीते सत्य भाषण रूप प्रतीत प्रतें प्रगटी त्यारै. साध्यालंबी चेतना वलगी आत्म तत्व. एटले साध्य कहतां पोतानो आत्मा निरावर्ण करवा रूप जेवै जो, अने चेतना वलगी कहतां त्यां जेहनी चेतना प्रतें लागी. अने एहवी रीते चेतना लागी त्यारै ? ॥ २० ॥

ढालः— इंद्र चंद्रादि पद रोग जाण्यो ।
शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो ॥ आत्म
धन अन्य आपै न चोरै । कोण जग दीन
वली कोण जोरै ॥ २१ ॥

अर्थः— इंद्र चंद्रादि पद रोग जाण्यो. एटले इंद्र चंद्रादि कहतां इंद्र चंद्र आदि चक्रवर्त वासुदेवना, बलदेवना इंद्रीजनित पुद्गलीक जे सुख, तेहनें रोग समान करी जाणै. एटले एहवीरीते इंद्री जनित पुद्गलीक सुखनें रोग समान करी केम जाण्यां ? तोकै शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो. एटले शुद्ध कहतां जे निर्मल कर्म रूप मलथकी रहित, एहवो पोताना आत्मानो सिद्धि रूप जे धन, तेहनें

पिछाण्यो कहता जाण्यो. एटले एहवी रीते पोताना आत्मा नो सिद्धि रूप धन प्रतें ओलख्यो त्यारे आत्म धन न आपै न चौरै एटले आत्म धन कहता पोताना आत्मानो ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनत गुण रूप जे धन, न आपै न चौरै. एटले न आपै कहतां ए कोई नें आप्यो अपाय नहीं, अने न चौरै कहता ए कोई नो लीधो लेवाय नहीं. कौण जग दीन वली कौण जोरै एटले जगत में कोई दीन पिण नथी जे तेहनें आपै, अने जगतमें कोई जोरावर पिण नथी जो खेंची लेवै. एटले निश्चय नयनें मते सर्व जीव सत्तायै एक रूप सरीखा ज्ञानादि अनत गुण रूप लक्ष्मीना धणी जाणवा. (एटले. लाली मेरे लालकी, ज्या देखूं त्यां लाल. (इस में कौन है कंगाल ?) तोके दिल की गाठ खोलत नहीं ताते फिरै कगाल) ॥ २१ ॥

चालः— आत्म सर्व समान निधान महा सुख कंद । सिद्धतणा साधर्म्मी सत्तायै गुण वृद ॥ जेह स्वजाति तेहथी कोण करे वध वध । प्रगट्यो भाव अहिंसक जाणे शुद्ध प्रबंध ॥ २२ ॥

अर्थः— एटले आत्म सर्व समान कहतां सर्व जीव सत्तायै एक-रूप सरीखा सामान्य पणे करी जाणवा, अने निधान कहतां निश्चय नयनें मतै सर्व जीव सत्तायै ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रूप निधानें करी नें सहित छै. अने महा सुख कंद एटले महा सुख कद कहता निश्चय नयनें मते सर्व जीव सत्तायै सुखना कंद कहतां मूल सामान्य करी जाणवा सिद्ध तणा साधर्मी सत्तायै गुण वृद. एटले सिद्ध तणा साधर्मी कहता निश्चय नयनें मतै सर्व जीवनो धर्म स-

त्तायै सिद्ध समान एक रूप सरीखो करी जाणवो. अने गुण वृंद कहतां निश्चय नयनें मतै सर्वजीव सत्तायै ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंत गुण रूप वृंद कहतां जे समूह तिणै करीनें सहित छै. अने एहवी रीते जेह स्वजाति तेहथी कौण करै वधबंध. एटले स्वजाति कहतां सर्व जीव सत्तायै एकरूप सरीखा छै, एक ठिकाणै थी आव्या, अने एक ठिकाणै जासी. तेहथी कौण करै वधबंध. एटले तेहथी बध बंध कहतां तिण सूं म्हारै छेदन भेदन रूप विरोध भाव करवो न घटै. एटले एहवीरीते विरोध भाव केम न करै ? तो कै प्रगट्यो भाव अहिंसक जाणै शुद्ध प्रबंध. एटले प्रगट्यो भाव अहिंसक कहतां ते जीवनें भाव दया रूप अहिंसक पणो प्रगटै. अने एहवी रीते भाव दया रूप अहिंसक पणो प्रगट्यो त्यारै. जाणै शुद्ध प्रबंध. एटले जाणै शुद्ध प्रबन्ध कहतां ते जीवनें शुद्ध प्रतिबोधनो लाभ प्रतें जाणवो अने एहवी रीते शुद्ध प्रतिबोधनो लाभ थयो त्यारै ? ॥ २२ ॥

ढालः— ज्ञाननी तीक्ष्णता चरण तेह । ज्ञान एकत्वता ध्यान गेह ॥ आत्मता दात्मता पूर्ण भावै । तदा निर्मलानंद संपूर्ण पावै ॥ २३ ॥

अर्थः—ज्ञाननी तीक्ष्णता चरण तेह. एटले चरण कहतां चारित्र वंत जीव ते कौने कहिये ? तोकै जीव अजीव रूप नव तत्व, षट् द्रव्य, नय, निक्षेप, प्रमाण, उत्सर्ग, अपवाद, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, भावनो स्वरूप जाणि, जीव सत्तानें ध्यावै; अजीव सत्तानों त्याग करै. ज्ञान, दर्शण, चारित्र रूप शुद्ध निश्चय नय ज्ञाननी तीक्ष्णता रूप उपयोग जेहनो वर्तै, तेह जीवनें चारित्रवंत कहिये. ज्ञान एकत्वता

ध्यान गेह एटले ध्यान नो गेह कहतां घर ते कोनें कहिये ? तो- कै एहवी रीते जे पोताना आत्म स्वरुप ना ज्ञान रूप ध्यान नें विषै एकत्व पणे, सदा काल निरतर पणें, जेहनो उपयोग वर्ते ते जीवनें ध्यान नो गेह कहतां घर प्रतें कहिये. एटले एहवी रीते ज्ञान ध्यान रूप जीवनो उपयोग वर्त्यों त्यारें, आत्मतादात्मता पूर्ण भावै. एटले आत्मतादात्मता कहतां आत्मानो तद्रूप स्वरूप जेहवो सत्तायै रह्यो छै तेहवो, अने ता पूर्ण भावै एटले ता कहतां तिमज अने पूर्णभावै कहता शुद्ध निश्चय नय सम्पूर्ण भावै करीनें सहित तदा निर्मलानद सम्पूर्ण पावै एटले तदा कहतां तिवारै अने निर्मल कहतां कर्म रूप मलथकी रहित अने नद कहतां आनंद मयी, अने सम्पूर्ण पावै कहतां सिद्धि रूप कार्य प्रतें सम्पूर्ण भावै करीनें नीपजै अने एहवी रीते सिद्धि रूप कार्य सम्पूर्ण भावै करीनें नीपजै त्यारै ? ॥२३॥

चालः—चेतन अस्ति स्वभाव में जेह न
भासै भाव । तेहथि भिन्न अरोचक रोचक
आत्म स्वभाव॥ सम्यक्त भावे भावें आत्म
शक्ति अनंत । कर्म नाशनो चिंतन नांणे
ते मतिवंत ॥ २४ ॥

अर्थ— चेतन अस्ति स्वभाव में जेह न भासै भाव एटले चेतन नो अस्ति स्वभाव कहतां शुद्ध निश्चय नय पोतानी आत्म सत्ता नें विषै ज्ञानादि अनंत गुण रूप स्फटिक रत्न समान अस्ति स्वभाव रह्यो छै; तेहनो कोई काले नास्ति पणो नथी; जेह न भासै भाव ए- टले जेह न भासै भाव कहतां ए अस्ति स्वभाव में शुभाशुभ रूप विभाव दशानो नास्ति पणो जाणवो; एटले ए शुभाशुभ रूप विभाव

दशा जीवनें अनादि कालनी लागीछे, ते व्यवहार नयनें मतै, पिण नास्तिक पणै जाणवी. तेहथि भिन्न अरोचक रोचक आत्म स्वभाव. एटले तेहथि भिन्न कहतां ए शुभाशुभ विभाव दशा रूप कर्मथकी आत्मा नो स्वरूप भिन्न कहतां जुदो छै; अने अरोचक कहतां ए विभाव दशाथकी एहवी दृष्टि वाला जीवनो अरुचि भाव वर्त्तै छै. त्यारै शिष्य कहै रुचि किहां वर्त्तै छै ? तोकै रोचक आत्म स्वभाव. एटले रोचक आत्म स्वभाव कहतां एहवी रीते जाण पणा रूप रमण जेहनें थयो छै, तेह जीवनें एक शुद्ध चिदानंद परमज्योति पूर्णब्रह्म रूप निर्मलानंद एहवो पोताना आत्मानो स्वरूप प्रगट करवा; रोचक कहतां रुचि जेहनी वर्त्तै छै. अने एहवी रीते रुचि प्रतें वर्त्ती त्यारै; सम्यक्त भावै भावै आत्म शक्ति अनंत. एटले सम्यक्त भावै कहतां एहवी रीते जाणपणा रूप सम्यक्त भावै करी नें जेणै पोताना आत्मानी अनंती शक्ति प्रतें जाणी छै; अने एहवी रीते अनंत शक्ति प्रतें जाणी त्यारै. कर्म नाशनो चिंतन नांणै ते मतिवंत. एटले मतिवंत कहतां एहवी निर्मल बुद्धि ना धणी शुद्ध भासन रूप जाण पणै करीनें, जेणै पोताना आत्मा नें कर्म रूप उपाधि थकी रहित, शुद्ध चिदानंद निर्मल परमज्योति सत्तायै सिद्ध समान, एहवी रीते जेणै निश्चय नयनें मतै जाण पणा रूप अन्तरंग प्रतीत करी छै, ते जीव कर्म नाशनो चिंतन नाणै; कहतां शुद्ध निश्चय नय करीनें जोतांतो स्फटिक रत्न समान आत्मानो स्वभाव निर्लेप छै. एटले जिम स्फटिक श्याम डंक नें जोगै करी नें श्याम दीखै अने राता डंकनें जोगै करी नें रातो दीखै; पिण ए डंक नें अभावै. जोतांतो स्फटिक निर्मलो छै, तिम आत्मानो स्वभाव शुद्ध निर्मल स्फटिक समान छै. पिण शुभाशुभ पुण्य पाप रूप डंकनें जोगै करी कर्म रूप आभा (प्रतिबिम्ब) पड़ी छै; पिण ए कर्म रूप डंक नें अभावै

करी नें जोताती आत्मा शुद्ध निर्मल परम ज्योति सत्तायें सिद्ध समान छै. (गाथा) जिम निर्मल तारे रत्न स्फटिक तणी, तिम जे जीव स्वभाव ॥ ते जिन वीरेरे, धर्म प्रकाशियो, प्रबल कषाय अभाव ॥ इतिश्री जश-विजयजी कृत सवा सौ गाथाना स्तवन मध्ये परमार्थ जाणवो एहवी रीति शुद्ध भासन रूप जाण पणाना धणी तेह जीव कर्म नाशनो चिन्तन कहता कायर पणो चित्तनें विषे न लावे जे म्हारे कर्म कीवारे टले. अने एहवी रीते कायर पणो केम न लावे ? ॥ २४ ॥

ढालः— स्वगुण चिन्तन रसै बुद्धि घाले । आत्म सत्ता भणीजि निहालै ॥ शुद्ध स्याद्वा-द पद जे संभाले । पर घरें तेह मति केम वाले ॥ २५ ॥

अर्थ — स्वगुण चिन्तन रसै बुद्धि घाले. एटले स्वगुण कहतां पोतानी आत्म सत्तानें विषे ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंता गुण रह्या छै अने चिंतन रसै बुद्धि घाले. एटले चिन्तन कहतां तेहना चिंतन नें विषे रसे करी नें युक्त बुद्धि जेहनी वर्त्ते छै. अने एहवी रीते रसै करी नें युक्त बुद्धि वर्त्ती त्यारें; आत्म सत्ता भणी तें निहाले. एटले आत्म सत्ता कहतां ज्ञानादि अनन्त गुण रूप पोतानी आत्म सत्ता नें अन्तर दृष्टियें करीनें निहाले कहता निरखी नें जोवे छे अने ए-हवी रीते पोतानी आत्म सत्ता नें जोवें त्यारे. शुद्ध स्याद्वाद पद जे संभाले. एटले शुद्ध कहता निर्मल कर्म रूप लेप थकी रहित अने स्याद्वाद कहतां स्याद्वाद रूप नित्य १ अनित्य २ एक ३ अनेक ४ सत्य ५ असत्य ६ वक्तव्य ७ अवक्तव्य ८ गुणांरीने आठ पक्षे करीनें सहित. अने पद कहता एहवो पोताना पद प्रतें, अने संभाले कहता

जाणै देखै छै. त्यारै शिष्य कहै, नित्य अनित्यादि आठ पक्षै करीनें पोतानो पद प्रतें केम संभालै कहतां जाणै देखै छै? त्यारै गुरु कहै भो! शिष्य स्याद्वाद मंजरी में कह्यो छैः— नित्या नित्याद्यनक धर्म सबलैक वस्तु, भ्युपगमत्वं स्याद् वादत्वं ॥ त्यारै शिष्य कहै ए नित्य आनित्यादि आठ पक्षे करी जीवनो स्वरूप केम जाणियै? त्यारै गुरु कहै, व्यवहार नयनें मतै उदय भावनें जोगै करी जे गति में जीव वर्त्तै छै, ते गति में नित्य छै. अने समय समय आऊखो घटै छै यातें अनित्य कहियेः पिण ते अनित्य पणा में पोतै नित्य पणै वर्तै छै. एटले ए नित्य में अनित्य, अने अनित्य में नित्य, ए व्यवहार नयनें मतै परमार्थ जाणवो। १।

हिवै निश्चय नयनें मतै नित्य अनित्य पक्षै करी जीवनो स्वरूप देखाड़ै छै. एटले निश्चय नयनें मतै जीवना चार गुण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने वीर्य, ए चार गुण, अने पर्य्याय में अव्याबाध अमूर्ति अने अणअवगाह, एटले ए चार गुण अने त्रण पर्य्याय जीवना नित्य छै. अने एक अगुरु लघु पर्य्याय जीव नें सर्वे गुणमां हानि वृद्धि रूप उपजवो विणसवो करै छै, माटै अनित्य कहिये. अने ए अगुरु लघु पर्य्याय सर्व गुण में हानि वृद्धि रूप उपजवो विणसवो करै छै तेहमां ए ज्ञानादि चार गुण ते नित्य पणै वर्त्तै छै. एटले ए नित्य में अनित्य, अने अनित्य में नित्य पक्ष नो विचार निश्चय नयनें मतै जाणवो। २।

हिवै व्यवहार नयनें मतै एक अनेक पक्षै करी जीवनो स्वरूप देखाड़ै छै. एटले व्यवहार नयनें मतै उदय भावनें जोगै करी जे गति में जीव वर्तै छै, ते गति में एक छै; पिण कोई नो बेटो, कोई नो बाप, कोई नो काको, कोई नो मामो, कोई नो भाई, कोई नो

भत्रीज, एम अनेक प्रकारै जीव में बेटापणो, बाप पणो, काका पणो, मामा पणो, भाईपणो, भत्रीज पणो, रह्यो छे. माटै एणी रीते अनेक पण कहिये. पिण ए बेटा, बाप, काका, मामा, भाई, भत्रीज पणा में पोता पणोते एक वर्त्ते छै. एटले ए एक में अनेक, अने अनेक में एक, पक्ष नो विचार व्यवहार नय नें मतै जाणवो। ३।

हिवै निश्चय नय करी जीव में एक अनेक पक्ष प्रतें देखाडे छै एटले निश्चय नय करी सर्व जीवनो धर्म सत्तायै एक रूप सरीखो छै माटै सर्व जीव एक काहिये, अने गुण पर्य्याय नें प्रदेश अनेक छै. एटले गुण अनन्ता, पर्य्याय अनता, अने प्रदेश असंख्याता, माटै अनेक पिण कहिये; अने ए गुण पर्य्याय नें प्रदेश अनेक छै, पिण तेहमां जीव पणो एक सरीखो छै, माटै एणी रीते अनेक में एक पण कहिये. एटले एहवी रीते निश्चय नय करी एक में अनेक, अने अनेक में एक पत्त नो विचार जाणवो ।४।

हिवै व्यवहार नयनें मतै जीव में सत्य असत्य पक्ष प्रतें देखाडे छै एटले व्यवहार नयनें मतै जीव पोतै पोताना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पणे करीनें सत्य छै अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, अने परभाव पणै करी नें असत्य छै एटले व्यवहार नयनें मतै द्रव्यथकी जीव द्रव्य जे गति में पोतै विराजमान थको वर्त्ते छै १ अने क्षेत्र थकी कहतां जेटलो क्षेत्र पोते अवगाहि कहतां मर्यादारूप पोतानो करीनें रोक्यो छै, २ अने कालथकी कहतां समय रूप पोताना आऊखा प्रमाणै काल वर्त्यों जाय छै ३ अने भाव थकी कहता सर्व जीव पोतै पोताना शुभाशुभ रूप भाव में रह्यो वर्त्ते छै. एटले एहवी रीते व्यवहार नयनें मते सर्व जीव पोतै पोताना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करीने सत्य छै अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभाव पणै करीनें असत्य छै, पिण

ए असत्य पणा में पोतानो सत्य पणो वर्त्तै छै. एटले सत्य में असत्य, अने असत्य में सत्य पक्षनो विचार व्यवहार नयनें मतै करी जाणवो। ५।

हिवै निश्चय नय करी जीव में सत्य असत्य पक्ष प्रतें दिखावै छै. एटले निश्चय नयनें मतै जीव पोतै पोताना स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वभाव पणै करीनें सत्य छै. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभाव पणै करी नें असत्य छै. एटले निश्चय नयनें मतै जीव में स्वद्रव्य कहतां ज्ञानादि गुण जाणवा १ अने स्वक्षेत्र कहतां जीव पोताना असंख्यात प्रदेश रूप स्वक्षेत्र अवगाहि रह्यो छै २ अने स्वकाल कहतां पोतानो अगुरुलघु पर्य्याय सदा काल हानि वृद्धि रूप उपजवो विणसवो करै छै ३ अने स्वभाव कहतां पोताना गुणपर्य्याय ४ तेणै करीनें जीव सत्य छै. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभाव पणै करी जीव असत्य छै. पिण ए असत्य पणा में पोतानो सत्य पणो वर्त्तै छै. एटले ए सत्य में असत्य, अने असत्य में सत्य पक्षनो विचार निश्चय नयनें मतै करी जाणवो। ६।

हिवै निश्चय व्यवहार नयै वक्तव्य, अवक्तव्य रूप पक्षै करी जीवनो स्वरूप प्रतें देखावै छै. एटले उदय भाव नें जोगै करी व्यवहार नयनें मतै जीव पहिले गुणस्थान सूं मांडी यावत् तेरमा चवदमा गुणस्थान पर्य्यंत वर्त्तै छै, ते जीवना जेटला गुण केवली भगवान ना परुपवा में आवै ते वक्तव्य, अने केवली भगवान ना परुपवा में न आवै ते अवक्तव्य. ७

अने निश्चय नयनें मतै सिद्ध परमात्मा गुण स्थान वर्जित लोकनें अंते विराजमान वर्त्तै छै, तेहना जेटला गुण केवली भगवानना परुपवा में आवै ते वक्तव्य, अने केवली भगवान ना परुपवा में न आवै ते अवक्तव्य. एहवी रीते निश्चय व्यवहार नय वक्तव्य, अवक्तव्य

रूप पचै करी जीवनो स्वरूप जाणवो ८ इति आठ पचै करी जीवनो स्वरूप ओलखवो.

अने पदजे संभालै एटले एहवू पोतानो पद प्रतें संभालै कहतां जाणै, ओलखै छै, अने एहवी रीते पोतानो पद प्रतें सभालै कहतां जाणै, ओलखै त्यारै, पर घरे तेह मति केम वालै. एटले पर घर कहता शुभाशुभ विभाव दशा रूप जे जड़ स्वभाव तिहाथकी मति निवारी नें पोतानो ज्ञानादि अनन्त गुण रूप जे घर तिहां जेहनी मति प्रतें वर्त्तै छै अने एहवी रीते मति प्रतें वर्त्ती त्यारै ? ॥ २५ ॥

चालः— पुण्य पाप बे पुद्गल दल भाषै परभाव । परभावै पर संगति पामैं दुष्ट विभाव ॥ ते माटै निजभोगी योगीश्वर सु प्रसन्न । देव नरक तृण मणि सम भासै जेहनें मन्न ॥ २६ ॥

अर्थः— पुण्य पाप बे पुद्गल दल भाषै परभाव. एटले पुण्य पाप कहतां पहिलै गुणस्थाने मिथ्यात्व भावनो पुण्य छै तेतो जीवनें शुभ प्रकृति रूप कर्मनो उदय छै. अने पाप छै तेतो जीवनें अशुभ प्रकृति रूप कर्मनो उदय छै. अने ए शुभाशुभ प्रकृति रूप कर्मना पुद्गल जीवनें अनादि काल ना लागा छै, ते पर स्वभाव रूप मोक्ष नगर जातां जीवनें विघ्न ना करणहार जाणवा अने एहवी रीते विघ्नना करणहार थया त्यारै; परभावै पर संगति पामैं दुष्ट विभाव. एटले परभावै पर संगति कहतां ए परस्वभाव रूप विभाव दशा नें संगै करीनें, पामैं दुष्ट विभाव. एटले पामैं दुष्ट विभाव कहतां एहवी रीते

अर्थः— सम्यग् रत्नत्रयी रसराच्यो चेतन राय. एटले सम्यग् कहतां भली प्रकारें, अने रत्नत्रयी कहतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप जे रत्नत्रयी, रसराच्यो चेतनराय, एटले चेतनराय कहतां चेतन महाराज रूप जे राजा, अने रस कहतां तेहना रसनें विषै, अने राच्यो कहतां एकत्व पणै वर्त्यों. अने एहवी रीते एकत्व पणै वर्त्यो त्यारै, ज्ञान क्रिया चक्रे चकचूरी सर्व अपाय. एटले ज्ञान क्रिया चक्रे कहतां ज्ञान क्रिया रूप चक्रै करीनें घाती कर्म रूप अपाय कहतां जे वैरी जीव नें अनादि कालना शत्रुभूत थईनें लागा हता, तेहनें चकचूरी कहतां चूरी बालीनें क्षय करै, अने एहवी रीते चूरी बालीनें क्षय केम करै ? तोकै, कारक चक्र स्वभावथी साधै पूरण साध्य. एटले कारक चक्र कहतां कर्त्ता १ कारण २ कार्य ३ संप्रदान ४ अपादान ५ अने अधिकरण ६ ए षट् कारक रूप जे चक्र तेणे करीनें, साधै पूर्ण साध्य. एटले साधै पूर्ण साध्य कहतां, ते जीव पोतानुं कार्य प्रतें साधै कहतां सम्पूर्ण नीपजावै. त्यारै शिष्य कहै— ए षट् कारक रूप चक्रै करीनें पोतानो कार्य प्रतें केम साधै ? त्यारै गुरु कहै— कर्त्ता जीव १ अने कारण रूप समकित गुण २ अने कार्य करवो छै केवल ज्ञान रूप ३ अने अपादान कहतां कर्म रूप अशुद्धताना आवर्ण टलता जाय ४ अने संप्रदान कहतां गुणश्रेणी रूप निर्मलता संपजती (प्रगटती) जाय ५ अने आधार कहतां ए केवल ज्ञान रूप कार्य में, छोये (छ कार्क) आधार भूत जाणवा ६ एणी रीते षट् कारक रूप चक्रै करी ते जीव पोतानो कार्य प्रतें नीपजावै. अने एहवी रीते ए षट् कारक रूप चक्रै करी पोतानो कार्य प्रतें नीपजावै, त्यारै कर्त्ता कारण कार्यें एक थया निराबाध्य. एटले कर्त्ता चेतन, अने कारण ज्ञानादि गुण, अने कार्य कहतां अनेक ज्ञेय पदार्थ जाणवा, देखवा रूप. अने एक थया

कहतां ए त्रण एकता पणै निराबाध्य कहतां अबाधा रहित नीपजै एटले एहवी रीते अबाधा रहित केम नीपजै ? ॥ २८ ॥

ढाल— स्वगुण आयुधथकी कर्म चूरै । असंख्यात गुणी निर्जरा तेह पूरै ॥ टलै आवरणथी गुण विकाशै । साधना शक्ति तिम २ प्रकाशै ॥ २९ ॥

अर्थ — स्वगुण आयुधथकी कर्म चूरै. एटले कर्मनें केम चूरै ? तोकै, स्वगुण आयुधथकी, एटले स्वगुण कहतां पोताना ज्ञानादि गुण रूप, आयुध कहतां जे हथियार, तेणे करी ने कर्म चूरै. अने एहवी रीते कर्म नें चूरै, त्यारै असंख्यात गुणी निर्जरा तेह पूरै एटले असख्यात गुणी कहतां ते जीव समय समय असंख्यात गुणी निर्जरा प्रतें करै, अने एहवी रीते निर्जरा करै, त्यारै, तेह पूरै. एटले तेह कहतां ते जीव, अने पूरै कहतां पोतानें स्वगुणै करी आत्मानें पूरै. अने एहवी रीते आत्मा नें केम पूरै ? तोकै, टलै आवरणै गुण विकाशै. एटले टलै आवरणै कहतां जिम जिम कर्म रूप पुद्गलना आवरण टलता जाय, अने गुण विकाशै कहतां तिम तिम आत्मगुण विकेस्वर कहतां प्रगट पणै थता जाय. त्यारै शिष्य कहै ? आत्म गुण केम विकेस्वर थाय ? त्यारै गुरु कहै— सूर्य आडा वादला आवै, त्यारै, सूर्यनी क्राति प्रतें दवाय, अने वादला जिम जिम पवन नें जोरै विखरता जाय, तिम तिम सूर्यनी क्रांति प्रकाश प्रतें पामती जाय, तिम इहां ए दृष्टान्ते आत्म गुण नें कर्म रूप वादला आडा आव्या, त्यारै आत्मानी गुण रूप क्रांति प्रतें दवाणी, पिण अंतर नें विषै आत्मा नें गुणरूप क्राति सूर्यनी

पेरै देदीप्यमान छै. माटे शुक्ल ध्यान रूप वायरा नैं जोगैं करी, जिम जिम कर्म रूप वादला बिखरता जाय, तिम तिम आत्मानें गुण रूप क्रांति प्रकाश प्रतैं पामती जाय. अने एहवी रीते गुण रूप क्रांति प्रकाश प्रतें केम पामें ? तोकै, साधना शक्ति तिम तिम प्रकाशै. एटले साधना कहतां पोतानो आत्म गुण रूप कार्य प्रतें साधवुं, तेहनें विषै निश्चलता रूप प्रणाम अने शक्ति कहतां पराक्रम रूप वीर्यनो उल्लास तेणे करीनें, अने तिम तिम प्रकाशै कहतां, श्रेणी रूप प्रकाश प्रतें बधतो जाय. अने एहवी रीते श्रेणी रूप प्रकाश प्रतें वध्यो त्यारे ॥ २९ ॥

चालः— प्रगट्या आत्म धर्म थया सवि
साधन रीत । बाधक भाव ग्रहणतां भागी
जागी नीत ॥ उदय उदीरणा ते पिण पूर्व
निर्जरा काज । अनभि सन्धि बंधकता
निरस आत्मराय ॥ ३० ॥

अर्थः— एटले एहवी रीते आत्मानी शक्ति प्रतें जागी त्यारैं, प्रगट्या आत्म धर्म थया सवि साधन रीत. एटले प्रगट्या आत्म धर्म. कहतां कर्म रूप आवरण नें अभावै, अनंत गुण रूप आत्मिक धर्म प्रतें प्रगटै. अने एहवी रीते अनंत गुण रूप आत्मिक धर्म प्रतें केम प्रगटै ? तोकै, थया सबि साधन रीत. एटले थया सबि साधन रीत कहतां, आत्मनी कर्तृत्वता भोक्तित्वादि पंच शक्ति तें अनादि कालनी पर अनुजाइ पणै अवली प्रणमी हती; तिहांथकी निवारी नें पोताना स्वरूप अनुजाइ रूप साधन पणै प्रणमावी. त्यारै, शिष्य कहै, ए पांच शक्ति स्वरूप अनुजाइ रूप साधन पणै केम प्रणमी ?

त्यारै गुरु कहै,—आत्मानी कर्तृत्वता रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी परकर्त्तापणै अवली प्रणमी हती, तिहां थकी निवारी नें पोताना स्वरूप कर्त्तारूप साधनपणै प्रणमावी १ अने आत्मानी भोक्तित्वता रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर पुद्गलादि विभाव दशाना भोग नें विषै प्रणमी हती, तिहां थकी निवारी नें पोताना स्वभाव भोगीपणै प्रणमावी २ अने आत्मानी रक्षकत्वा रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर पुद्गलादि विभाव दशाना रक्षक पणै प्रणमी हती, तिहां थकी निवारी नें पोताना स्वभाव रक्षकपणै प्रणमावी. ३ अने आत्मानी व्यापकत्वा रुप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर स्वभाव रूप विभाव दशा नें विषै व्यापी रही हती, तिहा थकी निवारी नें पोताना स्वभाव व्यापक पणै प्रणमावी. ४ अने आत्मानी ग्राहकता रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर ग्राहकपणै अवली प्रणमी हती, तिहां थकी निवारी नें पोताना स्वभाव ग्राहक पणै प्रणमावी ५ एहवी रीते ए पांच शक्ति अनादि कालनी पर अनुयाईपणै अवली प्रणमी हती, तिहा थकी निवारी नें पोताना स्वरूप अनुयाई रूप साधन पणै प्रणमावी, अने एहवी रीते स्वरूप अनुयाई रूप साधन पणै प्रणमी. त्यारै, बाधक भाव ग्रहणता भागी जागी नीत. एटले बाधक भाव कहतां अनादि काल नो ए पर स्वभाव रूप विभाव दशा निहारै, जीवनें बाधक भाव रूप ग्रहणपणो हतो, ते भाग्यो कहतां टल्यो अने एहवी रीते बाधक भाव टल्यो त्यारै, जागी नति, एटले जागी नीत कहता पर ग्रहण रूप अनित्यतापणो टल्यो अने स्वरूप ग्रहण रूप नित्यतापणो प्रगट्यो, अने एहवी रीते नित्यतापणो प्रग्रट्यो, त्यारै, उदय उदेरणा ते पिण पूर्व निर्जरा काज एटले उदय कहता

स्थिति पाकै उदय भाव नें जोगै करी जे कर्म उदय आवै, ते भोगवीनें निर्जरा प्रतें करै. अने उदीरणा कहतां जीवनी सत्तायै बंध रूप कर्मना पुद्गल लागा छै ते खैंची कहतां उदेरी—उदय आणी भोगवीनें निर्जरावै. अने एहवी रीते निर्जरावै त्यारै, अनभि सान्धि बंधकता निरस आतमराय. एटले अनाभि कहतां अनुक्रमैं, अने सन्धि कहतां सीम मर्यादानो अंत, तेहनें छेड़ो कहियें. एटले बारहमां गुणस्थान नें छेड़ै, अने आतमराय कहतां चेतन महाराज रूप जे राजा तेहनी सत्तायै बंधक कहतां बंध रूप कर्मना पुद्गल रह्या छै; ते निरस कहतां कषाय रूप रसथकी रहित लूखाजाणवा, अने एहवी रीते कषाय रूप रस थकी रहित लूखासपणै वर्त्या त्यारै ? ॥ ३० ॥

ढालः—देशपति जब थयो नित्यरंगी। तदा कुण थायै कुनय चाल संगी ॥ यदा आत्मा आत्म भावे रमाठ्यो। तदा बाधक भाव दूरे गमाठ्यो ॥ ३१ ॥

अर्थः—देशपति जब थयो नित्यरंगी. एटले देशपति कहतां जिम देशनो धणी, अने पति कहतां राजा, जब थयो नित्यरंगी. एटले जब कहतां जिवारे, अने थयो नित्यरंगी कहतां जेहनो चित्त नित्य मार्ग नें विषै रंगाणो, अने नित्य मार्गनो चालणहार थयो. तदा कुण थायै कुनय चाल संगी. एटले तदा कहतां तिवारै, अने कुनय कहतां ए कूडा नयरूप अनित्य मार्गनो चालणहार कुण होय ? एम इहां ए दृष्टांते देशपति कहतां असंख्यात प्रदेश रूप जे देश, अने ते देश नें विषै ज्ञानादि अनंत गुण रूप लक्ष्मी रही

छै, तेहनो पति कहतां धणी, एहवो जे चेतन महाराजा, जब थयो नित्यरगी एटले जब कहता जिवारै, अने थयो नित्यरगी कहतां ए पर स्वभाव रूप अनित्य मार्ग मूकीनें, पोताना स्वरूप में रमण करवा रूप नित्य मार्ग प्रतें पकड्यो. अने एहवी रीते नित्य मार्ग प्रतें पकड्यो, त्यारै, तदा कुण थायै कुनय चाल सगी. एटले तदा कहतां तिवारै अने कुनय कहतां ए कूडा (खोटा) नय रूप अनित्य मार्ग प्रतें केम चलवै ? एटले जे मार्गै पोतै चालै ते मार्गनो पर नें पिण उपदेश प्रतें करै. एटले एहवी रीते शुद्ध मार्गनो परनें उपदेश प्रतें कौन करै ? तोके, यदा आत्मा आत्म भावै रमाव्यो. एटले यदा कहतां जिवारै, अने आत्म भावै रमाव्यो कहतां जेणै पोताना आत्मानें आतमभाव नें विषै रमाव्यो कहता रमाड्यो ते करै. अने एहवी रीते आत्मभाव नें विषै रमाड्यो त्यारै, तदा बाधक भाव दूरै गमाव्यो. एटले तदा कहतां तिवारै, अने बाधक भाव कहतां अनादि कालनो ए पर स्वभावरूप विभाव दशा निहारै (देखे) जीवनें बाधक भावरूप ग्रहणपणो हतो ते दूरै गमाव्यो, एटले दूरै गमाव्यो कहतां तेहनो नाश प्रतें कर्यो. अने एहवी रीते बाधक भावनो नाश प्रतें केम कर्यो ? ॥ ३१ ॥

चालः— सहिज क्षमा गुण शक्तिथी छेद्यो
क्रोध सुभट्ट । मार्दव भावप्रभावथी भेद्यो
मान मरट्ट ॥ माया आर्जव योगै लोभते
निस्पृह भाव । मोह महा भट ध्वंसै ध्वंस्यो
सर्व विभाव ॥ ३२ ॥

अर्थः— सहिज क्षमा गुण शक्तिथी छेद्यो क्रोध सु भट्ट. एटले सहिज क्षमा गुण कहतां अकृत्रिम भाव रूप जे क्षमा गुण, अने शक्ति थी कहतां ए अकृत्रिम भाव रूप शक्तिये करीनें, छेद्यो क्रोध सुभट्ट. एटले छेद्यो क्रोध सुभट्ट कहतां ए मोह राजानो क्रोध रूपी जे सुभट्ट तेहनें छेद्यो कहतां निकंदन प्रतें कर्यो. १ मार्दव भाव प्रभावथी भेद्यो मान मरद. एटले मार्दव भाव कहतां मृदुता भाव रूप जे नरमास गुण, अने प्रभावथी कहतां तेहनें प्रभावें करी नें भेद्यो मान मरद. एटले मान मरद कहतां ए मान रूपी सुभट प्रतें भेद्यो कहतां छेद्यो, तेहनें उनमेली (उखेड़ी) नाख्यो. अने मरद कहतां एहवी रीते मान रूपी सुभटनो मरोड़ प्रतें मेट कीधो. २ माया आर्जव योगै लोभते निस्पृह भाव. एटले माया कहतां माया रूप जे कपट, अने आर्जव कहतां सरल स्वभाव पणो, अने जोगै कहतां तेहनें जोगै करी नें दूर प्रतें कर्यो ३ लोभते निस्पृह भाव. एटले लोभते निस्पृह भाव कहतां ए निर्लोभ रूप निस्पृही भाव थकी लोभ नो नाश प्रतें कर्यो.

४ मोह महा भट्ट ध्वंसै ध्वंस्यो सर्व विभाव. एटले मोह महा कहतां मोह रूप महा भट्ट कहतां जे सुभट, एहवो जे शूरवीर ते सर्वे अवगुण नें विषै राजा समान तेहनें ध्वंसै कहतां ध्वंसै, एटले हडसेली नाखै. एहवी रीते मोहने दूर करवै करीनें ध्वंस्यो सर्व विभाव. एटले ध्वंस्यो सर्व विभाव कहतां एह विभाव दशा रूप जे परस्वभाव; एहवी रीते सर्व अपाय कहतां जे पाप जीव नें अनादि कालना शत्रु भूतं थई नें लागा हता, तेहनें ध्वंस्यै कहतां ध्वंस्यो, एटले नाश प्रतें कर्यो. अनें एहवी रीते क्रोधादिक नो नाश प्रतें केम कर्यो ? ॥ ३२ ॥

ढालः—— इम स्वभाविक थयो आतम वीर । भोगवै आतम सपद सुधीर ॥ जेह उदया गता प्रकृति वलगी । अव्यापक थको खेरवे तेह अलगी ॥ ३३ ॥

अर्थ.—— एम स्वभाविक थयो आतम वीर. एटले आतम कहतां जे आत्मा, अने वीर कहता जे शूरवीर महा पराक्रमी अनत वलनो धणी कर्म शत्रुनो जीतण हारो अने एम स्वभाविक थयो कहता ए पर स्वभाव रूप विभाव दशा ने विषे प्रणम्यो हतो, तिहा थकी मति निवारी नें स्वभाविक कहतां पोताना स्वभाव ने विषे प्रणम्यो. अने एहवी रीते पोताना स्वभाव नें विषे प्रणम्यो त्यारें भोगवै आतम संपद सुधीर एटले आतम सपद कहतां ज्ञानादि अनंत चतुष्टय रूप पोतानी आतम सपदा प्रतें भोगवै कहतां विलसै अने सु कहता भली तरह अने धीर कहता अधीर पणो मूकीनें निर्भय थको भोगवै. अने जेह उदयागता प्रकृति वलगी. एटले जे उदयागता कहता उदय भाव नें जोगै, प्रकृति वलगी कहता जे आतम प्रदेशै कर्म रूप प्रकृति वलगी कहतां लागी छै, ते अव्यापक थको खेरवै तेह अलगी. एटले अव्यापक थको कहता अलिप्त पणै न्यारो रही जे कर्म रूप प्रकृति उदय आवै ते भोगवी ने खेरवै एणी रीते अलगी कहतां दूरै करीनें आतम गुण निरावर्ण प्रतें करै. त्यारें शिष्य कहे——आतम गुण केम निरावर्ण प्रतें करै ? ॥ ३३ ॥

चालः—धर्म ध्यान इकतानमें ध्यावे अरिहा सिद्ध । ते परिणतथी प्रगटी तात्विक सहज

समृद्धि ॥ स्व स्वरूप एकत्वे तन्मय गुण पर्य्याय । ध्यानै ध्याता निरमोही नें विकल्प जाय ॥ ३४ ॥

अर्थः— धर्म ध्यान इकतान में ध्यावै अरिहा सिद्ध. एटले धर्म ध्यान कहतां पोतानो आत्मिक धर्म सत्तागत नें विषै अनंतो रह्यो छै, ते धर्म नें औलखी प्रतीत करी तेहना ध्यान नें विषै प्रवर्तै. त्यारै शिष्य कहै—एहवी रीते ध्यान नें विषै केम प्रवर्तै ? तोकै एकतान में. एटले एकतान में कहतां शुद्ध शुक्ल ध्यान रूपातीत प्रणाम रूप एकत्व पणै, ध्यावै अरिहा सिद्ध. एटले अरिहा सिद्ध कहतां अरिहंत तथा सिद्ध नें गुणै पोताना आत्मा नें समतुल्य पणै सरीखो गिणी, अने ध्यावै कहतां एहवी रीते निरागता पणै औलखी नें तेहना ध्यान नें विषै प्रवर्त्तै. अने एहवी रीते ध्यान नें विषै प्रवर्त्यौ त्यारै. ते परिणतथी प्रगटी तत्विक सहज समृद्ध. एटले ते परिणितथी प्रगटी तत्विक सहज समृद्ध. एटले ते परिणितथी कहतां एहवी निर्मल शुद्ध आत्मानी प्रणित थकी अने प्रगटी कहतां नीपजी. त्यारै शिष्य कहै—श्यूं नीपजी ? तोकै, तत्विक सहज समृद्ध. एटले तत्विक कहतां तद् रूप पणै जेहवी सत्तायै हती तेहवी, अने सहज कहतां ए अकृत्रिम भाव रूप संपदा प्रतें, अने सम कहतां सम्पूर्ण अने रिद्ध कहतां पोतानी ज्ञानादि अनंत चतुष्टय रूप लक्ष्मी प्रतें प्रगटै. अने एहवी रीते पोतानी लक्ष्मी प्रतें केम प्रगटै ? तोकै, स्व स्वरूप एकत्वे तन्मय गुण पर्य्याय. एटले स्व स्वरूप कहतां पोताना आत्मिक स्वरूप नें विषै, अने एकत्व कहतां तेह नें विषै एकत्व पणै वर्त्तै. अने एहवी रीते एकत्व पणै केम वर्त्यौ ? तो कै, तन्मय गुण पर्य्याय. एटले तन्मय कहतां

तल्लालीन रूप, अने गुण पर्य्याय कहतां एहवी रीते पोताना गुण पर्य्यायना चिंतन नें विषे; ध्याने ध्याता निर्मोही नें विकल्प जाय. एटले ध्याने कहतां तेहना ध्यान नें विषे, अने ध्याता कहतां एहवी रीते एकत्व पणे वर्त्ते अने एहवी रीते एकत्व पणे वर्त्त्या त्यारे, निर्मोही नें विकल्प जाय. एटले निर्मोही कहतां ते जीव मोह रहित थाय, अने एहवी रीते मोह रहित थाय त्यारे, सर्वे विकल्प दूरे जाय एटले दूरे जाय कहतां तेहनो नाश प्रतें पामें. अने एहवी रीते नाश प्रतें केम पामे ? ॥ ३४ ॥

ढालः— यदा निर्विकल्पी थयो शुद्ध ब्रह्म । तदा अनुभवे शुद्ध आनंद शर्म्म ॥ भेद रत्न त्रयी तीक्ष्णताये । अभेद रत्न त्रयी में समाये ॥ ३५ ॥

अर्थ — एटले यदा निर्विकल्पी थयो शुद्ध ब्रह्म. एटले यदा कहतां जिवारे अने निर्विकल्पी थयो कहतां एहवी रीते चलाचल परणाम रूप विकल्प नुं रहित जीव थावे. अने एहवी रीते विकल्प नुं रहित जीव थावे त्यारे, शुद्ध ब्रह्म. एटले शुद्ध ब्रह्म कहता ते जीव शुद्ध पूर्ण ब्रह्म रूप निर्मलानन्द एहवो पोतानो पद प्रतें प्रगट करे. अने एहवी रीते पोतानो पद प्रतें प्रगट करे त्यारे, तदा अनुभवे शुद्ध आनन्द शर्म. एटले तदा कहता तिवारे अने अनुभवे कहता भोगवे. त्यारे शिष्य कहे—स्यूं भोगवे ? तोके, शुद्ध आनन्द शर्म्म एटले शुद्ध कहतां निर्मल विभाव दशा रूप उपाधि थकी रहित, अने आनंद कहतां एहवी रीते आनन्दमयी, अने शर्म्म कहता एहवो पोतानो मूल घर प्रतें भोगवे. अने एहवी रीते पोतानो मूल घर

प्रतें केम भोगवे ? भेद रत्न त्रयी तीक्ष्णतायै, अभेद रत्न त्रयी में समायैं. एटले भेद कहतां जुदी २ अने रत्नत्रयी कहतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप जे रत्न त्रयी, अने तीक्ष्णता कहतां तेहनें विषे तीव्रता रूप एकाग्रतापणै तन्मयनो उपयोग प्रतें वर्त्ते. अने एहवी रीते तन्मय रूप उपयोग प्रतें वर्त्यो त्यारै, अभेद रत्न त्रयी में समाय. एटले भेद रत्नत्रयी हती ते एक समय एकता रूप अभेदता पणे प्रणमी. अने एहवी रीते अभेद रूप एकता पणै प्रणामी त्यारै जाणवा, देखवा, रमण करवा रूप एक समय उपयोग वर्त्त्यों ? अने एहवी रीते जाणवा देखवा, रमण करवा रूप एक समय उपयोग केम वर्त्त्यों ? ॥ ३५ ॥

चालः— दर्शन ज्ञान चरण गुण सम्यग्
एक एकना हेतु । स्व स्व हेतु थया सम
कालै ते अभेदता खेत ॥ पूर्ण स्वजाती
समाधि घनघाती दल छिन्न । त्तायक भावै
प्रगटै आत्म धर्म विभिन्न ॥ ३६ ॥

अर्थः— दर्शन ज्ञान चरण गुण सम्यग् एक एकना हेतु. एटले सम्यग् कहतां भलै प्रकारै—सम्यग् ज्ञान, सम्यग दर्शन, अने सम्यग् चारित्र रूप जे गुण; अने एक एकना हेत कहतां दर्शन छै ते जीवनें सामान्य उपयोग रूप गुण छै. अने ज्ञान छे ते जीवने विशेष उपयोग रूप गुण छै. एटले दर्शन तथा ज्ञान ए बे नें विषै स्थिरता रूप एकाग्रता पणै उपयोग वर्तै ते चारित्र जाणवो. माटै ए त्रणै परस्पर एक एकना हेतु, कहतां माहोमांहि एक बीजाना हेतु रूप कारण जाणवा. एटले माहोमांहि एक बीजाना हेतु रूप कारण केम थया ? तोकै स्व स्व हेतु थया सम कालै ते अभेदता खेत.

एंटले स्व स्व हेतु थया कहता आप आपणा हेतु रूप, अने थया सम काले कहतां एक समय में ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप जे रत्नत्रयी ते एकता पणे प्रणमै अने एहवी रीते एकता पणे केम प्रणमै ? तोकै तेह अभेदता खेत एटले तेह कहतां तिमज, अने अभेद कहता एहवी रीते अभेदात्म पणै, अने खेत कहतां स्व क्षेत्र नें विषे जाणवा. अने एहवी रीते स्व क्षेत्र नें विषे केम प्रणम्या ? तोकै पूरण स्वजाति समाधि घनघाती दल छिन्न. एटले घनघाती दल छिन्न कहता घाती कर्म रूप घन कहतां जे समूह तेहना दलीया आत्म प्रदेश नें विषै लागा हता तेह नें छिन्न कहतां छेदी नाखे. अने एहवी रीते छेदी नांख्या त्यारै. पूर्ण स्वजाति समाधि एटले पूर्ण कहता सपूर्ण, अने स्व कहतां पोतानी, अने जाति कहतां ज्ञानादि अनत गुण एक राशि रूप जाति प्रतें प्रगटै, अने समाधि कहता तेह नें विषै सदा काल समाधि प्रतें वर्तै. अने एहवी रीते समाधि प्रतें केम वर्ति ? तोकै क्षायिक भावे प्रगट्या आत्म धर्म विभिन्न. एटले आत्म धर्म कहतां पोतानी सत्तागत नें विषै अनंतो आत्मिक धर्म शक्ति पणे रह्यो हतो ते व्यक्ति पणे क्षायिक भावे प्रगट्यो. अने विभिन्न कहतां एहवी रीते अभेदात्म पणै प्रगट करी लोकालोकना भासकरथका विचरै. अने एहवी रीते लोकालोकना भासकरथका विचरै त्यारै ॥ ३६ ॥

ढालः—पछै योग रोंधिथयो ते अयोगी ।
भाव सेलेसता अचल अभंगी ॥ पंचलघु
अक्षरे कार्य कारी । भवोपग्रही कर्म संतति
विडारी ॥ ३७ ॥

कहतां आत्मानो स्वरूप असंख्यात प्रदेश रूप अरूपी छै. अने अखंडा कहतां कोईनो खंड्यो खंडाय नहीं, भेद्यो भेदाय नहीं, छेद्यो छेदाय नहीं, सदाकाल शाश्वतो वर्ते छै, अने नंदा कहतां आनंदमयी. अने अबाह कहतां ए आनंद प्रगट्यो छै. पिण केहवो छै? तोकै, अबाध्य रूप पीड़ाथकी रहित जाणवो. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छै? ॥ ३८ ॥

ढालः— जिहां एक सिद्धात्मा तिहां छै
अनंता। अवन्ना अगंधा नहीं फासमंता ॥
आत्म गुण पूर्णतावंत संता। निराबाध
अत्यंत सुख स्वादवंता ॥ ३९ ॥

अर्थः— जिहां एक सिद्धात्मा तिहां छै अनन्ता. एटले जिहां एक सिद्धात्मा कहतां जेणै क्षेत्रै एक सिद्ध परमात्मा छै, तेणै क्षेत्र अनंता सिद्ध परमात्मा भेला मिली नें रह्या छै. पिण तें सिद्ध केहवा छै? तोकै, अवन्ना अगन्धा नहीं फासमंता. एटले अवन्ना कहतां पांच वरण थकी सिद्ध रहित छै. अने अगंधा बेगंधथकी पिण रहित छै. अने वली सिद्ध केहवा छै? तोकै, नहीं फासमंता. एटले नहीं फासमंता कहतां आठ फरस रूप शरीरथकी पिण सिद्ध रहित छै. अने वली सिद्ध केहवा छै? तोकै, आत्म गुण पूर्णतावंत संता. एटले आत्म गुण कहतां पोताना आत्माना ज्ञानादि अनन्त गुण, अने पूरण कहतां एहवी रीते सम्पूर्ण पणै अने संता कहतां संतभावै छता पणै प्रगट्या छै. अने वली सिद्ध केहवा छै? तोकै, निराबाध अत्यन्त सुख स्वादवंता. एटले, निराबाध कहतां सर्व प्रकारै अबाध्य रूप पीड़ाथकी सिद्ध रहित छै. अने वली सिद्ध केहवा छै?

तोकै, अत्यत सुख स्वादवता. एटले अत्यंत सुख कहता च्यारे निकायना देवताना इद्रीजनित पुद्गलीक जे सुख ते त्रणे कालना लेइनें भेला करिये, तेहनें अनन्त गुणा वर्ग वर्गित करिये; पिण सिद्ध परमात्मा अजरामर स्थानकै आत्मिक सुख अनुभवै छै, ते सुख नें तोलै एक समय मात्र पिण न आवै अने स्वादवता कहतां ए विभाविक सुखनें अभावै स्वभाविक सुखनो आस्वादन प्रतें करै छै. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? ॥ ३९ ॥

चालः— कर्त्ता कारण कार्य निज परिणामिक भाव । ज्ञाता ज्ञायक भोग्य भोक्ता शुद्ध स्वभाव ॥ ग्राहक, रक्षक, व्यापक, तन्मय तायें लीन । पूरण आतम धर्म प्रकाश रसै लयलीन ॥ ४० ॥

अर्थ.—कर्त्ता कारण कार्य्य निज परिणामिक भाव. एटले कर्त्ता ते सिद्धनो जीव, अने कारण कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण प्रतें कारण रूप नीपना छै, अने कार्य कहतां ते गुण में रमण करवा रूप कार्य जाणवो अने निज परिणामिक भाव एटले निज कहता पोतानो, अने परिणामिक भाव कहता नैगम, संग्रह नयनें मतै जीवनी सत्तायै परिणामिक भाव रह्यो हतो तेहवो जे एवंभूत नयनें मतै सिद्धि रूप कार्य प्रतें नीपनो तेहनें विषै वर्त्ते छै. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? तोकै, ज्ञाता ज्ञायक भोग्य भोक्ता शुद्ध स्वभाव एटले ज्ञाता कहतां ज्ञानै करीनें, अने ज्ञायक कहतां अनेक ज्ञेय पदार्थ प्रतें जाणै छै अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? तोकै, भोग कहता पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण रूप पर्य्याय प्रतें, अने भोक्ता कहतां तेहना

**कारण कारय धाम ॥ शुद्ध निक्षेप चतु-
ष्टय जुत्तो रत्तो पूर्णानंद । केवल नाणी
जाणे जेहना गुणनो छंद ॥ ४२ ॥**

अर्थः—सादि अनन्त अविनाशी अप्रयासी परिणाम. एटले वली सिद्ध केहवा छै? कै, सादि अनन्त. एटले सादि अनन्त कहतां एक सिद्ध आश्रय जे सिद्ध वस्था तेहनी आदि छै. जे आदि में सिद्धि वस्था पिण तेहनो पाछो फरि अंत नथी, जे फलाणै दिन सिद्ध पाछा संसार में आवसे (अर्थात् नही आवै) तेहनें सादि अनन्त भांगो कहिये. अने वली सिद्ध केहवा छै ? कै, अविनाशी. एटले अविनाशी कहतां ए सिद्धि पद निपनो छै, पिण फिरि पाछो विनाश पणो नथी. अने वली सिद्ध केहवा छै ? कै अप्रयासी परिणाम. एटले अप्रयासी कहतां सिद्ध प्रयास विना अनंतो आत्मिक सुख प्रतें भोगवै छै. अने परिणाम कहतां सिद्ध परमात्मा सदा काल निरंतर पणै पोताना परिणामिक भावनें विषै रह्या वर्त्तै छै. उपादान गुण तेहिज कारण कार्य धाम. एटले वली सिद्ध केहवा छै ? कै उपादान कहतां पोतानो आत्मा; अने गुण तेहिज कारण. एटले, गुण तेहिज कारण कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण कारण रूप प्रगट्या छै. अने कार्य कहतां अनेक ज्ञेय पदार्थ जाणवा—देखवा रूप पर्य्यायनो उत्पात व्यय समय २ होय रह्यो छै. अने एहवी रीते धाम कहतां घर, एटले पोताना आत्म स्वरूप नें विषै निवास प्रतें करयो छै; एटले ए त्रणे एक समय एकता पणै प्रणमै छै. शुद्ध निक्षेप चतुष्टय जुत्तो रत्तो पूर्णानन्द. एटले वली सिद्ध केहवा छै ? तोकै शुद्ध निक्षेप चतुष्टय जुत्तो रत्तो. एटले शुद्ध कहतां निर्मल, अने निक्षेप चतुष्टय कहतां चार निक्षेपै करी नें, जुत्तो कहतां जुक्त प्रतें वर्त्तै छै.

त्यारें शिष्य कहै. चार निक्षेपै करीनें सिद्ध नो स्वरूप केम

जाणिये? त्यारै गुरु तदवित (तद् व्यातिरिक्त) शरीर आश्रयै चार निक्षेपा कहे छै. एटले नाम सिद्ध कहतां सिद्ध ऐसो नाम त्रणे काल एक रूप शाश्वतो वर्त्ते छै ॥ १ ॥

अने थापना सिद्ध कहतां देहमान मध्येथी त्रीजो भाग घटाडी नें बे भागना शरीर प्रमाणे आत्म प्रदेश नो घन करी थापना रूप क्षेत्र अवगाही रह्या छै ॥ २ ॥

अने द्रव्य सिद्ध कहतां शुद्ध निर्मल असंख्यात प्रदेश नें विषै ज्ञानादि अनन्त गुण रूप छता पर्य्याय वरतु रूप प्रगट्या छै. इति तद्व्रित शरीर आश्रयै द्रव्य जाणवो ॥ ३ ॥

अने भावथकी सिद्धनो स्वरूप कहता सामर्थ पर्य्याय प्रवर्त्तना रूप अनन्तो धर्म प्रगट्यो छै; तेणै करीनें सदा काल नव नवाज्ञेयनी वर्त्तना रूप पर्य्यायनो उत्पात व्यय समय समय अनन्त अनन्तो होय रह्यो छे, तेणै करीनें सिद्ध परमात्मा अनतो सुख भोगवै छै॥ ४ ॥

एणी रीते ए चार निक्षेपै करी नें सिद्ध परमात्मा रक्तो कहतां सदा काल तेहनें विषै रक्त प्रतें वर्तें छै अने पूर्णानंद कहतां एहवीं रीते सम्पूर्ण आत्मिक सुखनो आनद प्रतें भोगवै छै. केवल नाणी जाणी तेहना गुण नो छन्द एटले केवल नांणी कहतां केवली भगवान, अने जाणे कहतां एहवी रीते सिद्ध नो स्वरूप प्रत्यक्ष पणे जाणे देखें; अने गुणनो छन्द कहतां ए सिद्ध परमात्मा नें अनंत गुण रूप समूह प्रतें प्रगट्यो छै, तेहनें विषे अनन्तो सुख भोगवै छै ते केवली भगवान नेज गम्य छै; पिण छदमस्त मुनीना जाण्या मां न आवै ॥ ४ २॥

ढालः—एहवी शुद्ध सिद्धता कारण ईहा ।
इंद्रिय सुख थकी जे निरीहा । पुद्गली

भाव ना जे असंगी । ते मुनि शुद्ध परमार्थ रंगी ॥ ४३ ॥

अर्थः— एहवी शुद्ध सिद्धता करण ईहा, एटले एहवी कहतां आगल वखाणी तेहवी, अने शुद्ध कहतां निर्मल, अने सिद्धता कहतां एहवी रीते सिद्ध परमात्मानी सम्पदा प्रतें, ते करण ईहा. एटले करण ईहा कहतां एहवी सिद्धि रूप सम्पदा प्रगट करवानी जे मुनि नें ईहा (इच्छा) प्रतें वर्तै ते मुनि केहवा छे? तोकै इंद्रिय सुख थकी जे निरीहा. एटले इंद्री सुख कहतां पंचेन्द्री ना त्रेवीस विषय रूप पुद्गलीक जे सुख, अने निरीहा कहतां तेहनी इहा रूप वंच्छा थकी रहित थका वर्तै छै. अने वली ए मुनि केहवा छै ? तौके पुद्गलीक भाव ना जे असंगी. एटले पुदगलीक भाव कहतां पोताना स्वरूप थकी भिन्न कहतां जुदो २ एहवो शुभाशुभ विभाव दशा रूप जे पुद्गलीक भाव, अने जे कहतां ते मुनि, अने असंगी कहतां तेहनी वंछा रूप संगथकी रहित न्यारा प्रतें वर्तै छै. ते मुनि शुद्ध परमार्थ रंगी. एटले ते मुनिराज शुद्ध कहतां निर्मल बुद्धिना धणी, अने परमार्थ कहतां साध्य एक साधन अनेक, एणी रीते सत्तागतना धर्म नें साधे. एहवी रीते परम कहतां उत्कृष्टो अर्थ साधवानें रंगी कहतां जेहनो चित्त प्रतें रंगाणो छै. अने एहवी रीते चित्त प्रतें रंगाणो त्यांरे ? ॥ ४३ ॥

चालः— स्याद्वाद आत्मसत्ता रुचि सम्यकित तेह । आत्मधर्म नो भासन निर्मल ज्ञानी जेह ॥ आत्मरमणी चरणी ध्यानी

आत्मलीन । आत्मधर्म रमो तेणै भव्य सदा सुख पीन ॥ ४४ ॥

अर्थ:— स्याद्वाद आत्मसत्ता रुचि समकित तेह. एटले वली ए मुनि केहवा छे ? तोकै स्याद्वाद कहतां अनेकता नयनी अपेक्षायै स्याद्वाद रूप नित्य अनित्यादि आठ पच्चै करीनें; आत्मसत्ता रुचि कहतां एहवी रीते पोतानी आत्मसत्ता नें ओलखी नें तेहनें प्रगट करवानी रुचि प्रतें वर्तें अने एहवी रीते आत्मसत्ता प्रगट करवानी रुचि प्रतें वर्ति त्यारै सम्यकित तेह. एटले तेह कहतां ते मुनिराज शुद्ध भासन रूप सम्यकत भावै करीनें सहित जाणवा, अने एहवी रीते सम्यक भावै करीने सहित होय त्यारै आत्मधर्मनो भासन निर्मल ज्ञानी जेह. एटले आत्मधर्मनो भासन कहतां शुद्ध निश्चय नयै करी जोतांतो पोतानी आत्मसत्ता नें विषे ज्ञानादि अनन्त गुण रूप धर्म रह्यो छे, तेहनो भासन कहतां प्रतीत प्रतें प्रगटै. अने एहवी रीते प्रतीत प्रतें प्रगटी त्यारै. निर्मल ज्ञानी जेह एटले जेह कहतां ते मुनि, अने निर्मल ज्ञानी कहतां ज्ञानावर्णादि कर्म रूप आवर्ण नें अभावै; निर्मल जाणपणा रूप ज्ञान तेहनें प्रगटै. अने एहवी रीते निर्मल जाणपणा रूप ज्ञान प्रगट्यो त्यारै, आत्मरमणी चरणी ध्यानी आत्मलीन. एटले आत्मरमणी कहतां ते मुनि सदा काल निरंतरपणै पोताना आत्म स्वरूप नें विषे रमण प्रतें करै अने एहवी रीते रमण प्रतें कर्यो त्यारै, चरणी एटले चरणी कहतां ए शुद्ध चारित्र नें विषे जे उपयोग तेहनो जाणवो. अने एहवी रीते शुद्ध चारित्र नें विषे उपयोग वर्त्यो त्यारै ध्यानी आत्मलीन एटले ध्यानी कहता पोताना आत्म स्वरूपना

ध्यान नें विषै, अने लीन कहतां तेहनें विषै सदा काल तलालीन पणै वर्त्तै. अने एहवी रीते तल्लालीन पणै वर्त्त्यौ त्यारै, आत्मधर्म रमो तेणै भव्य सदा सुखपीन. एटले आतमधर्म कहतां शुद्ध निश्चय नयै पोतानी आत्मसत्ता नें विषै ज्ञानादि अनन्त गुण रूप धर्म रह्यो छै, ते धर्म नें ओलखी प्रतीत करी. अहो भव्य ! अहो उत्तम ! तेहना ध्यान नें विषै सदाकाल रमो कहतां रमण प्रतें करो. अने एहवी रीते रमण करता थकां सदा सुखपीन. एटले सदा सुखपीन कहतां ते जीवनें सदाकाल पीन कहतां पुष्ट सुख प्रतें जाणवो. त्यारै शिष्य कहै एहवी रीते पुष्ट सुख नी प्राप्ति केम नीपजै ? ॥ ४४ ॥

ढालः— अहो भव्य तुम्हें ओलखो जैन धर्म । जिणै पामिये शुद्ध अध्यात्म मर्म ॥ अल्प कालै टलै दुष्ट कर्म । पामिये सोय आनन्द शर्म ॥ ४५ ॥

अर्थः— अहो भव्य तुम्हैं ओलखो जैन धर्म. एटले अहो भव्य ! अहो उत्तम ! अहो सुलभबोधी जीवो ! तुम्हैं ओलखो जैन धर्म. एटले जिन कहतां वीतराग, राग द्वेष थकी रहित एहवा जे सामान्य केवली तेहनें विषै राजा समान, एहवा जिनेश्वर देव, त्रिगड़ा नें विषै बैसीनें वस्तुधर्म जेहवो अंतरंग सत्तागतै रह्यो छै तेहवो जे प्रकाश्यो, ते धर्म नें ओलखी प्रतीत करया थकां जेणै पामियै शुद्ध अध्यात्म मर्म. एटलें शुद्ध कहतां निर्मल विभाव दशा रूप उपाधि थकी रहित, एहवो अध्यात्मनो मर्म कहतां अंतरंग जाणपणा रूप ज्ञानै करी स्वरूप भासनता रूप मर्म कहतां प्रतीत प्रतें प्रगटै. अने एहवी रीते स्वरूप भासनता रूप प्रतीत प्रतें

प्रगटी त्यारै. अल्प कालै टलै दुष्ट कर्म एटले अल्प कहतां थोडा काल में, अने दुष्ट कहतां आकरा आत्मगुण नें घातना करणहार एहवा ज्ञानावर्णादि जे कर्म टलै कहतां नाश प्रतें पामै अने एहवी रीते कर्मनो नाश प्रते थाय त्यारै पामिये सोय आनन्द शर्म. एटले स्व कहता पोतानो आत्मिक सुखनो आनद कहतां एहवो आणद नित्यानंद परम सुख प्रतें, अने शर्म कहतां जेहनो स्व स्थान प्रतें जिहां अनंता सिद्ध परमात्मा वसै छै, एहवो स्वस्थान कहतां घर प्रतें पामै त्यारै शिष्य कहै—जिहा अनता सिद्ध परमात्मा वसै छै ते घर प्रतें केम पामिये ? ॥ ४५ ॥

चालः— नय निक्षेप प्रमाणे जाणे जीवा-जीव । स्व पर विवेचन करतां थाये लाभ सदीव ॥ निश्चै नय व्यवहारे विचरे जे मुनिराय । भवसागरना तारण निर्भय तेह जहाज ॥ ४६ ॥

अर्थः— नय निक्षेप प्रमाणे जाणे जीवाजीव. एटले नय कहतां नैगमादि सात नये करी, अने निक्षेप कहता नामादि चार निक्षेपै करी, जाणे जीवाजीव एटले जाणे जीवाजीव कहतां जीव अजीव रूप नव तत्व षट्द्रव्यनो स्वरूप प्रतें जाणै तेहनें साधु श्रावकपणो जाणवो त्यारे शिष्य कहै—नैगमादि सात नयै करी, अने नामादि चार निक्षेपै करी जीव अजीव रूप नव तत्व षटद्रव्यनो स्वरूप किम जाणिये ? त्यारै हिवै प्रथम गुरु, कृपा करि, सात नयै नव तत्व नो स्वरूप प्रतें ओलखावे छै.

एटले नैगम नयनें मतै सर्वं तत्व छै, जे कारण सर्व तत्व नें चाहै छै १. त्यारै संग्रह नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करी बोल्यो (कहै)——एक तत्व. एटले जेहनें मन मान्यो ते तत्व, बीजा सर्वे अतत्व जाणवा २. एटले व्यवहार नयना मतवालो बाह्य स्वरूप देखीनें भेद वेंहचवा मांड्या. एटले ए नयनां मतवालो दीसता गुण देखै ते मानै, माटै बे तत्व—एटले एक जीव तत्व १ अने बीजो अजीवतत्व २. एटले प्रथम जीवना बे भेद—एक सकल कर्म जयकरी लोकनें अंतै विराजमान ते सिद्ध, अने बाकी बीजा संसारी. ते संसारीना बे भेद—एक अयोगी अने बाकी बीजा सयोगी. एटले चौदमा गुण स्थानना जीव ते अयोगी, बाकी बीजा सयोगी. ते सयोगीना बे भेद—एक केवली, बाकी बीजा छद्मस्त. एटले तेरमा गुण स्थान ना जीव ते केवली अने बाकी बीजा छद्मस्त. एटले छद्मस्तना बे भेद—एक क्षीणमोही अने बाकी बीजा उपसंतमोही. एटले बारहवां गुणस्थान ना जीव ते क्षीणमोही अनें बाकी बीजा उपसंतमोही. तें उपसंतमोहीना बे भेद——एक अकषाई बीजा सकषाई. एटले अग्यारहवां गुणस्थान ना जीव ते अकषाई, अने बाकी बीजा सकषाई. ते सकषाई ना बे भेद एक सूक्ष्मकषाई अने बाकी बीजा बादरकषाई. एटले दशमा गुणस्थान ना जीव ते सूक्ष्मकषाई अने बाकी बीजा बादरकषाई ते. बादर-कषाई ना बे भेद एक श्रेणीप्रतिपन्न, अने बीजा श्रेणीरहित. एटले आठमा नवमां गुणस्थानना जीव ते श्रेणीप्रतिपन्न अने बाकी बीजा श्रेणी रहित. ते श्रेणीरहितना बे भेद एक अप्रमादी अने बाकी बीजा सर्वेप्रमादी. एटले सातमा गुणस्थान ना जीव ते अप्रमादी, अने बाकी बीजा सर्वे प्रमादी. ते प्रमादी ना बे भेद——एक सर्व विरति

अने बीजा देशविराति ते देशविराति ना बे भेद—एक वर्ति परिणाम अने बीजा अवर्त्तिपरिणाम. ते अवर्त्ति ना बे भेद—एक अवर्त्ति सम्यकिती अने बीजा मिथ्यात्वी ते मिथ्यात्वी ना बे भेद—एक भव्य, बीजा अभव्य ते भव्यना बे भेद—एक गंठीभेदी अने बीजा जीव गठी अभेदी एटले एणी रीते व्यवहार नयना मतवालो जेहवो देखै तेहवा भेद वेंहचै वली जीवना बे भेद—एकत्रस १ अने बीजा थावर २ एटले थावर कहता पृथ्वी १ अप २ तेउ ३ वायु ४ अने वनस्पति ५ तेसूक्ष्म अने बादर करतां १० (दश) भेद अने पर्य्याप्तो अने अपर्य्याप्तो करता २० भेद जाणवा. अने प्रत्येक वनस्पति पर्य्याप्तो अने अपर्य्याप्तो, एणी रीते एकेन्द्री थावरना २२ भेद जाणवा

हिवै त्रसनो स्वरूप कहै छै एटले त्रसना ४ भेद—देवता १ नारकी २ तिर्यंच ३ अने मनुष्य. ते मध्ये देवताना ९९ भेद पर्य्याप्ता अने अपर्य्याप्ता थई नें १९८ भेद जाणवा नारकी ना सात पर्य्याप्ता, अपर्य्याप्ता थईनें १४ भेद अने तिर्यंच जीव, गर्भज, छमुर्च्छिम एणी रीते पर्य्याप्त अने अपर्य्याप्त थईनें ४६भेद * मनुष्यना १०१ भेद पर्य्याप्त अने अपर्य्याप्त थईनें २०२ अने १०१ छमुर्च्छिम, एणी रीते ३०३ भेद इम सर्वे त्रस थावरना थईनें व्यवहार नयनैं मते जीवना ५६३ भेद जाणवा ॥ १ ॥

हिवै अजीवना भेद वेंहचैं छै (देखाड़े छे) एटले अजीवना २ भेद—एक रूपी अने बीजा अरूपी एटले अरूपी कहता धर्मास्तिकाय स्कन्ध (खंध) १ देश २ अने प्रदेश ३. अधर्मास्तिकाय

* येन्द्री १ तेन्द्री २ चौरिंद्रीना ३ पर्याप्ता अपर्याप्ता करनें ६ भेद अने पच इन्द्रा तिर्यचना २० भेद, जलचर १ थलचर २ खेचर ३ उरपरि ४ भुजपरि ५ ना पर्याप्ता अपर्य्याप्ता, गर्भज, अने छमुर्च्छिम करनें सर्व २६ भेद जाणवा

स्कन्ध (खंध) १ देश २ अने प्रदेश ३. आकास्तिकाय स्कन्ध (खंध) १ देश २ अने प्रदेश ३. अने अद्धा कहतां काल. सर्वे थईनें १० भेद जाणवा. हिवै धर्मास्तिकाय द्रव्यथकी १ क्षेत्रथकी २ कालथकी ३ भावथकी ४ नै गुणथकी ५. एणी रीते अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय, तथा काल सर्वे थई नें २० भेद जाणवा. अने आगला १० भेद मांहीं भेलतां अरूपी ना सर्वे थईनें ३० भेद जाणवा ॥ २ ॥

हिवै रूपी अजीवनो स्वरूप कहै छै. एटले रूपी कहतां (स्पर्श) फरसना ८ गन्धना २ रसना ५ वर्णना ५ संस्थानना ५ एणी रीते २५ भेद ते मध्ये पांच रसना १०० पांच वर्ण ना १०० पांच संस्थानना १०० अने आठ स्पर्श अने बे गन्ध ए दशना २३० एटले सर्वे थईनें रूपीना भेद ५३० कहिये. एणी रीते व्यवहार नयनें मतै अजीवना रूपी अरूपीना थईनें ५६० भेद जाणवा ॥ ३ ॥ एणीरीते व्यवहार नयनें मतवालै जीव अजीव रूप बे तत्वनी वेंहचण करी देखाडी.

वली शिष्य कहै—रिजु सूत्र नयनें मतै करी तत्वनो स्वरूप केम जाणियें ? त्यारै गुरु कहै—कोई जीव शुभाशुभ परिणामै करी पुण्य पाप रूप आश्रवना दलीया बांधै तेहनें अजीव कहिये. एटले ए चार नय में ए छः तत्व जाणवां ॥ ४ ॥

वली शिष्य कहै—शब्द नयनें मतै करी तत्वनो स्वरूप केम जाणीये ? त्यारै गुरु कहै--शब्द नयनें मतै चौथै गुणस्थाने सम्यकिती जीव, पांचवें गुणस्थाने देशवर्त्ती जीव, छठै सातवें गुणस्थाने सर्वविरती जीव, अन्तरंग सत्तागत ना भासन रूप संवर भाव में वर्त्तता समय२ महा निर्जरा प्रतें करें छै ॥ ५ ॥ ८ ॥

वली शिष्य कहे—समभिरूढ नयनें मतै करी तत्वनो स्वरूप किम जाणिये ? त्यारे गुरु कहै—जे ए नयना मतवालो श्रेणी भावनें ग्रहे छे, माटे नवमा दशमा गुणस्थान थी मांडी यावत् तेरमां चौदमा गुणस्थान पर्य्यंत केवली भगवान पिण सवरभाव में वर्त्तता महा-निजर्रा प्रतें करै छै ८ तेहनें भव्य शरीर आश्रयै द्रव्य मोच पद कहिये ॥ ६ ॥ ॥ ९ ॥

अने एवंभूत नयनें मतै सकल कर्म क्षयकरी लोक नें अंते विराजमान सादिअनंतमें भागै वर्त्तता एहवा सिद्ध परमात्मा तेहनें भाव मोक्ष पद कहिये ॥ ७ ॥ ९ ॥ एणी रीते साते नये करी नव तत्व नो स्वरूप जाणवो.

हिवै नामादि ४ निक्षेपै करी षट् द्रव्यनो स्वरूप ओलखावे छे. एटले नामजीव कहतां नैगम नयनें मतै गये कालै जीवतो हतो आगामी कालै जीवसे अने वर्त्तमान कालै पिण जीवे छै एहवी रीते त्रणै काल एक रूप शास्वतो वर्त्ते तेहनें नामजीव कहिये ॥ १ ॥

अने स्थापनाजीव कहतां जीव एहवा अक्षर लिखीनें थापवा, ते संग्रह नयनें मतै असद्भाव स्थापना रूप जीव जाणवो. अने माचा नीवाण मां जीव ते संग्रह नयनें मतै सद्भाव स्थापना रूप जीव जाणवो ॥ २ ॥

अने द्रव्यजीव कहतां रिजु व्यवहार नयनें मतै एकेंद्री थकी पचेंद्री पर्य्यंत पहिले गुणस्थाने अनाउपयोगै मिथ्यात्व भावे वर्त्ते तेहनें द्रव्यजीव कहिये. (अणुवओगो द्व्व) ए अनुयोग द्वार सूत्र नो वचन छै ॥ ३ ॥

अने भावजीव कहतां शब्द नयनें मतै चौथा गुणस्थान सुं माडी, यावत् छठा सातवां गुणस्थान पर्य्यंत जीव अजीवनी ओल-

खाण, स्व परनी वेंहचण करी जीव स्वरूपना उपयोग मां सम्यकित भावै वर्त्तै तेहनें भावजीव कहिये. (उवऔगोभावं) ए अनुयोग द्वारनी साख छै ॥४॥ एणी रीते चार निक्षेपामें पांचै नयै करीं जीवनो स्वरूप जाणवो.

हिवै नामथकी धर्मास्तिकाय ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी धर्मास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप धर्मास्तिकाय जाणवो २. अने द्रव्यथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेसी ३. अने भावथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य चलण सहाय रूप जाणवो ४.

हिवै नामथकी अधर्मास्तिकाय ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी अधर्मास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप अधर्मास्तिकाय जाणवो २. अने द्रव्य थकी अधर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी ३. अने भावथकी अधर्मास्तिकाय द्रव्य स्थिर सहाय रूप जाणवो ४.

हिवै नाम थकी आकास्तिकाय ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी आकास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप आकास्तिकाय जाणवो २. अने द्रव्य थकी आकास्तिकाय द्रव्य अनन्त प्रदेशी ३. अने भावथकी आकास्तिकाय द्रव्य अवगाहना रूप जाणवो ४.

हिवै नामथकी कालद्रव्य ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी कालद्रव्य ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप काल जाणवो २. अनें द्रव्यथकी कालनो एक सम्यो लोक में सदा काल शाश्वतो वर्तै छै ३. अने भाव थकी काल द्रव्य नवां पुराणा वर्त्तना रूप जाणवो ४.

हिवै नामथकी पुद्गलास्तिकाय ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी पुद्गलास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा ते स्थापना रूप पुद्गलास्तिकाय जाणवो २. अने द्रव्यथकी पुद्गल द्रव्यना अनन्ता परमाणुं वा

लोक में सदा काल शास्वता वर्त्ते छै. ३. अने भाव थकी पुद्गल द्रव्य गलण पूरण मिलण विखरण रूप जाणवो ४. ॥ ६ ॥

एणी रीते जीव अजीव रूप षट् द्रव्य में चार चार निक्षेपा जाणवा

हिवै नव तत्व नो स्वरूप नय रूप चार निक्षेपै करी ओलखावै छै. तिहां प्रथम जीव अजीव रूप षट् द्रव्य नो स्वरूप कह्यो.

हिवै उदय भाव रूप पुण्य में निक्षेपा उतारै छै. एटले नाम पुण्य कहतां नैगम नयनें मते गये कालै पुण्य एहवो नाम वर्ततो हतो अनें आवते कालै पिण पुण्य एहवो नाम वर्त्तस्यै अने वर्तमान काले पिण ते नाम वर्त्ते छै. एहवी रीते नैगम नय नें मते त्रणे काल एक रूप सास्वतो वर्त्ते, तेहने नाम पुण्य कहिये १ अने स्थापना पुण्य कहतां पुण्य ऐसा अक्षर लिखी नें थापवा ते संग्रह नय नें मते असदभाव स्थापना रूप पुण्यजाणवो; अने कर्म सत्ताना प्रकृति रूप दलीया जीवनी सत्तायै लागाछै, ते संग्रह नयनें मते सद्भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो २ अने द्रव्यपुण्य कहता उदय भाव नें जोगे व्यवहार नयनें मते ते दलीयानो उदय थयो ते भव्य शरीर आश्रय उदय भाव रूप द्रव्य पुण्य जाणवो ॥ ३ ॥

अने भाव पुण्य कहतां रिजु सूत्र नयनें मते मन, वचन, कायायै करी व्यवहार नयनें मते ऊपर थकी पुण्य रूप दलीयानो भोगवणो ते भाव रूप पुण्य जाणवो.

हिवै पुण्य रूप करणीनो करवो, ते ऊपर निक्षेपा लगावै छै: एटले नाम पुण्य कहतां पुण्य एहवो नाम ते नैगम नयनें मते त्रणेकाल एक रूप पणे वर्त्ते छै १. अने स्थापना पुण्य कहतां पुण्य ऐसा अक्षर लिखीनें थापवा, ते सग्रह नयनें मते

असदभाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो. अने कोई जीव पुण्य रूप करणी करै छै एहवी मूर्त्ति स्थापवी, ते सद्भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो २. अने द्रव्यपुण्य कहतां ऊपर थकी अरुचि भावै अण उपयोगै व्यवहार नयनें मतै पुण्य रूप करणी नो करवो, ते सर्वे तद्वित् शरीर आश्रय द्रव्य पुण्य जाणवो ३. अने भाव पुणय कहतां रिजु सूत्र नयनें मतै मन, वचन, कायायै करी एक चित्तै व्यवहार नयनें मतै ऊपर थकी पुण्य रूप करणी नो करवो ते सर्वे भाव पुण्य जाणवो ४.

हिवै उदय भाव रूप पापमां निक्षेपा लगावै छै. एटले नाम थकी पाप कहतां पाप ऐसो नाम ते नैगम नयनें मतै त्रणे काल एक रूप पणै वर्त्तै छै १. अने स्थापना पाप कहतां पाप अक्षर लिखी नें स्थापवा ते संग्रह नयनें मतै असद् भाव स्थापना पाप जाणवो. अने कर्म सत्ताना प्रकृति रूप दलीया जीवनी सत्तायै लागा छै ते संग्रह नयनें मतै सद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो २. अने द्रव्य पाप कहतां उदय भाव नें जोगै व्यवहार नयनें मतै ते दलीया नो उदय थयो ते सर्वे भव शरीर आश्रय उदय भाव रूप द्रव्य पाप जाणवो ३ अने भाव पाप कहतां रिजु सूत्र नयनें मतै मन, वचन कायायै करी व्यवहार नयनें मतै ऊपर थकी पाप रूप दलीयानों भोगवणो ते सर्वे भाव रूप पाप जाणवो ४.

हिवै पाप रूप करणीनो करवो ते ऊपर निक्षेपा लगावै छै. एटले नाम पाप कहतां पाप ऐसो नाम, ते नैगम नयनें मतै त्रणे काल एक रूप पणै वर्तै छै १. अने स्थापना पाप कहतां पाप एहवा अक्षर लिखी नें थापवा, ते संग्रह नयनें मतै असद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो. अने कोई जीव पाप रूप करणी करै छै; एहवी मूर्त्ति स्थापवी ते

सद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो २. अनेद्रव्य पाप कहतां ऊपर थकी अरुचिभावै अणाउपयोगै व्यवहार नयनें मतै पाप रूप करणी नो करवो, ते सर्वे तद्वित् (तद्व्यतिरिक्त) शरीर आश्रय द्रव्य पाप जाणवो ३. अने भावपाप कहतां रिजु सूत्र नयनें मतै मन, वचन रूप, कायायै करी एकचित्तै व्यवहार नयनें मतै ऊपरथकी पाप रूप करणीनो करवो, ते सर्वे भावपाप जाणवो ४

हिवै आश्रव में निक्षेपा लगावै छै. एटले नामआश्रव कहतां आश्रव ऐसो नाम, ते नैगम नयनें मतै त्रणे काल एक रूप पणै वर्त्तै छै १ अने स्थापनाआश्रव कहता आश्रव एहवा अक्षर लिखी नें स्थापवा, ते सग्रह नयनें मतै असद्भाव स्थापना रूप आश्रव जाणवो, अने आश्रव रूप मूर्त्ति स्थापवा नें संग्रह नयनें मतै सद्भाव स्थापना रूप आश्रव जाणवो २. अने द्रव्यआश्रव कहतां बेतालीस प्रकार रूप आश्रव नें घड़नालै करी व्यवहार नयनें मतै शुभाशुभ आश्रव रूप दलीयानो ग्रहण करवो, ते सर्वे तद्वित् शरीर आश्रय, द्रव्यआश्रव कहिये ३ अने भावआश्रव कहतां रिजु व्यवहार नयनें मतै मन, वचन, कायायै करी उदयभाव नें जोगे ते दलीयानो भोगवणो, तेहनें उदयभाव रूप आश्रव कहियें ४.

हिवै संवर में निक्षेपा उतारै छै. एटले नामसंवर कहतां जे संवर ऐसो नाम; ते नैगम नयनें मतै त्रणे काल एक रूप जाणवो १ अने स्थापनासवर कहतां जे संवर ऐसा अक्षर लिखी नें स्थापवा, तें संग्रह नयनें मतै असद्भाव स्थापना रूप संवर जाणवो अने संवर रूप मुर्त्ति स्थापवी, तें संग्रह नयनें मतै सदभाव स्थापना रूप संवर जाणवो २. अने द्रव्यसंवर कहतां जे व्यवहार नयनें मतै ऊपरथकी अरुचि भावै

लोक देखाड़वा रूप पोषापडिकमणा सामायक आदे अनेक प्रकारैं संवरनी करणी करवी, ते सर्वे तदवित् शरीरआश्रय द्रव्यसंवर वृथा रूप जाणवो ३. अने भावसंवर कहतां जे रिजु सूत्र नयनें मतै मन, वचन, कायायै करी यथाप्रवृत्ति रूप करणीना परिणामै पोषा पडिकमणा व्रत पचक्खाण आदे व्यवहार नयनें मतै ऊपरथकी संवर रूप करणीनो करवो ४.

एटले ए च्यार नयमां च्यार निच्चेपा यथाप्रवृत्ति करण रूप संवर जाणवो.

वलि नाम थकी संवर कहतां जे संवर ऐसो नाम, ते नैगम नयनें मतै जाणवो १. अने स्थापना थकी संवर कहतां जे संवर ऐसा अच्चर लिखीनें स्थापवा, ते संग्रह नयनें मतै असद्भाव स्थापना रूप संवर जाणवो. अने संवर रूप मूर्त्ति स्थापवी, ते संग्रह नयनें मतै सद्भाव स्थापना रूप संवर जाणवो २. अने द्रव्यसंवर कहतां जे रिजु सूत्र नयनें मतै मन, वचन, कायायै करी व्रत पचक्खाण रूप ऊपरथकी व्यवहार नयनें मतै संवर रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तद्वित् शरीर आश्रय द्रव्य संवर जाणवो ३. अने भाव संवर कहतां जे शब्द नयनें मतै जीव अजीव रूप, स्वसत्ता पर सत्तानी वेंहचण करी स्थिरता रूप परिणामें आगल द्रव्य निच्चेपा मध्ये रिजु व्यवहार नयै संवर रूप करणी कही, ते करता थकां महा निर्जरा प्रतें करै, ते सर्वे भाव संवर जाणवो. एणी रीते संवर में पांच नय में चार निक्षेपा जाणवा ४.

हिवै निर्जरा में निक्षेपा उतारै छै. एटले नाम थकी निर्जरा कहतां जे निर्जरा ऐसो नाम, ते नैगम नयनें मतै त्रणे काल एक

रूप पणे जाणवो १. अने स्थापना थकी निर्जरा कहतां जे निर्जरा ऐसा अक्षर लिखवा, ते संग्रह नयनें मतै स्थापना रूप निर्जरा जाणवी २ अने द्रव्यनिर्जरा कहतां जे व्यवहार नयनें मतै रिजु सूत्रना उपयोग सहित मिथ्यात्व भावे अकाम निर्जरा करवी, ते सर्वे तद्वित् शरीर आश्रय द्रव्यनिर्जरा जाणवी ३. अने भावनिर्जरा कहता जे शब्द नयनें मतै जीव अजीव रूप षट् द्रव्य नव तत्वनो जाणपणो प्रतीत करी, रिजुना उपयोग सहित ऊपर थकी व्यवहार नयने मतै बारे भेदे तपस्या रूप करणीनो करवो, ते भावनिर्जरा जाणवी ४ एणी रीते पांच नयमां चार निक्षेपा निर्जरा रूप जाणवा

हिवे बंध में निक्षेपा उतारै छे. एटले नाम थकी बंध कहतां जे बंध ऐसो नाम, ते नैगम नयनें मतै जाणवो १. अने स्थापना थकी बंध कहतां जे बंध ऐसा अक्षर लिखीनें स्थापवा, ते स्थापना रूप बंध जाणवो २. अने द्रव्य थकी बंध कहतां जे प्रकृतिबंध, स्थिति बंध, रसबंध, प्रदेशबंध, एणी रीते चार प्रकार बंध रूप दलीया जीवनी सत्तायै बांध्या छे; ते संग्रह नयनें मतै कर्मसत्ता रूप भव शरीर आश्रय द्रव्यबंध जाणवो ३. अने भावबंध कहतां जे व्यवहार नयनें मतै ते दलीयानो उदय थयो, ते उदय भाव रूप भाव बंध जाणवो ४. एणी रीते उदय भाव रूप बंध में त्रण नयमा ए च्यार निक्षेपा जाणवा.

वली नामथकी बंध कहतां जे बंध ऐसो नाम, ते नैगम नयनें मतै जाणवो १. अने स्थापना थकी बंध कहतां जे बंध ऐसा अक्षर लिखवा अथवा बंध रूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापना रूप बंध जाणवो २ अने द्रव्यबंध कहतां जे आगल चार प्रकारे बंध रूप दलीया

संग्रह नयनें मतै जीवनी सत्तायै रह्या छै, तेहनो, स्थिति पाकै व्यवहार नयनें मतै उदय थयो, ते सर्वे तद्वित् शरीरआश्रय द्रव्यबंध जाणवो ३. अने भाव थकी बंध कहतां जे रिजु सूत्र नयनें मतै मिथ्यात्व अव्रत्त कषाय योग्य रूप सत्तावन ५७ बंध हेतु प्रमुख जीवना परिणाम, एटले तेहनी चिकासै, वली पाछो कर्म रूप दलीयानो बंध पाडे. माटै रिजु सूत्र नयनें मतै तेहनें भावबंध कहिये ४. एणी रीते बंधमें चार नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

हिवै मोक्षनीकर्मे अवस्था में निपेक्षा उतारै छै. एटले नाम थकी मोक्ष कहतां जे मोक्ष ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी मोक्ष कहतां जे मोक्ष रूप मूर्त्ति स्थापवी अथवा मोक्ष ऐसा अक्षर लिखवा २. अने द्रव्यमोक्ष कहतां जे समभिरूढ नयनें मतै शुद्ध शुक्ल ध्यान रूपातीत परिणाम रूप क्षपक श्रेणीये अज्ञान रूप राग द्वेष नें मोहनी कर्मनो करयो क्षय बारमैं गुणस्थानै, अने केवल ज्ञान पाम्यां, एहवा केवली भगवान नें भव शरीर आश्रय द्रव्यमोक्ष पद कहिये ३. अने भावमोक्ष कहतां जे एवंभूत नयनें मतै अष्ट कर्मनें क्षयै, अष्ट गुण सम्पन्न लोक नें अंते विराजमान एहवा सिद्ध परमात्मा नें भावमोक्ष पद जाणवो ४.

एणी रीते जीव अजीव रूप षट् द्रव्य, नव तत्व में नय संयुक्त निक्षेपा जाणवा.

अने प्रमाणै कहतां प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए बे प्रमाणै करी नें जेणै नव तत्व, षट् द्रव्यनो स्वरूप प्रतें जाण्यो छै. अने एहवी रीते जीव अजीव रूप नव तत्व षट् द्रव्यनो स्वरूप नय निक्षेप प्रमाणै करीनें जाण्यो त्यारै. स्व पर विवेचन करतां थायै लाभ सदैव. एटले

स्व पर विवेचन करतां कहतां जीव अजीवनो स्वरूप भिन्न २ प्रकारे जाणीनें वेंहचे

त्यारे शिष्य कहै—जीव अजीव नो स्वरूप भिन्न २ प्रकारे करी किम जाणे ? त्यारे गुरु कहै—जीव छे ते ज्ञानादि चेतनारूप गुण करीनें सहित निश्चय नयै करीनें सत्तायै सिद्धसमान सदा काल शास्वतो वर्त्ते छे. अने व्यवहार नयै करी जीव नें पुण्य पाप रूप शुभाशुभ फलनो भोक्ता जाणवो; अने अजीव कहता पाचद्रव्य * चेतनारहित अजीवरूप जड़स्वभाव (ते) न जाणे सुखनें, न जाणे दु:खनें. त्यारे शिष्य कहै—ए तो सामान्य प्रकारे अर्थ कह्यो पिण विशेष रीते स्व परनी वेंहचणरूप जीवनो स्वरूप किम जाणिये ?

त्यारे गुरू कहै—एगोह. एटले एगोह कहतां हू एक छू, म्हारो कोई नथी १

सासियो अप्पा. एटले सासियो अप्पा कहता म्हारो जीव शास्वतो छै २

नाण दशण सयुक्तो. एटले नाण दंशण संयुक्तो कहता हू ज्ञान दर्शणे करीनें सहित छूं ३.

सो सविवाहिरा भावा, ते सर्वे सयोग लक्षणा. एटले सो सविवाहिरा भावा कहतां जे म्हारा स्वरूप थकी बाह्य वस्तु कहतां जे अलगी ते सर्वे संयोगै मिली छे, अने वियोगै जाशे, तेहमा म्हारे स्यो विगाड़ थाशे ? ४

अने संयोग मूला जीवाण एटले सयोग मूला जीवाणं कहता

* धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ और काल ५

ए संयोगी वस्तु नें विषै जीव मुंझाणो. एटले पत्ता दुःखं परम्परा. एटले पत्ता दुःखं कहतां ते जीव दुःखनी परम्परा प्रतें पामै ५.

माटै, तमहं संयोग संबंध. एटले तमहं संयोग सम्बन्ध कहतां ए संयोगी वस्तु म्हारा स्वरूप थकी भिन्न कहतां जुदी छै—ए शरीरादि पुत्र कलत्र परिवार प्रमुख ६.

सव्वंति विहेण वोसरे. एटले सव्वंति विहेण कहतां हूं मन, वचन, कायाथै करीनें वोसरावुं छूं ७.

हूं चेतन छूं, ए पुदगलनो स्वभाव ते अचेतन छै ८.

हूं अरूपी छूं, ए पुद्गल रूपी छै. म्हारो ज्ञानादि चेतना लक्षण स्वभाव छै, आ पुद्गल नो जड़ स्वभाव छै ९.

हूं अमूर्त्तिछूं, आ पुद्गल मूर्त्ति छै १०.

हूं स्वभाविक छूं, आ पुद्गल विभाविक छै ११.

हूं शुचि कहतां पवित्र छूं, आ पुद्गल अपवित्र छै १२.

म्हारो शाश्वतो स्वभाव छै, आ पुद्गलीक वस्तु मनै मली छै, ते सर्वे अशाश्वती छै १३.

म्हारो ज्ञानादि रूप छै, आपुदगलनो पूरण गलण रूप छै. १४.

म्हारो अचलित स्वभाव छै. एटले किवारै स्वरूपथकी चलूं नहीं, अने पुद्गलनो चलित स्वभाव छै १५.

म्हारो ज्ञान, दर्शन, चारित्र मयी स्वरूप छै, आपुदगलनो वर्ण गंधादि रूप छै, हूं वर्णगंधादिक सूं रहित छूं १६.

सुधोहं. एटले सुधोहं कहतां हूं शुद्ध निर्मल छूं १७.

बुधोहं. एटले बुधोहं कहतां हूं ज्ञानानंद छूं १८.

निर्विकल्पोऽहं. एटले निर्विकल्पोहं कहतां हूं सर्वे विकल्प सूं रहित; छुं

म्हारो स्वरूप न्यारो छै १९.

देहातीतोऽह. एटले देहातीतोऽहं कहतां आ देह रूप जे शरीर तेह थकी हूं रहित छूं २०.

अने अज्ञान राग द्वेप रूप जे आश्रव ते म्हारो स्वरूप नही, हू एणें सों न्यारो छूं. २१.

अनत ज्ञानमयी, अनंत दर्शनमयी, अनंत चारित्रमयी, अनत वीर्यमयी ए म्हारो स्वरूप छै २२.

शुद्ध. एटले शुद्ध कहतां हूं कर्म रूप मलसुं रहित छूं २३.

बुद्ध एटले बुद्ध कहतां हु ज्ञानस्वरूपी छू २४.

अविनाशी. एटले अविनाशी कहतां म्हारो कोई कालै नाशपणो नथी २५

अजग एटले अजरा कहतां हूं जरा सूं रहित छूं २६

अनादि. एटले अनादि कहतां म्हारी आदि नथी २७.

अनंत. एटले अनंत कहतां म्हारो कोई कालै अंत कहतां छेडो पिण नथी २८.

अक्षय. एटले अक्षय कहतां म्हारो कोई काले क्षय नथी २९.

अक्षर. एटले अक्षर कहतां हूं कोई काले खरूं नहीं ३०.

अचल एटले अचल कहतां हूं कोई कालै स्वरूप सूं चलूं नहीं ३१.

अकल्प्य. एटले अकल्प्य कहतां म्हारो स्वरूप केण सूं कल्प्यो जाय नहीं ३२

अमल एटले अमल कहतां हूं कर्म रूप मलसूं रहित न्यारो छूं ३३

अगम. एटले अगम कहतां म्हारी कोयने गम नथी ३४.

अनामी. एटलें अनामी कहतां हूं नाम सूं रहित न्यारो छूं ३५.

अरूपी. एटले अरूपी कहतां हूं ए विभाव दशाना रूप सूं रहित छूं ३६.

अकर्मी. एटले अकर्मी कहतां हूं कर्म रूप उपाधि सूं रहित छूं ३७.

अबंधक. एटले अबंधक कहतां हूं कर्म रूप बंधन सूं रहित, म्हारो खेल न्यारो छै ३८.

अणुदीय. एटले अणुदीय कहतां हूं उदय भाव सूं रहित छूं ३९.

अयोगी. एटले अयोगी कहतां हूं मन, वचन, काया ना योग सूं न्यारो छुं ४०.

अभोगी. एटले अभोगी कहतां हूं शुभाशुभ रूप विभाव दशाना भोग सूं रहित छूं ४१.

अरोगी. एटले अरोगी कहतां हूं कर्म रूप रोग सूं न्यारो छूं ४२.

अभेदी. एटले अभेदी कहतां हूं कोई नो भेद्यो भेदाऊ नहीं ४३.

अवेदी. एटले अवेदी कहतां हूं त्रण वेद सूं न्यारो छूं ४४.

अछेदी. एटले अछेदी कहतां हूं कोई नो छेद्यो छेदाऊंनहीं ४५.

अखेदी. एटले अखेदी कहतां हूं स्वरूप रमण में खेद पांमु नहीं ४६.

असखाई. एटले असखाई कहतां म्हारै कोई सखाई भूत (साक्षी भूत) नथी. हूं म्हारै पराक्रमै करी सहित छूं पिण म्हारा अंवला (उलटा) प्रिणमन थकी बंधाणो छूं ४७.

अने हूं संवलो (सुलटो) प्रणमीस त्यारै छूटीस. पिण मनें कोई बांधवा छोड़वा सामर्थवान नथी ४८.

अलेशी. एटले अलेशी कहतां हूं छे६लेश्याथी रहित न्यारो छूं अने लेश्या रूप ते पुद्गल छै, अने म्हारो रूप ते ज्ञानानंद छै ४९.

अशरीरी एटले अशरीरी कहतां हू शरीर रूप जड सूं रहित शुद्ध, चिदानंद, पूर्ण ब्रह्म छू ५०

अभाषी एटले अभाषी कहता हू भाषा रूप पुद्गल सूं रहित पूरण देव छू ए भाषा रूप ते पुद्गल छे ५१

अनाहारी एटले अनाहारी कहतां हू च्यार * आहार रूप पुद्गलना भोग सें रहित, अने पर्य्याय रूप भोगनो विलासी छू ५२.

अव्याबाध. एटले अव्याबाध कहतां हु बाधापिड़ा रूप दुःख सू रहित—अनंत सुख विलासी छू ५३

अनअवगाही एटले अनअवगाही कहतां म्हारो स्वरूप कोई द्रव्य अवगाहि सके नहीं ५४

अगुरुलघु. एटले अगुरु कहतां मोटो नहीं. अने अलघु कहता छोटो पण नथी. वली भारे नहीं, हलवो नहीं ५५.

अपरिणामी. एटले अपरिणामी कहतां हू मन रूप परिणाम सू रहित छूं ५६

अनेन्द्री. एटले अनेन्द्री कहता हू इंद्री रूप विकार सूं रहित—न्यारो, इच्छायोगी छूं ५७

अप्राणी एटले अप्राणी कहता हूं दश प्राण रूप पुद्गल सूं रहित म्हारो खेल न्यारो छै ५८.

अयोनी एटले अयोनी कहता हू चोरासी लाख जीवायोन रूप परिभ्रमणपणा सू रहित, निश्चय देव छू ५९.

असंसारी. एटले असंसारी कहतां हू चार गति रूप संसार सू रहित, पूरण आत्मराम छू ६०

---

* असनं १ पानं २ खादं ३ स्वाद ४

अमर. एटले अमर कहतां हूं जन्म, जरा, मरण रूप दुःख सूं रहित छूं ६१.

अपर. एटले अपर कहतां हूं सर्व परम्परा सूं रहित, म्हारो खेल न्यारो छै ६२.

अव्यापी. एटले अव्यापी कहतां ए विभाव रूप जड़पणा सूं रहित, हूं म्हारा स्वरूप में सदाकाल व्यापी रह्यो छूं ६३.

अनास्ति. एटले अनास्ति कहतां म्हारो कोई कालै नास्तिपणो नथी. हूं म्हारा स्वद्रव्यादि कै करीनें सदाकाल अस्तिपणैज वर्तूं छूं ६४.

अकंप. एटले अकंप कहतां हूं कोई नो कंपायो कंपूं नहीं. एम अनंतवीर्य रूप शक्तिनो धणी छूं ६५.

अविरोध. एटले अविरोध कहतां हूं कर्म रूप शत्रुनो रोध्यो रुंधाऊं नहीं, सदा काल निर्लेप कर्म रूप मल सूं रहित न्यारो, हूं म्हारै परिणामिक भावै रह्यो वर्तूं छूं ६६.

अनाश्रव. एटले अनाश्रव कहतां हूं शुभाशुभ विभाव दशा रूप आश्रव सूं रहित सदा काल न्यारो वर्तूं छूं. जेम डंकनें संयोगै स्फटिक नें कलंक लागै पिण मूल स्वभावै जोतांतो स्फटिक शुद्ध निर्मलो छै, तेम हूं म्हारै स्वभावै निर्लेप रह्यो वर्तूं छूं ६७.

अलख. एटले अलख कहतां म्हारो स्वरूप छद्मस्तनें लख्या में न आवै ६८.

अशोक. एटले अशोक कहतां हूं जन्म, जरा, मरण भय रूप शोक संताप सूं रहित सदा काल निरोगी, अमर रूप वर्तूं छूं ६९.

अलोक. एटले अलोक कहतां हूं लौकिक मार्ग सूं रहित, म्हारो खेल न्यारो वर्त्तै छै ७०.

लोकालोकज्ञायक. एटले लोकालोकज्ञाय कहता हूं ज्ञानें करीनें लोकालोकनो स्वरूप एक समय में जाणवा सामर्थवान् छूं ७१.

शुद्ध एटले शुद्ध कहतां निर्मल, कर्म रूप मलसूं रहित छूं ७२.

चिदानंद एटले चिद् कहतां ज्ञान अने नंद कहतां आनद चारित्र रूप तेणे करीनें हू साहित वर्तू छूं एहवो म्हारो स्वरुप सदा काल शाश्वतो छे ७३

एहवी रीते, एम वेंहचण करतां थाये लाभ सदैव. एटले— थाये लाभ सदैव कहतां एहवी रीते अतरंग भासन रूप वेंहचण करतां थका ते जीवनें सदैव कहता सदा काल निरंतरपणे लाभ प्रतें नीपजै एटले एहवी रीते सदा काल लाभ प्रतें केम नीपजै ? तोकै निश्चै ने व्यवहारै विचरै जे मुनिराय. एटले निश्चै नें व्यवहारै कहतां जीव अजीव रूप षट् द्रव्य नव तत्वनो स्वरूप निश्चय व्यवहार नयै जाणपणा रुप अतरग प्रतीत करवी, ते थकी लाभ प्रतें नीपजै

त्यारै शिष्य कहै—निश्चय व्यहार नयै जीव अजीव रूप षट् द्रव्य नव तत्वनो स्वरूप किम जाणिये ? त्यारै गुरु कहै—निश्चय नय करी सर्व जीव सत्तायै, एक रूप सरीखा सिद्धसमान शाश्वता छै; अने व्ययहार नयै करी जीवनी अनेक भांति देवता, नारकी, तिर्यंच, मनुष्य रूप जाणवी १. अने कोई जीव शुभ परिणामै करी पुण्य रूप २ आश्रव ना दलीया ३ बाधै ४ तेहनें अजीव कहिये ५ ते-निश्चय नयै करी छोडवा योग्य अने व्यवहार नयै करी आदरवा योग्य.

वली कोई जीव १ अशुभ परिणामै करी पाप २ आश्रव ना दलीया ३ बाधै ४ तेहनें अजीव कहिये ५. ते निश्चय नयै करी छांडवा योग्य अने व्यवहार नयै करी छांडवा योग्य ६.

हिवै संवर नो स्वरूप कहै छै. एटले व्यवहार नयै करी संवर नो स्वरूप कहतां निवृत्ति प्रवृत्ति रूप चारित्र जाणवो. अने निश्चय नयै करी संवर कहतां जे पोताना स्वरूप में रमण करवो ७.

हिवै निर्जरानो स्वरूप कहै छै. एटले व्यवहार नयै करी निर्जराना (१२) बार भेद जाणवा. अने निश्चय नयै निर्जरानो स्वरूप कहतां सर्व प्रकारै इच्छानो रोध करि पोताना स्वरूप में समता भाव वर्त्तवो.

हिवै मोक्षनीकर्मावस्थानो स्वरूप कहै छै. एटले व्यवहार नयै करी मोक्ष तेरमें चवदमें गुणस्थानें केवली नें कहिये. अने निश्चय नयै मोक्षपद कहतां जे सकल कर्म क्षयकरी लोकनें अंते विराजमान एहवा सिद्ध परमात्मा नें जाणवो ९. एणी रीते नवतत्वनो स्वरूप निश्चय व्यवहार करी धारवो.

हिवै षट् द्रव्यनो स्वरूप निश्चय व्यवहार नय रूप ओलखावै छै. तिहां प्रथम जीवनो स्वरूप आगल कह्यो ते प्रमाणै जाणवो १. हिवै धर्मास्तिकाय २. अधर्मास्तिकायनो स्वरूप कहै छै. एटले निश्चय नयथकी धर्म अधर्म लोकव्यापी खंध असंख्यात प्रदेश रूप शाश्वतो छै; अने व्यवहार नयकरी देश प्रदेश अने अगुरु लघु जाणवो ३. हिवै आकास्तिकायनो स्वरूप कहै छै. एटले निश्चयथकी आकास्तिकायनो खंध लोकालोकव्यापी अनन्त प्रदेशी शाश्वतो छै, अने व्यवहार नय करी देश प्रदेश अनें अगुरुलघु जाणवा ४. हिवै कालनो स्वरूप कहै छै. एटले निश्चय थकी कालनो एक समय लोक में सदाकाल शाश्वतो वर्त्तै छै. अने व्यवहार नय करी काल उत्पात, व्यय रूप पलटण स्वभावै जाणवा ५.

हिवै पुद्गलनो स्वरूप कहै छै. एटले निश्चय नयै करी पुद्गलना

अनंता परमाणु या लोक में सदा काल शाश्वता वर्त्ते छै अने व्यवहार नयै करी पुद्गलना खंध सर्वे अशाश्वता जाणवा ६

एणी रीते निश्चय व्यवहारथकी षट् द्रव्य नव तत्व नो स्वरूप जाणवो ए परमार्थ अने एहवी रीते निश्चय व्यवहार रूप जाण पणै करी साध्य रूप निश्चय दृष्टि अन्तर नें विषे राखी, अने निवृत्ति प्रवृत्ति आदि बाह्य व्यवहार रूप क्रिया करतां थकां अने विचरै जे मुनिराज; एटले विचरै कहता एहवी रीते स्याद् वाद रूप जाणपणै करी भव्य प्राणीनें हेत उपदेश करता थका विचरै, जे कहता ते मुनिराज अने वली ते मुनि केहवा छै ? भवसागरना तारण निर्भय तेहि जहाज एटले भवसागर कहतां ससार रूप सागर कहतां जे समुद्र तेहनें विषे भ्रमता भ्रमता अनता कालचक्र व्है गया पिण हजी जीव कांठा प्रतें न पाम्यो, एहवो अपारावार जे समुद्र तेहनें विषेथी तारवानें ए मुनि कहवा छै ? निर्भय जहाज एटले निर्भय जहाज कहतां एहवा मुनी नी सेवा भक्ति रूप आसना वासना जे जीव करैछै, ते जीव संसार समुद्र में भ्रमता, निर्भय कहता भव भ्रमण रूप भय टालवाने निर्भय जहाज प्रतें पाम्यो. एटले जहाज होयतो पोतै तरै अने जहाज नें आश्रय तेहनें पिण तारै. माटै एहवा जहाजरूप मुनिराज ससार रूप समुद्र पोतै तरै, अने भव्य प्राणी नें पिण तारै. अने वली ए मुनि केहवा छै ? ॥ ४६ ॥

ढालः— वस्तु तत्वै रम्या ते निग्रंथ ।
तत्व अभ्यास तिहां साधु पंथ ॥ तिणे
गीतार्थ चरणे रहीजे । शुद्ध सिद्धांत रस तो
लहीजे ॥ ४७ ॥

अर्थः— वस्तु तत्वै रम्या ते निग्रंथ. एटले वस्तु तत्व कहतां पोताना आत्मानो वस्तु धर्म सत्तागत नें विषै अनन्तो रह्यो छै, ते धर्मनें ओलखी, प्रतीत करी; अने रम्या कहतां तेहना ध्यान नें विषै प्रवर्त्या. अने वली ए मुनि केहवा छै ? तोकै निग्रंथ. एटले निग्रंथ कहतां, चौदह अभ्यंतर, नव विध बाह्यनी गंठी तजै मुनिराज. एटले चौदह अभ्यंतर कहतां त्रण वेद, अने हासादिक षट, एक मिथ्यात्व ए दश, अने क्रोधादिक चार कषाय, ए चौदह प्रकारै अभ्यन्तर; अने धन, धान्य, क्षेत्र, वथु, रूपुं, सोवन, दुपय, चउपय, कुवय ए नव प्रकार बाह्य परिग्रहना. अने आगलै चौदह प्रकारें कह्यो ते अभ्यंतर परिग्रह जाणवो. एणी रीते बाह्य अभ्यंतर थइनें त्रेवीश प्रकारै परिग्रह रूप गंठीनें भेदै कहतां छेदै तेहनें साधु मुनिराज कहिये. अने वली साधु कोनें कहिये ? तोकै, तत्व अभ्यासै तिहां साधु पंथ. एटले तत्व कहतां पोताना आत्म तत्वनें निपजाववो, अने अभ्यासै कहतां तेहनां अभ्यास नें विषै सदा काल निरंतरपणै जेहनो उपयोग प्रतें वर्त्तै तिहा साधुपंथ जाणवो. तेणे गीतार्थ चरणै रहीजे. एटले तेणै कहतां ते कारण माटै गीतार्थ मुनि के चरणे रहिजे. अने एहवा गीतार्थ मुनिना चरण कमल सेवा थकी श्यूं नीपजै ? तोकै. शुद्ध सिद्धान्त रस तो लहीजे. एटले शुद्ध कहतां निर्मल यथार्थ निःसंदेह पणै सिद्धान्त कहतां एहवा आगम संबंधीया ज्ञान रस प्रतें चाखीजे. अने वली ए मुनि केहवा छै ? ॥ ४७ ॥

चालः— श्रुत अभ्यासी चोमासी वासी लींबड़ी ठाम। शासनरागी सौभागी श्रावकना बहु धाम ॥ खरतर गच्छ पाठक श्री

दीपचंद सुपसाय । देवचंद्र निज हर्षें गायो आतमराय ॥ ४८ ॥

अर्थ.— एटले श्रुतअभ्यासी कहतां श्रुत ज्ञाननें अभ्यासै करीनें यथार्थ स्वसत्ता, परसत्ताना भासन रूप उपदेश करतां, अने चौमासी वासी लींबड़ी ठाम. एटले लीबडी ग्रामनें विषे चौमासो प्रतें वसीनें ए ग्रथनी रचना प्रतें करी. एटले लींबड़ी ग्राम केहवो छे? तोकै, शासनरागी सौभागी श्रावकना बहु धाम. एटले शासनरागी कहतां जिनशासन ना रागी, जिनशासनना उद्योत ना करणहार, जिनशासननी उन्नति कहता महिमाना वधारणहार, एहवा सौभागी सिरदार, यथार्थ भापण रूप आत्मउपयोगी व्यवहार क्रिया रूप आचारना प्रतिपालक, जिनशासन दीपावक, देव गुरु भक्तिकारक, एहवा श्रावक पुण्य प्रभावक, ज्ञानचर्चारक ढुंढमत निवारक, एहवा श्रावकना बहु कहतां घणा, अने धाम कहतां वसवाना घर प्रतें जाणवा. श्री खरतरगच्छ पाठक श्रीदीपचद सुपसाय. एटले खरतर गच्छ मध्ये उपाध्याय श्रीदीपचद गुरुनें पसाय कहतां प्रसादै करीनें; देवचद्र निज हर्षें गायो आत्मराय. एटले तेहना शिष्य देवचन्द्र मुनीये, निज कहता पोतानें हर्षें करीनें, गायो कहतां संस्थव्यो, अने आत्मराय कहतां आत्मराजानो यथार्थ पणै आत्मिक स्वरूप प्रतें वखाण्यो ॥४८॥

ढालः— आत्म गुण रमण करवा अभ्यासै। शुद्ध सत्तारसी नें उल्लासै। देवचंद्रे रची आत्म–गीता। आत्म–रमणी मुणी सु प्रतीता ॥ ४९ ॥

अनंते निक्षेपैज थाय । एरीतेज आत्मानी प्रतीत करवी । एहवा प्रतीतवंत जीव नें जैनमार्गी मार्ग में गणै छै। एहवो आत्मा जैन मानै। अनेकांत मतमय कह्यो छै । एकांत मानै ते मिथ्यात्वी जाणवो । अनेकांते स्याद्वाद प्रतीते ते सम्यकित दर्शन । ए रीते ज्ञान, ते ज्ञान कहै । एह मां रमवुं ते चारित्र । ए रत्नत्रयीवंत ते आत्मा ज्ञान दर्शन चारित्रादि अनन्त गुणमयी छै ॥

ते आत्मानू स्वरूप सदा छै। सम्यकित जीव नें सदा आत्मा मां भाववुं ॥

वली आत्मा एहवो ओलखवो के अनन्त गुण पर्य्यायमई आत्मा छै । ज्ञानगुण, दर्शनगुण, चारित्रगुण, सुखगुण, दानगुण, लाभगुण भोगगुण, उपभोगगुण, वीर्यगुण ए आदि दे अनन्त गुण छै ॥

सम्यकित ना दश पर्य्याय लिखिये छै। आस्ता १ श्रद्धा २ प्रतीत ३ निर्द्धार ४ रुचि ५ अभिलाषी ६ बहुमान ७ अर्थीपणो ८ तत्वईहा ९ गुण अद्भुनता १० गुण गुणी आश्चर्यता ११ तद्विरह कारकता १२ ॥

ज्ञान पर्य्यायः—अवलोकन १ भासन २ परिच्छेदन ३ विवेचन ४ अमूर्त्ति चेतन ५ सर्व्ववेत्ता ६ अपरपामित ७ निरावर्णत्वादि अनेक स्वर्णपर्य्याय ॥

चारित्र १ एग २ थिरता ३ तत्वरमण ४ निश्चलानुभूति ५ परम क्षमी ६ परम मार्दव ७ परम आर्जव ८ परम मूर्त्ति ९ अकामता १० अनसंशयता ११ सुख १२ ए आदि देई अनन्ता पय्यार्य जाणवा । एकेक गुण ना अनन्ता पर्य्याय जाणवा ॥

हवे सम्यकित नी दश रुचि लिखिये छै । प्रथम निसर्ग रुचि १ उपदेश रुचि २ आज्ञा रुचि ३ सुत्र रुचि ४ बीज रुचि ५ अभिगम रुचि ६

विस्तार रुचि७ क्रिया रुचि८ संचेप रुचि८ धर्म रुचि१० ए दश रुचि ना नाम जाणवा ॥

हवे सम्यकित ना पांच भूषण लिखिये छै। प्रथम उपशम भूषण १ जे विवेकी समकित दृष्टि ते पराई४ कथा * करै नहीं। अने जे करै तो खिणे तुरत मन पाछो वाले ॥ १ ॥ बीजू आस्ता भूषण। जे वीतराग ना वचन ऊपर श्रद्धा प्रतीत रावे। प्रभु जिम कह्यो तिम सर्धे ॥ २ ॥ त्रीजुं दया भूषण। जे जगवासी सगला जीव पोता सरीखा जाणीनें दया पाले ॥ ३ ॥ चोथो संवेग भूषण। जे संसार नें, धन घरवार सकल परवार नें जाणे ए अनित्य छै। सार पदार्थ आत्मा जाणी नें सकल कर्म थी मुकावानो अभिलाप राखवो, ते सवेग भूषण ॥ ४ ॥ हवे पाचमो निर्वेद भूषण। जे इद्रिय ना सुख जीव अनता वार पाम्यो, भोगव्या, पिण जीव चेतना तृप्ति न पाम्यो। ए संसारी इद्रीजनित सुख छै ते दुःख ना कारण छै। एथी दुःख छै पिण सुख नथी। सुख साचू किम्यू ? जे एक चिदानन्द मोक्षमयी—अत्यंद्री सुख ते आपणो करी जाणै ए निर्वेद भूषण पांचमो जाणवो ॥ ५ ॥

हवे त्रीण आत्मानु स्वरूप लिखिये छै। करै छै कोई भोगवै छै कोई इम कहनां जे परिणाम वावे छे ते परिणाम भोगवतो नथी। करतो नथी भोगवतो नथी ते श्यु ? जे निश्चय नये आत्मा जे अबध छै। करै छे अने भोगवे छै ते श्यु ? व्यवहार × नये आत्मा कर्त्ता भोक्ता छै ॥

---

* पाठांतर—वपाप

× पाठान्तर—निश्चय नये में व्यवहार नये

वली ज्ञानी जीव कहै जे बुद्ध कहतां केवल ज्ञानमयी छूं। यद्यपि व्यवहारै, ज्ञानावर्णी कर्म ना उदय थी अज्ञानी आपणा स्वरूप नें प्रत्यक्ष न देखै; पिण सम्यकित ना महिमा थकी ज्ञानी जीव आत्मा नें अनुमानै करी केवल ज्ञानमयी अनुभवै, जाणै। ते माटै आत्मा केवल ज्ञानमयी छै ॥ २ ॥

निर्विकल्पोहं । ज्ञानी जीव आत्मा नें निर्विकल्पोहं कहतां संकल्प विकल्प थी रहित मानै; संकल्प विकल्प ना परिणामरहित जाणै। यद्यपि आत्मा व्यवहारै, अनादि कर्म ना उदय थी ऊपन्यो भाव मन, तथा द्रव्य मन, ते थी ऊपन्यो जे अनंत प्रकार नो संकल्प विकल्प नो जाल, तेथी आपणा आत्मा नें सम्यकित दृष्टी जीव जुदो मानै; अत्यन्त अलगो नित्य निरंजन अनुभवै छै। ते माटै आत्मा नें निर्विकल्पोऽहं ज्ञानी जीव मानै ॥ ३ ॥

देहातीत। देह कहतां पुद्गल द्रव्यनो नीपन्यो शरीर ते थी आत्मानें अतीत कहतां अत्यंत जुदो मानै।यधपी व्यवहारे अनादि मोहना उदयथी ऊपन्या जे उदारिक शरीर, ते ऊपर जे आत्मा, ते मोहना वश्य थकी एकमेकता—देह ते आत्मा अने आत्मा ते देह, देह अने आत्मा जुदा नथी।इम सकल संसारी जीव देह ते आत्मा मानीनें, देहनें सुख ते सुख अने देहनें दुःख ते दुःख, इम जाणीये छिये, तथापि सम्यकितदृष्टी जीव निश्चय करी देह ने तथा आत्मा नें अभ्यंतर जुदा मानै । देही ना जाति भेद, गुणभेद, क्रिया भेद थकी देह नें आत्मा नें अभ्यंतर जुदा मानै। देह नी जात पुद्गल द्रव्य, आत्मा नी जात ते चेतन द्रव्य। ते माटैं ए बेनो जात भेद छै। तथापि देह पुद्गल द्रव्य, तेह ना गुण— वर्ण ५ गंध २ रस ५ स्पर्श ८। ते माटै देह मूर्त्ती छै जड़ छै।

आत्मा ना गुण—अनत ज्ञान दर्शन सुख सत्तादि अनन्त गुण छे। आत्मा मूर्त्ति रहित अरूपी छै, चैतन्नमय छै। ते माटै आत्मा नो देह नो गुणभेद जाणवो। तथा वली क्रिया भेद छे। देह नी क्रिया बाल भाव छे; तरुण भाव, वृद्ध भाव तथा वर्ण पलटे, गधपलटे रस पलटे इत्यादि देह नी क्रिया छे। आत्मा नो परिणाम अनेक भाति ज्ञान दर्शन सुख रूप अनत परिणाम रूप प्रणमै। ते माटै आत्मानी क्रिया जुदी। आत्मानी देह नी क्रिया जुदी जाणी नें सम्यकित दृष्टी जीव, देह ना पास में रोग सोग (शोक) व्याधि मरणादि देह ना धर्म आवै (त्यारै) ज्ञानी जीव आत्मा ने देहातीत भावना थी भावे ॥ ४ ॥ तिवारै ए आत्मा दुःख न पामै, मोह न व्यापै, कर्म बध न होय, सुख रूप परिणमै। ते माटै ज्ञानी जीव एहवी भावना हिया में राखे तो सदा सुखी होय। हिया में भाव राखिवो।

जीव अरूपी छै अने कर्म रूपी छै ताते अरूपी जीव नें कर्म किम लागै ? एह नो उत्तरः—आकाश अरूपी अने घटादिक रूपी तेह ने संबध छै तिम, आत्मा ने कर्म ने सबध छै। एहवूं धर्म सग्रहणी विषै आवश्यके गणधर वादें। बीजे पिण ग्रथ अधिकार छै। तथा जीव अनादि छै अने कर्म सादि छै। तो जीव किवारे अकर्मी सभविये ? दूतीदास कुण कर्म नो सयोग मिल्यो ए उत्तर। जीव अने कर्म सोनै (सुवर्ण) माटी नी परै अनादि सबध छै। ते माट जीव पूर्वे किवारे पिण अकर्मी न हो। पिण जीव अपुद्गली छे। जेम माटी सोनो बे गाली नें, कारीगर अग्नी जोगै जुदा करै, तिम तप संयम क्रियायै करीनें आत्मा नें कर्म जुदा थाय छै। पोतानो स्वरूप निमर्ल प्रगटे सम्यकित दृष्टीये प्रतीत राखवी।

षट् द्रव्य ऊपर व्याख्या (प्रतिउत्तर) लिखिये छै।

स्वस्ति श्री आदि जिन प्रणम्यं श्रीमत् मनुज्ञ भव शुभ स्थाने पूज्याराधे पूज्य ना मार्ग रुचिवंत, पंचांगी प्रमाण श्रद्धावन्त, यथार्थ ज्ञान भावना अभिलाषी, जिन शासन ना केई रीते दीपावनार, घणा जीव नें हित थिरता उपजावनार, अनेक ओपमा योग्यता पुन्य उद्यमे करी इहां सुख साता श्रेय सदैव स्वमुख मिल्या जेटलो हर्ष प्रमोद ऊपजे। अपरं वीजूं श्रीजिन धर्म पर्म आधार छै। आत्मा असंख्यात प्रदेशी ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए रत्न त्रय धर्म अहिंसक अनंत ऋद्धि सिद्धि नो धणी छै। एक २ प्रदेसे अनंता गुण अव्या बाध पणे रह्या छै तेहवु आत्मा नो स्वरूप छै. ते अनादि काल नो अशुद्ध परिणतै करी परभाव नो भोगी थईनें आठ कर्म करि अवराणो पड्यो छै। ते हवे घणी पुन्य प्रकृति नें उदयै करी नें घणो संसार रूप अ समुद्र मांहिं परिभ्रमण करतो करतो थाको। संसारी जीव अनन्ता काल पर्यटण करतो मनुष्य भव दशै १० दृष्टान्तै करी दुर्लभ मनुष्य नो भव रत्न चिन्तामणि सरीखो पाम्यो। ते जे कोई आत्मार्थी जीव होइ अप्रशस्त कारण छांडीनें प्रशस्त शुभ कारण जोड़वा। कारण रूप राखवी। अनुष्ठान पांच ५ ते माहे वीष १ गरल २ अन्यो अन्य ३ ये तीन छांडी नें तद् हेतु १ अमृत २ ये बे आदरी ने आत्म तत्व धर्म रत्न त्रयनी साधनता करशे, ते मनुष्य भव सफल करशे। फिरि २ ने मनुष्य भव पामवो खरे दुर्लभ छै। तमे तो कोई रीते आत्मा नें भाव शुद्ध निर्मल राखणार तमे तो उत्तम जीव

छो । पिण आत्मा अनादि काल नो स्वतंत्र कर्म बांधै छै। ते आत्मा नें असंख्यात प्रदेशै पुन्य ना दलिया पिण अनन्ता रह्या छै। ते बांधी स्थिति नो अबाधा काले पाकैं उदय आवै छै । ते उदय बे प्रकारै छै। एक प्रदेश उदय १ बीजो विपाक उदय २ । प्रदेश उदय तो समय २ अबाधां काल पाके उदय थाय छै । ते भोगवै छै तेह नी तो खबर पड़ती नथी, अव्यक्तपणे भोगवै छै। जे नीकाचित कर्म बांधै छै ते अबाधा काल पाके विपाक उदय आवै छै तिवारै आत्मा भोगवतां आकलो पड़ै छै। ते वास्ते आत्मार्थी जीव होय ते सम भावे भोगवै । आत्मा विचारै। जे आत्मा असंख्यात प्रदेशे कर्म बांध्या छै ते निर्जरै छै, एहवुं विचारै तेहनो हेत थाई । अने जे आरत ध्यान करै तो वली नवां कर्म बांधै। कोई वेला शुभ कर्म उदय पिण थाय छै तिवारै आत्मानें आल्हाद उपजे छै। तिहां पिण आत्मानें सम भावै रहवुं । वली आत्मा विचारिये जुवेतो शुभ कर्म नो उदय थइ जिहां जाइये तिहा, जिहा बेसिये तिहां, जिहां ऊठिये तिहां, तिहां सहु भाका वाना (आदरसत्कार) करै छै । एहवो पिण कोई वेला उदय थाय छै। कोई वेला अशुभ कर्म वाध्या होइ ते आबाधा काल पाके विपाक उदय अशुभ नो पिण थाय तिवारै जीव भोगवतां आकलो थाय। आत्मा अर्थी जीव होय ते सम भावे भोगवै, ते निर्जरा छै। एणी रीते आत्मा नें असख्यात प्रदेशे पुन्य तथा पाप ना दलिया एणी रीते दलिया सत्ता में रह्या छै। ते हवे आत्मार्थी जीव होय तेहनें परणाम सारा राखवा । ते सारा परणामे आत्मा नें हित थाय ते किंचित् लिखिये छे ।

श्री कर्मपयडि ग्रंथ मध्ये आठ कर्म नी व्याख्या अद्भुत छे ! ते करण आठ नी विगत लिखिये छे। बंधन करण १ संक्रमण करण २ उदय व्रत ना करण ३ अपव्रत ना करण ४ उदीरणा करण ५ उपशम ना करण ६ निधंत करण ७ निकाचित करण ८ एणी रीते आठ करण कर्मपयडि मध्ये छे तेहनो विस्तार घणो छे। सांभले जे आत्मा नें हित थाय एहवा परिणाम सारा राखै तो आत्मा नें हित नो कारण थाय। अथवा हीणा (हीन) परिणाम राखिये तो आत्मा नें अहित थाय तेहनी किंचित् (व्याख्या) लिखिये छे ॥

आत्मा नें असंख्यात प्रदेशै पुन्य ना दलिया पिण सत्ता में छै। ते आत्मार्थी जीव होय ते उदय थये रूड़ा परिणाम राखै; धर्मचर्चा करै; बखाण पच्चक्खाण पोषा पाडिकमणा शुभ कारण जोड़े। कदाचित् तेहवी शुभ क्रिया करवानो योग्य न मिलै तिवारे भाव धर्म नी ओलखाण वालो जीव सारा परिणाम राखै तो तेहने शुभ कर्म बंधाय। शुभ कर्म बांधता जे आत्मा नें असंख्यात प्रदेशे पापना दलिया अनंता सत्तायें रह्या छे, ते दलिया पाप ना शुभ बांधता शुभ पततग्रह थाय। ते अनंता दलिया पाप रूप छै ते संक्रमणे पुन्य रूप थाय। अथवा कोई जीव नें उदय थई हीणा परिणाम करै; घणी कूड कपट, छल भेद, विश्वास घात पार की निन्दा करै; तेहवा अनेक हीणा परिणाम ऊठतां बैठतां करै; ते अशुभ कर्म बंध ते करै। असंख्यात प्रदेशे पुन्य ना दलिया अनन्ता रह्या छै सत्ता प्रतें हीणा परणाम करतां अशुभ कर्म बांधै ते अशुभ पतितग्रह थाय। ते असंख्यात प्रदेशे अनन्ता पुन्यना दलिया सत्ताये रह्या छै ते अशुभ संक्रमणै पाप रूप थाय। एणी रीते आत्मा, समय २

जेह्वा परणाम थाय छे तेह्वा संक्रमणैं दलिया बदलाय छै। एह्वी रीते आत्मा (नी) भांजगड आत्मा करै । ते माटे आत्मार्थी जीव होय ते सारा परणाम राखवा । वली उदय वृतना अपवृतना समय २ थाय छै तेहनी असारत लिखिये छै।

जे कोई वेला जीव कोडाकोडी एक नी स्थिति बांधे। ते बाधती वेला तो कोडाकोड एक नी बाधै। पछे वली कोई हीणी सगति करता, हीणा परिणाम करतां कोडाकोडनी स्थिति बंधी होय तेव धारीनें ७० कोडाकोडनी उत्कृष्टी करै। अथवा कोई जीव सारा परणामे भाव धर्म नी ओलखाणवालो जीव धर्मचर्चा करै, सारा परणाम राखे तो, कोई जीवे मोहनी कर्म तथा बीजा कर्म नी स्थिति उत्कृष्टी बाधी होय ते, सारा परणाम करै तो एक कोडाकोडी मां आणीमूके। एह्वी कर्मनी भांजगड़ थई रही छे। मूल कर्म तथा उत्तर कर्म प्रकृति ए रीते भांजगड करै छै। सारा परणामे स्थित प्रकृति नें घटाडे छै, हीणे परणामे बधारै छै। सारा परणामे पुन्य नो रस वधै छै, पाप नो घटै छे। अने हीण परणाम राखिये तो पाप नो रस वधे, पुन्य नो घटे। ते माटे आत्मार्थी जीव होय तेहनें सारा परणाम राखवा। वात तो इहा घणी छै। एक वेदनी कर्म नी असारत लिखिये छै। वेदनी कर्म नी स्थिति उत्कृष्टी तीस कोडाकोड नी बाधे। साता वेदनी नी उत्कृष्टी स्थिति पंदर कोडाकोडी नी छै। हिवै असाता वेदनी नी उत्कृष्टी स्थिति त्रीस कोडाकोडी नी छे। ते सारा परणामे साता वेदनी बांध तैं असाता वेदनी ना दलिया कोडाकोड त्रीस, असंख्यात प्रदेश बांधी गल्या छै। ते सारा परणामे साता वेदनी बंधाय। असाता वेदनी ना दलिया कोडाकोडी त्रीस नी छै ते साता वेदनी बाधतां पातित

ग्रह में पडे तो साता संपत थाय । ए रीते सर्व मूल कर्म उत्तर कर्म प्रकृत्यों । ए रीते संक्रमाइ छे । अर्थ घणो छै पिण असारत लिखि छै । उदीक आवे धीर्यपणुं राखवुं ॥

॥ दोहा ॥

पंडित सरसी गोठडी, मुझ मन खरी सोहाय ॥
आले जे बोलावतां, माणक आपी जाय ॥ १ ॥
बलहारी पंडित तणी, जस मुख अमिय झरंत ॥
तासु वचन श्रवणै सुनी, मन रति अती करंत ॥ २ ॥
मन मंजूस (संदूक) में गुन रतन, चुप कर दीनो ताल ॥
राग विना नहिं खोलिये, कूंची वचन रसाल ॥ ३ ॥
सजन २ सहु कों कहै, सज्जन कैसा होय ॥
जो तन मन सें मिल रह्या, अंतर लखै न कोंय ॥ ४ ॥
उद्यम करज्यों धर्म नो, परिहरज्यो परमाद ॥
वाणी सुणज्यो सत गुरु तणी, सुमरो श्रीनवकार ॥ ५ ॥
ममता माया परिहरो, कुस मल करज्यो दूर ॥
रति राखो जिन राजनी, तो पामो भव पूर * ॥ ६ ॥

आत्मा नें भावना करवा किंचित् मात्र लिखिये छे । अहो आत्मा तूं पांच प्रमाद में पड्यो थको कांई विचारतो नथी । मनुष्य नो भव पामीनें श्रीवीतराग नो धर्म आदरतो नथी । संसार रूप जे समुद्र किम तरीनें पार पामश्यो ? अहो आत्मा ! तैं अनन्ता पुद्गल परावर्त्तन कीधा तो ही पिण धुर दा:ड़ो (पहलो दिन) छै । अरे

* पठांतर भवतूर.

चेतन ! भव कर्यां नो भय तुझनें नथी दिसतौ। एहवा तैं श्या कर्म कर्या छै ? धर्म साधन नें वीर्य उल्लास थातो नथी पिण तूं विचार जे कोई धर्म साधन कर्या विना भव पार पाम्यो ? ते माटे तूं आत्मा अज्ञान दशाये करी इम जाणै छै जे मनुष्य भव ऋद्धि संपदा इम नी इम रहशे। पिण हे चेतन! श्रीजिनराजना वचन हृदय कमल ने विषैं धार। हे चेतन आत्मा! धर्म साधन करवानो अवसर जाय छै, पछैं तू पछतावो घणो करीश। मनुष्य भव पचेंद्री पणो जाशे, हेठो उतरीश, तिवारे धर्म सामग्री क्या मिलशे? अनता काल नो विरह पड़शे। ते वास्ते तू प्रमाद छाडि, एक पोता नो आत्मा निरावर्ण करवा स्वधर्म प्रगट करवा लोक सगत तजी ओघ सज्ञा तजी, आसी भाव तजी, आसंसा रहित धर्म साधन करजे तो मनुष्य--भवे--बधन थी मुकाय। पिण चेतन ! तुझनें पुद्गलीक सुखनी इच्छा घणी छै पिण विचारी जोजे। पुद्गल द्रव्यबध अनती वर्गणा मा अनंता परमाणु अनन्ता ते सर्व अनन्ती वार लेइ २ नें भोगवी भोगवी नें चूसिकरि नें मूक्या छै ते हजी सुधी पिण तृष्णा न छूटी। वली चेतन भव अनंता कर्या, जन्म मरण अनन्ता करया। चउद राजलोक में एक लोक आकाश प्रदेशें २ अनन्ता जन्म अनन्ता मरण कर्या विना अबोट रह्यो नथी। पिण हे चेतन! तू कांई विचारतो नथी। ते वास्ते हवे तू प्रतिबोध पामी पर भावनी परणति मूकीनें आत्मसत्ता भणी निहाल। हे चेतन! ज्ञान, दर्शन, चारित्र एहवा अनन्ता गुण थारी सत्ता ना घर नें विषै छै अने पुद्गल ना टुकड़ा श्यु इच्छै छै ? हे आत्मा तू तो आत्मात्मिक सुख भोगी छै। थारो अणहारी पद निपजाव, अचल सुख निपजाव, अक्षय सुख निपजाव, महा आनंद सुख निपजाव,

जिम थारै जन्म मरण ना फेरा टलै । ते वास्तै श्रीपंच परमेष्टी नो ध्यान कर । जिम थारी चेतना निर्मल थाय।श्रीपंच परमेष्टी जेहवी रीते छै तेहवी रीते ओलखीनें ध्यान कर्स्यां, चेतना अडोल कर्स्यां, महा निर्जरा थाये आत्मिक गुण प्रगट थाशे।प्रमाद छांडिनें धर्मकारणें अवलंब्यो रह; महा कष्ट पड़े धर्म छांडीस नहीं। धर्म रूपणी पुंजी हशे तो जिहां जाइस तिहां सुख पामीस, ते वास्ते श्रद्धा पाकी करीनें श्रीवीतराग नो धर्म अहिंसकछै, आणा सहित धर्म करजे॥जिम थोड़ा काल मां अव्याबाधा सुख निपजै। जे सुखनी उपमा संसारमां नथी एहवुं सुख निपजाववा धर्म कारण सेववा ।एहवी भावना आत्मानें भाववी। अहो चेतन! तू आत्म स्वरूप विचार। शिथिल जीवनो आलंबन न करीश। उत्तम जीवनो आलंबन करजे ।अप्रमादपणै साधन करजे । लोकनें देखाड़वानें न करीश । इम जाणै जे मुझ नें भलो २ कहै तेणै थारी गरज सरै नहीं, थारो अर्थ सरै नहीं । भावइहा पणो मूकी थारा आत्मा नें अर्थ साधन कर । मुनिभाव विचार। जे राज ऋद्धि संपदा मूकी इंद्रीना भोग मूकी नें आत्मा साधन करै छै; सदा अप्रमाद पणै विचरै छै; एक निकेवल पोतानो स्वरूप प्रगट करवा उठ्या छै; चेतना निर्भय राखी छै ; चेतना निर्मल राखी छै; जड़ चेतन भिन्न करी जाणै छै; शरीर ऊपर मूर्च्छा राखता नथी; ते इम जाणै छै के ज्ञान दर्शन चारित्र चायक भावै नीपजै ते म्हारै काम छै। म्हारै शरीर थी श्यो सम्बन्ध छै ? जिहां सुधी शरीर छै तिहां सुधी अव्याबाध सुख रोकाणो छै । ते वास्ते थोड़ा काल मां अव्याबाध सुख नीपजै ते भलुं । एहवा जे मुनिराज ना परणाम छै ते मुनि नें धन्य छै ॥

वली मुनि सालंबन निरालंबन ध्यान करे छे। सालबन ते श्री जिनमुद्रा निरखी श्री जिनेश्वर ना गुण चितन करे। ते थी चेतना थिर थाय। पछैं निरालवन ध्यान करै ते रूपातीत ध्यान। ते श्री सिद्ध भगवान नो ध्यान करै। जे श्री सिद्ध भगवान सकल प्रदेशे निरावर्ण थया; अव्याबाध सुख ना भोक्ता थया, अवर्णे, अगंधे, अरसे, अफरसे, अनन्तनाण दसण धरा, अचल प्रदेश पणै रह्या छै। एक समय मां षट् द्रव्य नो उत्पाद व्यय ध्रुवपणें सर्व जाणै छै। समय २ अनतो आनंद ऊपजे छै। सर्व उपाधि रहित थया छै। एहवुं निरालंबन ध्यान करै मन वचन कायानो एकाग्रपणो राखीनें अत्यन्त उत्कृष्टि तिव्र परणाम थाइ क्षपक श्रेणी तत्काल केवल ज्ञान ऊपजे, लोकालोक प्रकाशक थाय। ते वास्ते मुनिभावना भाववी सदा चेतना निर्मल राखवी। चेतना निर्मल तो थाय। जो षट् द्रव्य वस्तु धर्मनो ओलखाण होय तो। अरे चेतन! अत्यत परणाम में कष्ट पड़े तो चलै नहीं। ते वास्ते भाव धर्म नो ओलखाण करवु ते सारो छै, मूल ओलखाण होय तो। अरे प्राणीचेतन! संसार रूप समुद्र मां तू लपटाइ रह्यो छै ते वास्ते भाव धर्म नो ओलखाण करैं तो. हिया मां सर्धै तो तरीनें पार पामश्यो। ए हिया मां सर्धी नें श्री जिन वीतराग नो धर्म छै ते अहिंसक छै। ते माटै धर्मनें सर्धहोतो पार पामश्यो। इति श्री जीव काया ऊपरें षट द्रव्य नो भाव अध्यात्म मार्ग देखाड्यो छै।

॥ इति श्री आतमधारा सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री पार्श्व जिनेश्वर स्तवन ॥

॥ राग सारंग रसियानी देशी ॥

ध्रुव पद रामी हो स्वामी माहरा निकामी गुणराय ॥ सुज्ञानी ॥
निज गुण कामी हो पामी तूं धणी। ध्रुव आरामी हो थाय ॥ १ ॥ सु० ध्रु० ॥
सर्व व्यापी कहै सर्व जाणगपणै । पर परिणमन सरूप ॥ सु० ॥
पर रूपे करी तत्वपणुं नहीं । स्वसत्ता चिदरूप ॥ सु० ध्रु० ॥ २ ॥
ज्ञेय अनेकै हो ज्ञान अनेकता । जलभाजन रवि जेम ॥ सु० ॥
द्रव्य एकत्व पणै गुण एकता। निजपद रमता हो खेम ॥ सु० ध्रु० ॥ ३ ॥
पर क्षेत्रै गति ज्ञेयने जाणवै । पर क्षेत्रें थयू ज्ञान ॥ सु० ॥
अस्तिपणूं निज क्षेत्रे तुमे कह्योरे । निर्मलतागुणमान ॥ सु० ध्रु० ॥ ४ ॥
ज्ञेय विना शेहो ज्ञान विनिश्वरु । काल प्रमाणै रे थाय ॥ सु० ॥
स्वकाले करी स्वसत्ता सदा । ते पररीतें न जाय ॥ सु० ध्रु० ५ ॥
परभावे करी परता पामतां । स्वसत्ता थिर ठाण ॥ सु० ॥
आतम चतुष्क मयी परमा नही। तो किम सहु नो रेजाण सु० ध्रु० ६ ॥
अगुरु लघु निज गुण नें देखता । द्रव्य सकल देखंत ॥ सु० ॥
साधारण गुण नी साधर्म्यता। दर्प्पण जल नें दृष्टान्त ॥ सु० ध्रु० ७ ॥
श्रीपारस जिनपारस रस समो । पिण इहां पारस नाहिं ॥ सु० ॥
पुरण रसिओहो निज गुण परसनो । आनंद घन मुझ मांहि ॥ सु० ध्रु० ८ ॥

॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ श्री ॥

॥ ज्ञानपच्चीसी ॥

॥ दोहा ॥

सुर नर तिर्जग * योनि में, नरक निगोद भमत । महा मोह की नींद में, सोवै काल अनत ॥ १ ॥ जैसे ज्वर के जोर से, भोजन की रुचि जाय । तैसे कुकरम के उदय, धरम वचन न सुहाय ॥२॥ लगै भुख ज्वर के गये, रुचि से लेत आहार। अशुभ गये शुभ के लगे, जानै धर्म विचार ॥ ३ ॥ जैसे पौंन झकोर तें, जल में उठै तरंग । त्यों मनसा चंचल भई, परिग्रह के परसंग ॥ ४ ॥ जहां पौन नहिं सचरै, तहा न जल कल्लोल । त्यों सब परिग्रह त्याग तें, मनसा होय अडोल ॥ ५ ॥ ज्यों काहू विषधर डंसे, रुचि सों नींब चवाय । त्यों तुम ममता से मढे, मगन विषय सुख पाय ॥ ६ ॥ नींब रसन परसै नहीं, निर्विप तनु जब होय । मोह घटे ममता मिटे, विषय न बछे कोय॥ ७ ॥ ज्यों सछिद्र नौका चढे, बूडे अंध अदेख । त्यों तुम भव जल में परे, विनु विवेक धरि भेख ॥ ८ ॥ जहां अखडित गुण लगे, खेवट शुद्ध विचार । आतम रुचि नौका चढे, पावहि भव जल पार ॥ ९ ॥ ज्यों अकुश मानै नहीं, महा मत्त गजराज । त्यों मन तृष्णा में फिरै, गिनै न काज अकाज ॥१०॥ ज्यों नर दांउ उपाय करि, गहि आनै गज साधि । त्यों या मन वस करन को, निर्मल ध्यान समाधि ॥ ११ ॥ तिमिर रोग से नयन ज्यों,

* तिर्यञ्च

लखै और की ओर। त्यों मन संशय में परे, मिथ्या मति की दौर ॥ १२ ॥ ज्यों औषधि अंजन किये, तिमिर रोग मिटि जाय। त्यों सद् गुरु उपदेश तें, संशय वेग विलाय ॥ १३ ॥ जैसे सब जादव जरे, द्वारावति की आगि। त्यों तुम माया में परे, कहां जाओगे भागि ॥ १४ ॥ द्वीपायन सों ते बचे, जे तपसी निग्रन्थ। तजि माया समता ग्रहो, एह मुक्ति को पन्थ ॥ १५ ॥ ज्यों कुधातु के फेंट ×सों, घटि बढि कंचन कांति। पाप पुण्य करि त्यों भये, मूढातम बहु भांति ॥ १६ ॥ कंचन निज गुण नहिं तजै, वान÷हीन के होत। घट घट अन्तर आतमा, सहज स्वभाव उद्योत ॥ १७ ॥ पन्ना+पीटि पकाइये, शुद्ध कनक ज्यों होय। त्यों परगट परमातमा, पुण्य पाप मल धोय ॥१८॥ परब राहु के गहन सों, सूर **सोम÷÷छबि छीन। संगत पाइ कुसाधु की, सज्जन होइ मलीन ॥ १९ ॥ निंबादिक चंदन करें, मलयाचल की बास। दुर्जन तें सज्जन भये, रहत साधु के पास ॥ २० ॥ जैसे ताल सदा भरे, जल आवत चिहुं ओर। तैसे आश्रव द्वार सों, कर्म बन्ध को जोर ॥ २१ ॥ ज्यों जल आवत मूंदिये, सूके सरवर पानि। तैसे संवर के किये, कर्म निर्जरा जानि ॥२२॥ ज्यों बूंटी संयोग तें, पारा मुर्च्छित होय। त्यों पुद्गल सों तुम मिले, आतम शक्ति समोय ॥ २३ ॥ मैलि खटाई मांजिये, पारा परगट रूप। शुक्ल ध्यान अभ्यास तें, दर्शन ज्ञान अनूप ॥ २४ ॥ कहै उपदेश बनारसी, चेतन अब कछु चेत। आप बुझावत आप को, उदय करन के हेत ॥ २५ ॥

॥ इति श्री ज्ञान पच्चीसी सम्पूर्णम् ॥

× मिलाप. ÷ अग्नी. + सोनाका पत्रा ** सूर्य. ÷÷ चंद्र.

॥ प्रार्थना ॥

(अशुद्ध आत्मा शुद्धात्मा को अर्ज करे है.)

हे परमेश्वर (शुद्धात्मा) माहरा हृदय नें दया थी भरपूर कर. हे सत्य! माहरा हृदय मां आव. हे शीलना स्वामी! मनें कुशील थी बचाव, मनें संतोष थी भरपूर कर के हूं पर वस्तु पर नजर न करूं. जे जेनें भोगववानें तें आप्यू ते हूं नो चाहूं. तु निष्पाप पूर्ण पवित्र छै. ताहरी पवित्रता माहरी मां भर मनें पाप रहित कर ज्ञान, धैर्य, शान्ति, निर्भयता मनें आप ताहरा पवित्र वचन थी माहरा पाप धो. हे आनंद! मनें आनन्द थी भरपूर कर मनें ताहरी तरफ खैंच हे देव! मैं ताहरी आज्ञा तोड़ी छै तो माहरो स्यु हवाल थशे! हूं पाप मां बूडी रह्यो छू. हु दर शमय। पाप ना काम साज हरख मानी रह्यो छू तारी कृपादान नु तेडु माहरी तरफ आव्यूं के तू मनें पोता नी तरफ बुलावें छै. ते ताहरी पवित्रता मनें दर वखत चेतावै छै के आ पाप मा तूं ना पेश माटे हवे हू ताहरी पवित्रता नुं सनमान करूं. मनें पवित्र आत्मा थी भरपूर कर। ताहरी सर्वे आज्ञा पालवा नी बुद्धि तथा शक्ति मनें आप मोह शत्रु ना कबजा थी मनें छोडाव. हू बालक छू माटे दर शमय! मनें बचाव, पडवा न दे, मनें ताहरा मा राख, तू माहरा मा रह. जें ताहरी कृपा निजर थइ ते पूरी कर. ताहरा सिवाय कोई दाता नथी ताहरी आज्ञा ना बगीचा मा थी मनें बाहर ना मुक. ताहरी शान्ति ना समुद्र मा मनें जिलाव, ताहरी सर्वे महिमा मनें देखाड तु आनन्द छै, तू प्रेम

छै, तू दया छै, तू सत छै, तू थिर छै, तू अचल छै, तू निर्भय छै, तू एक शुद्ध नित्त छै, तू अबाधित छै, ताहरा अनन्त अक्षय गुण थी मनें भरपूर कर. देहिक कामना थीं अने विषय नी भीख थी माहरा दिल नें वार. कषाय नी तपती थी बचाव. माहरा सर्वे विघन दूर कर के थिरता अने आनंद थी हूं ताहरी सिद्धि नें अनुभवुं. माहरी सर्वे शुभ इच्छा ताहरा वचन पशाय थी पूर, साचा मारग बतावनार गुरु पशाय थी पूर. मनें झूठा हटवाद थी अने जूठा धर्म थी छोडाव. कुगुरु ना फंद थी बचाव. ताहरा पशाय थी मन वचन शरीर आदि जे शक्ति हूं पाम्यों छुं ते सर्वे शक्ति हूं खोटा वा पाप ना काम मां न वापरूं अने फोगट वखत न गमावुं ए बुद्धि आप. ताहरा पशाय थी हूं सर्वे नें सुख नो कारण थाऊं, कोई नें दुःख नो कारण न थाउं. माटे मनें सत अने दया थी भरपूर कर. अने जे मनें लायक होय ते आप. खोटा मनोरथ अने व्यर्थ विचार थी हमेशा बचाव. ॥ इति प्रार्थना ॥

॥ राग काफी ॥

अकथ कथा कुण जाणै हो, तेरी चतुर सनेही ॥ अकथ० ॥ ए आंकणी ॥ नयवादी नयपच्च ग्रहीनें, झूठा झगड़ा ठाणै । निरपख लख चख स्वाद सुधा को, ते तो तनक न ताणै हो ॥ तेरी० ॥ १ ॥ छिन में रूप रचत नाना विध, आप अरूप बखाणै । छिन मूरख ज्ञानी होय छिन में न्याय सकल छिन जाणै हो ॥ तेरी० ॥ २ ॥ चोर साहु कछु कह्यो न परतु है, लख नाना गुण ठाणै । जिस्यो हेतु तैसो चिदानन्द चित श्रद्धा इम आणै हो ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

॥ श्री ॥

॥ अध्यात्म बत्तीसी ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध वचन सद्गुरु कहै । केवल भाषित अग ॥
लोक पुरुष परवान सब । चौदह रज्जु उतंग ॥ १ ॥
घृत घट पूरित लोक में । धर्म्म अधर्म्म आकाश ॥
काल जीव पुद्गल सहित । छहों ६ द्रव्य का वास ॥ २ ॥
छहों द्रव्य न्यारे सदा । मिलै न काहू कोय ॥
छीर नीर ज्यों मिलि रहै । चेतन पुद्गल दोय ॥ ३ ॥
चेतन पुदगल यों मिलें । ज्यों तिल में खल तेल ॥
प्रगट एक से देखिये । यह अनादि को खेल ॥ ४ ॥
वह वा के रस सों रमैं । वह वासों लपटाय ॥
चुबक करषै लोह ज्यू । लोह लगै तिहिं धाय ॥ ५ ॥
जड परगट चेतन गुपत । दुविधा लखै न कोय ॥
यह दुविधा सोई लखै । जे सुविचच्छन होय ॥ ६ ॥
ज्यों सुवास फल फूल में । दही दूध में घीउ ॥
पावक काठ पाखाण में । त्यों शरीर में जीउ ॥ ७ ॥
कर्म्म स्वरूपी कर्म्म में । घटाकार घट मांहि ॥
गुण प्रदेश परिछिन्न सब । या तैं परगट नांहि ॥ ८ ॥
सहज शुद्ध चेतन बसै । भाव कर्म्म की ओट ॥

द्रव्य कर्म नोकर्म्म सों । बंधीं पिंड की ओट ॥ ९ ॥
ज्ञान रूप भगवान शिव । भाव कर्म्म चित भर्म्म ॥
द्रव्य कर्म्म तन कारमन । यह शरीर नोकर्म्म ॥ १० ॥
ज्यों कोठी में धान में । चमी मांहिं कन बीच ॥
चमी धोइ कन परखिये । कोठी धोई कीच ॥ ११ ॥
कोठी सम नोकर्ममल । द्रव्य कर्म ज्यों धान ॥
भाव कर्म्म मल ज्यों चमी । कन समान भगवान ॥ १२ ॥
द्रव्य कर्म्म नोकर्म मल । दोऊ पुद्गल जाल ॥
भाव कर्म गति ज्ञान मति । दुविधि ब्रह्म की चाल ॥ १३ ॥
दुविधि ब्रह्म की चाल सों । दुबिध चक्र को फेर ॥
एक ज्ञान को परणमन । एक कर्म्म को घेर ॥ १४ ॥
ज्ञान चक्र अंतर गुपत । कर्म चक्र प्रत्यक्ष ॥
दोऊ चेतन भाव ज्यों । शुक्ल पक्ष तम पक्ष ॥ १५ ॥
निज गुण निज पर्य्याय में । ज्ञान चक्र की भूमि ॥
पर गुन पर पर्य्याय सूं । कर्म चक्र की घूम ॥ १६ ॥
ज्ञान चक्र की ढरनि में । सजग भांति सब ठौर ॥
कर्म चक्र की नींद सूं । मृषा सुपन की दौर ॥ १७ ॥
ज्ञान चक्र ज्यों दर्शनी । कर्म्म चक्र सो अंध ॥
ज्ञान चक्र में निर्जरा । कर्म चक्र में बंध ॥ १८ ॥
ज्ञान चक्र अनुसरन कों । देव धर्म गुरु द्वार ॥
देव धर्म गुरु जे लखै । ते पावै भव पार ॥ १९ ॥
भववासी जानै नहीं । देव धर्म गुरु भेद ॥
पर्‍यो मोह के फंद में । करै मोक्ष को खेद ॥ २० ॥

उदै कुकर्म सुकर्म कै। रुलै चतुर्गति मांहि ॥
निरखै वाहिज दृष्टि सों। तिहि शिव मारग नांहि ॥ २१ ॥
देव धर्म गुरु है निकट। मूढ न जानै ठौर ॥
बध्या दृष्टि मिथ्यात सों। लखै और की और ॥ २२ ॥
भेषधार को गुरु कहै। पुन्नवत को देव ॥
धर्म्म कहै कुल रीति को। यह कुकर्म की टेव ॥ २३ ॥
देव निरजन को कहै। धर्म वचन परवान ॥
साधु पुरुष को गुरु कहै। यह सुकर्म्म को ज्ञान ॥ २४ ॥
जानै मानै अनुभवै। करै भगति मन लाय ॥
परसगति आश्रव सधै। कर्मवध अधिकाय ॥ २५ ॥
कर्मबंध ते भ्रम बढै। भ्रम तें लखै न बाट ॥
अंध रूप चेतन रहै। विना सुमति उद्घाट ॥ २६ ॥
सहज मोह जब उपशमै। रुचै सुगुरु उपदेश ॥
नव विभाव भव थिति घटै। जगै ज्ञान गुन लेश ॥ २७ ॥
ज्ञान लेश सो है सुमति। लखै मुक्ति की लीक ॥
निरखै अंतर दृष्टि सों। देव धर्म गुरु ठीक ॥ २८ ॥
ज्यो सुपरीच्छक जौंहरी। काच डारि मणि लेइ ॥
त्यों सुबुद्धि मारग गहै। देव धर्म गुरु सेइ ॥ २९ ॥
दर्शन चारित ज्ञान गुन। देव धर्म गुरु शुद्ध ॥
परखै आतम संपदा। तजै सनेह विरुद्ध ॥ ३० ॥
अर्चै दर्शन देवता। चर्चै चारित धर्म्म ॥
दृढ़ परिचय गुरु ज्ञान सों। यहै सुमति को कर्म्म ॥ ३१ ॥
सुमति कर्म्म तें शिव सधै। और उपाय न कोय ॥

शिव स्वरूप परकाश सों । आवागमन न होय ॥ ३२ ॥
सुमति कर्म समकित सहित । देव धर्म गुरु धार ॥
कहत बनारसी एह तत । लहि पावै भवपार ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री अध्यात्मबत्तीसी सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीतीर्थंकर की स्तुति स्वरूप कथन सवैया इकतीसा ॥

जा में लोकालोक के सुभाउ प्रतिभासै सब, जगी ज्ञान सकति विमल जैसी आरसी । दरसन उदोत लियो अंतराय अंत कियो, गयो महा मोह भयो परम महा रसी ॥ सन्यासी सहज जोगी जोग सों उदासी जा में, प्रकृति पच्यासी लगि रही जरि छारसी । सो है घट मंदिर में चेतन प्रगट रूप, ऐसो जिनराज ताहि वंदत बनारसी ॥ १ ॥

॥ जीवमहिमा कथन सवैया इकतीसा ॥

जैसे बट वृक्ष एक ता में फल है अनेक, फल फल बहु बीज बीज बीज बट है । बट मांहि फल फल मांहि बीज ता में बट, कीजे जो विचार तो अनन्तता अघट है ॥ तैसें एक सत्ता में अनंत गुन प्रजाय जा में, अनंत नृत्य नृत्य में अनंत ठट है । ठट में अनंत कला कला में अनंत रूप, रूप में अनंत सत्ता ऐसो जीव नट है ॥ १ ॥

श्री

॥ आगम अध्यात्म स्वरूप ॥

अगम वस्तु को जो स्वभाव, सो आगम कहिये।
आत्मा को जु अधिकार, सो अध्यात्म कहिये ॥
आगम १ तथा अध्यात्म २ स्वरूप भाव, आत्म द्रव्य के जानने।
ते दोऊ भाव ससार अवस्था विषै, त्रिकालवर्त्ती मानने ॥

ता को व्योरो—आगम रूप कर्म्म पद्धति; १ अध्यात्म रूप शुद्ध चेतना पद्धति. २ ता को व्यारो—कर्म्म पद्धति पौद्गलिक द्रव्य रूप; अथवा भाव रूप द्रव्य रूप पुदगल परिणाम.भाव रूप पुदगलाकार आत्मा की अशुद्ध परणातिरूप परिणाम.ते दोऊ परिणाम आगम रूप थापै.

अब शुद्ध चेतना पद्धति शुद्धात्म परिणाम सो भी द्रव्य रूप अथवा भाव रूप द्रव्य रूप तौ जीवतत्व परिणाम भाव रूप तौ ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि अनन्त परिणाम. ते दोऊ परिणाम अध्यात्म रूप जानने आगम अध्यात्म दुहूं पद्धति विषै अनन्तता माननी. अनन्तता कहो ता को विचार, अनन्तता को स्वरूप दृष्टान्त करि दिखाइयतु है.

जैसे वटवृक्ष को बीज एक हाथ विषैं लीजे, ता को विचार दीर्घ दृष्टि सूं कीजे वा वटबीज विषैं एक वट को वृक्ष है सो, वृक्ष जैसो कछू काल भावी—होनहार है तैसो विस्तार लिए विद्यमान वा में वास्तव रूप छतो है; अनेक शाखा, प्रशाखा, पत्र, पुष्प, फल

संयुक्त है; फल फल विषै अनेक अनेक वीर्य होहिं, या भांति की अवस्था. एक वट के बीज विषै विचारिये.

और भी सूक्ष्म दृष्टि दीजेतो जे जे वा वटवृक्ष विषै बीज होहिं ते ते, अंतर गर्भित वटवृक्ष संयुक्त होहिं. याही भांति एक वट विषैं अनेक २ बीज, एक २ बीज विषैं एक २ वट. ता को विचार कीजे तो भावीनें प्रमान करि न वट वृक्षनि की मर्यादा पाइये, न बीजन की मर्यादा पाइये. याही भांति अनन्तता के स्वरूप को केवल ज्ञानी पुरुष भी अनन्तताही देखै, जानै, कहै. अनंत को और अनंत है ही नांहीं जो ज्ञान विषैं भासै, ता तैं अनन्तता अनन्तही रूप प्रति भासै, वाही भांति आगम अध्यात्म की अनन्तता जाननी. ता में विशेष इतनो जू—अध्यात्म को स्वरूप अनन्त, आगम को स्वरूप अनन्तानन्त रूप है. यथापना प्रमान करि अध्यात्म एक द्रव्याश्रित, आगम अनन्तानन्त पुदगल द्रव्याश्रित. इन दुहूं को स्वरूप—सर्वथा प्रकार तो केवल-ज्ञान-गोचर अंशमात्र माति ज्ञान ग्राह्य तातें सर्वथा प्रकार आगमी अध्यात्मी तो केवली, अंशमात्र माति ज्ञानी ज्ञाता, देश मात्र अवधि ज्ञानी, मन पर्यैव ज्ञानी; ए तीनों यथावस्थित ज्ञान प्रमाण न्यूनाधिक्य रूप जानने. मिथ्या जीव न आगमी न अध्यात्मी का है. या तें जू कथन मात्र तो ग्रंथ पाठ केवल करि आगम अध्यात्म को स्वरूप सम्यक् प्रकार जानै नहीं. तातैं मूढ जीव न आगमी न अध्यात्मी, निर्वेदकत्वात्.

अब मूढ जीव तथा ज्ञानी जीव को विशेषपणो और भी सुनो. ज्ञाता मोक्षमार्ग साधि जानै, मूढ मोक्षमार्ग साधि न जानै. सो काहे तैं? यातैं सुनो कि मूढ जीव आगम पद्धति को व्यवहार कहै, अध्यात्म पद्धति को निश्चय कहै, ता तैं आगम अंग एकान्तपणै

साधिकैं मोक्षमार्ग दिखावै. अध्यात्म अग को व्यवहार न जानै, यह मूढ़ दृष्टि कों स्वभाव है, तातैं वाही याही भांति सूझै. काहे तें ? या तै जु आगम अंग बाह्य क्रिया रूप प्रत्यक्ष प्रमान रूप है ता को स्वरूप साधिवो सुगम. ता वाह्य क्रिया करतो संतो आपु कों मूढ जीव मोक्ष को अधिकारी मानै अतर गर्भित जो अध्यात्म रूप क्रिया सो अतरदृष्टि ग्राह्य है सो वा क्रिया मूढ न जानै. अंतरदृष्टि के अभाव सों अतर क्रिया दृष्टिगोचर आवै नहीं, ता तें मिथ्यादृष्टी जीव मोक्ष मार्ग साधिवे कों असमर्थ.

अव सम्यक्दृष्टि को विचार सुनो. सम्यक्दृष्टि कहा ? सो सुनो. संशय, विमोह, विभ्रम, ए तीनि भाव जामें नहीं सो सम्यक् दृष्टि सशय, विमोह, विभ्रम कहा ? ता को स्वरूप दृष्टान्त करि दिखाइयतु हैं जैसें पुरुष चारि काहू एक स्थान के विषैं ठाढे तिन्ह चारिहूं के आगे एक सीप को खंड किनही और पुरुष नें आनि दिखायो. प्रत्येक २ तें प्रश्न कीन्हो कि यह कहा है— सीप है कि रूपो है ? प्रथमही एक पुरुष संशयवालो बोल्यो कि कुछ सुधि नांही परति कि सीप है कि रूपा है मेरी दृष्टि विषैं या को निर्धार होतु नाहीं १. दूजो पुरुष विमोहवालो बोल्यो कि कुछ मोहि यह सुधि नांहीं कि तुम सीप (रूपो) कोन सौं कहतु हो ? मेरी दृष्टि विषैं कछु आवत नांहीं, तातैं हम नांहिन जानत कि तूं कहा कहतु है. अथवा चुप्प हो रहै, बोले नहीं, गहल रूप सौं २ तीसरो पुरुष विभ्रमवालो बोल्यो कि यह तो प्रत्यक्ष प्रमान रूपो है, या कों सीप कौन कहै. मेरी दृष्टि विषैं तो रूपो सूझतु है. ता तैं सर्वथा प्रकार यह रूपो है ३. सो, तीनि पुरुष तो वा सीप को स्व-

रूप जान्यो नहीं ता तै तीनी मिथ्यावादी. अब चौथो पुरुष बोल्यो कि प्रत्यक्ष प्रमान सीप को खंड है, यामें कहा धोखो ? सीप, सीप, सीप, निरधार सीप, या कौं जो कोई और वस्तु कहै सो प्रत्यक्ष प्रमान भ्रामक अथवा अंध. तैसें सम्यक्दृष्टि को स्व पर स्वरूप विषैं न संशय, न विमोह, न विभ्रम है—यथार्थ दृष्टि है. तातैं सम्यक्दृष्टि जीव अंतर दृष्टि करि मोक्ष पद्धति साधि जानै. बाह्य भाव व बाह्य निमित्त रूप मानै, सो निमित्त नाना रूप है—एक रूप नाहीं. अंतर दृष्टि के प्रमान मोक्ष मार्ग साधै. सम्यक् ज्ञान स्वरूपाचरन की कनिका जगाइ मोक्ष मार्ग साधै. मोक्ष मार्ग को साधिवो यहै व्यवहार शुद्ध द्रव्य, अक्रिय रूप सो निश्चय. ऐसे निश्चय व्यवहार को स्वरूप सम्यक्दृष्टि जानै, मूढ जीव न जानै, न मानै. मूढ जीव बंध पद्धति कौं साधि करि मोक्ष कहै सो बात ज्ञाता मानै नहीं. काहे तें कि बंध के साधनैं बंध सधै, मोक्ष सधै नहीं. ज्ञाता जब कदाचित् बंध पद्धति विचारै तब जानै कि या पद्धति सौं मेरो द्रव्य अनादि को बंध रूप चल्यो आयो है. अब या पद्धति सौं मोहि तोरिव है. तो या पद्धति को राग पूर्व्वक त्यौं नार कहा करो. छिन मात्र भी बंधपद्धति विषैं मग्न होइ नहीं सो ज्ञाता अपनो स्वरूप विचारै, अनुभवै, ध्यावै, गावे श्रवनकरै; नौधा भक्ति रूप क्रिया अपनें शुद्ध स्वरूप के सन्मुख होइ करि करै. यह ज्ञाता को आचार, याही को नांव (नाम) मिश्र व्यवहार.

अब हेय, ज्ञेय, उपादेय रूप ज्ञाता की चाल ता को विचार लिखतु हैं. हेय त्याग रूप तो अपनें द्रव्य की अशुद्धता; ज्ञेय विचार रूप अन्य षट् द्रव्य को स्वरूप; उपादेय आचरण रूप अपने द्रव्य की शुद्धता. ता को व्यौरो. गुनस्थानक प्रमाण हेय, ज्ञेय, उपादेय रूप

शक्ति वर्द्धमान होइ त्यों २ गुनस्थानक की बढ़वारी कही है गुन-स्थानक प्रमान ज्ञान, गुनस्थानक प्रमान क्रिया। तामें विशेष इतनोजु—एक गुनस्थानवर्त्ती अनेक जीव होंहि तो अनेक रूप को ज्ञान कहिये, अनेक रूप की क्रिया कहिये, भिन्न २ सत्ता के प्रमान करि एकता मिलै नांहीं. एक २ जीव द्रव्य विषै अन्य २ रूप उदीक भाव होहिं तिन्ह उदीक भावानुसारी ज्ञान की अन्य अन्यता जाननी परन्तु विशेष इतनोजु कोऊ जाति कों ज्ञान ऐसो न होइ जु पर सत्तावलंबन सीली होइ करि मोक्ष मार्ग साक्षात कहै. तौ अवस्था प्रमान पर सत्तावलंबक है. ज्ञान को परसत्तावलंवी परमार्थत न कहै जो ज्ञान होइ सो स्वसत्तावलंबनसीली होइ ता कों नांउ ज्ञान ता ज्ञान की सहकारभूत निमित्त रूप नाना प्रकार के उदीक भाव होंहिं तिन्ह उदीक भावनि को ज्ञाता तमासगीर न कर्त्ता, न भोक्ता, न अवलवी तातैं कोऊ यों कहै कि या भांति के उदीक भाव होहि सर्वथा, तो फलानो गुनस्थानक कहिए, सो झूठो. वाने तीनि द्रव्य कों स्वरूप यथार्थ जान्यो नही. काहेतै कि और गुनस्थानकनिकी कौन बात चलावे? केवली कैभी उदीक भावनि की नाना भांति जाननी. केवली कैभी उदीक भाव एकसे होहि नांहीं काहू केवली कौ दड कपाट रूप क्रिया उदै होइ, काहू केवली कौ नाहीं होइ तो केवली विषै भी उदै की नानत्वता, और गुनस्थानक की कौन बात? तातैं उदीकभावनि के भरोसे ज्ञान की शक्ति नांहीं ज्ञान स्व शक्ति प्रमान है. स्व पर प्रकाशक की ज्ञान शक्ति ज्ञायक प्रमान, ज्ञायक स्वरूपाचरन रूप चारित्र, यथा अनुभव प्रमान यह ज्ञाता को सामर्थ्य पणो, इन वातनि को व्यौरो कहां ताईं कहिये, वच-

नातीत, इंद्रियातीत, मतिज्ञानातीत है. ता तैं यह विचार बहुत कहा लिखैं ? जो ज्ञाता होइगो सो थोरोई लिख्यो बहुत करि समुझेगो । जो अज्ञानी होइगो सो यह चिट्ठी सुनेगो तो सही पर समुझैगो नहीं. यह वचनिका यथा स्वमति प्रमान कल वचनानुसारी है. जो याहि सुनैगो, समुझैगो, सर्धैगो ताहि कल्यानकारी है भाग्यमान ॥

इति आगम अध्यात्म स्वरूपम् ॥

॥ राग मल्हार सोरठ ॥

॥ अष्टपदी ॥

देखो भाई महा विकल संसारी । दुखित अनादि मोह के कारन, राग दोष भ्रम भारी ॥ देखो० ॥ १ ॥ हिंसारंभ करत सुख समुझें, मृषा बोलि चतुराई । पर धन हरत समर्थ कहावै, परिग्रह बढ़त लड़ाई ॥ देखो० ॥ २ ॥ वचन राखि काया दृढ राखै, मिटै न मन चपलाई । या तें होत और को औरै, शुभ करनी दुखदाई ॥ देखो० ॥ ३ ॥ जोगासन करि पवन निरोधे, अंतर दृष्टि न जागै । कथनी कथत महंत कहावै, ममता मूल न त्यागै ॥ देखो० ॥ ४ ॥ आगम वेद सिद्धान्त पाठ सुनि, हियै आठ मद आनै । जाति लाभ कुल तप बल विद्या, प्रभुता रूप बखानै ॥देखो०॥५॥ जड़ सों राचि परम पद साधै, आतम शक्ति न सूझै । बिना विवेक विचार द्रव्य के, गुन पर्याय न बूझै ॥ देखो० ॥ ६ ॥ जस वाले जस सुनि संतोषै, तप वाले तन सोषैं । गुन वाले पर गुन को दोषैं, मत वाले मत पोषैं ॥ देखो० ॥ ७ ॥ गुरु उपदेश सहज उदया गति, मोह विकलता छूटै । कहत बनारसि होइ करुना रासि, अलख अखै निधि लूटै ॥ देखो० ॥ ८ ॥ इति अष्टपदी सम्पूर्णम् ॥

श्री

॥ निमित्त उपादान कारण ॥
भेद निर्णय.



प्रथम कोई पूछतु है कि निमित्त कहा ? उपादान कहा ? ता को उत्तर—निमित्त तो संजोग रूप कारण; उपादान वस्तु की सहज शक्ति। ता को व्यौरो—एक द्रव्यार्थिक निमित्त उपादान, एक पर्यायार्थिक निमित्त उपादान। ता को व्यौरो। द्रव्यार्थिक निमित्त उपादान गुन भेद कल्पना। पर्यायार्थिक निमित्त उपादान परयोग कल्पना। ता की चोभंगी साधी। प्रथमही गुन भेद कल्पना की चोभगी को विचार कहीं। सो कैसें या तें सुनो। जीव द्रव्य ता के अनन्त गुन। सब गुन असहाय स्वाधीन सदा काल। ता में दोइ गुन प्रधान मुख्य थापे। ता पर चोभगी को विचार। एक तो जीव को ज्ञान गुन, दूसरो जीव को चारित्र गुन। ए दोई गुन शुद्ध रूप भी जानने, अशुद्ध रूप भी जानने, यथायोग्य स्थानक मानने। ता को व्यौरो। इन दुहूं की गति न्यारी २, शक्ति न्यारी २. जाति न्यारी २, सत्ता न्यारी २ ता को व्यौरो।

ज्ञान गुन की तो जान अजान रूप गति, स्व पर प्रकाशक शक्ति, ज्ञानसत्ता। परन्तु एक विशेष इतनो जु ज्ञान, रूप जाति को नाश नहीं। मिथ्यात्व रूप जाति को नाश नाहीं। मिथ्यात्व

रूप जाति को नाश सम्यक् दर्शन उत्पत्ति पर्यन्त। यह तो ज्ञान गुन को निर्णय भयो।

अब चारित्र गुन को व्यौरो। संक्लेश विशुद्ध रूप गति, थिरता अथिरता शक्ति, मंद रूप तीव्र (रूप) जाति, द्रव्य प्रमान सत्ता। परन्तु एक विशेष इतनो जू, मंदता की स्थिति चतुर्दशम गुनस्थानक पर्यन्त, तीव्रता की स्थिति पंचम गुन स्थानक पर्यन्त। यह तो दुहूं को गुन भेद न्यारो २ कियो। इन की व्यवस्था—ज्ञान चारित्र कै आधीन, चारित्र ज्ञान कै आधीन, दोऊ असहाय रूप; यह तो मर्यादा बंधी।

॥ अथ चौभंगी विचार लिख्यते ॥

ज्ञान गुन निमित्त रूप, चारित्र गुन उपादान रूप। ता को व्योरो—एक तो अशुद्ध निमित्त शुद्ध उपादान १, दूसरो शुद्ध निमित्त अशुद्ध उपादान २, तीसरो अशुद्ध निमित्त अशुद्ध उपादान ३, चोथौ शुद्ध निमित्त शुद्ध उपादान ४। ता को व्योरो—सूक्ष्म दृष्टि देइ करि एक समय की अवस्था द्रव्य की लेना; समुच्चय रूप मिथ्यात्व सम्यक्त की बात नाहीं चलावनी। काहू समै जीव की अवस्था या भांति की होतु है जूः—

जान रूप ज्ञान—विशुद्ध चारित्र १, काहू समै जान ज्ञान—संक्लेश चारित्र २, काहू समै अजान-ज्ञान संक्लेश चारित्र ३, (काहू समै अजान-ज्ञान विशुद्ध रूप चारित्र ४) या भांति अन्य २ दशा जीव की सदा काल अनादि रूप ता कौ व्योरोः—

जान रूप ज्ञान की शुद्धता कहिये विशुद्ध रूप चारित्र की [illegible] कहिये। अज़ान रूप ज्ञान की अशुद्धता कहिये। (संक्लेश

रूप-चारित्र की अशुद्धता कहिये) अब ता को विचार-सुनो। मिथ्यात अवस्था विषैं काहू समै जीव को ज्ञान गुन जात रूप है, तब कहा जानतु है ? ऐसो जानतु है कि लक्ष्मी, पुत्र, कलत्र इत्यादिक मो सों न्यारे हैं. प्रत्यक्ष प्रमान, मैं मरूगा ए यांहीं रहैंगे। अथवा ए जाहिंगे, मैं रहूंगा, कोई काल इन्ह सों मोहि एक दिन वियोग है। ऐसो जानपनो मिथ्यादृष्टी कों होतु है सो तो शुद्धता कहिये, परन्तु सम्यक् शुद्धता नांहीं—गर्भित शुद्धता। जब वस्तु को स्वरूप जानै तब सम्यक् शुद्धता। सो ग्रथी भेद विना होइ नाहीं। परन्तु गर्भित शुद्धता सों भी अकाम निर्जरा है। वाही जीव कों काहू समै ज्ञान गुण अजान रूप है। गहल रूपता करि केवल बंध है। याही भांति मिथ्यात्व अवस्था विषैं काहू समै चारित्र गुन विशुद्ध रूप है ता तैं चारित्रावर्ण कर्म मंद है। ता मंदता करि निर्जरा है। काहू समै चारित्र गुन संक्लेश रूप ता तें केवल तीव्र बंध है। या भांति करि मिथ्यात अवस्था विषैं जा समै जान रूप ज्ञान है, अरु विशुद्ध रूप चारित्र है, ता समै निर्जरा है। जा समै अजान रूप ज्ञान है संक्लेश रूप चारित्र है, ता समै बंध है। ता में विशेष इतनो जु अल्प निर्जरा बहु बंध। ता तैं मिथ्यात्व अवस्था विषैं केवल बंध कह्यो अल्प की अपेक्षा। जैसे काहू पुरुष को नफा थोरो टोटो बहुत, सो पुरुष टोटाऊही कहिये। परन्तु बंध निर्जरा विना काहू अवस्था विषै नाहीं। दृष्टान्त ऐसो जू जो विशुद्धता करि निर्जरा न होती तो एकेन्द्री जीव निगोदावस्था सो व्यवहार राशि कोनके बल आवतो। वहां तो ज्ञान गुन अजान रूप गहल रूप है ता तैं ज्ञान गुन को तो बल नांहीं, विशुद्ध रूप चारित्र के बल करि जीव व्यवहार

राशि चढ़तु है। जीव द्रव्य विषै कषाइ की मंदता होती हैं। वाही मंदता प्रमान शुद्धता जाननी। अब और विस्तार पूर्वक सुनो।

ज्ञान पणो ज्ञान को अरु विशुद्धता चारित्र की दोऊ मोक्ष मार्गानुसारी है। ता तैं दुहुं विषै शुद्धता माननी। परन्तु विशेष इतनो जू, गार्भित शुद्धता, प्रगट शुद्धता नांहीं। इन दुहूं गुन की गार्भित शुद्धता। जब ताईं ग्रंथी भेद न होइ तब तांई मोक्ष मार्ग न बधे, परन्तु ऊर्द्धता को कराहिं, अवश्य कराहिं। एई दोउ गुन की गर्भित शुद्धता। जब ग्रंथिं भेद होइ तब इन दुहू की शिखा फूटै। तब दोऊ गुन धारा प्रवाह रूप मोक्ष मार्ग को चलहिं। ज्ञान गुन की शुद्धता करि ज्ञान गुन निर्मल होइ। चारित्र गुन की शुद्धता करि चारित्र गुन निर्मल होइ। वह केवल ज्ञान को अंकुर, वह यथाख्यात चारित्र को अंकुर। इहां कोऊ उटंकना करतु है कि तुम कहो जू ज्ञान को जानपनौ अरु चारित्र की विशुद्धता दुहू सो निर्जरा है। सो ज्ञान कै जानपनै सों निर्जरा यह तो हम मानी। चारित्र की विशुद्धता सों निजर्रा कैसे? हम नांहीं समुझो। या को समाधान—कि सुनि भैया! विशुद्धता थिरता रूप परिणाम सों कहिये, सो यथाख्यात चारित्र को अंश है, ता तैं विशुद्धता में शुद्धता आई। वह उटंकनावारो बोल्यो कि तुम विद्धशुता सों निर्जरा कही; हम कहते हैं कि विशुद्धता सों निर्जरा नांहीं, शुभ बंध है। ता को समाधान—कि सुनि भैया! यह तो तू सांचो, विशुद्धता सों शुभ बंध, संक्लेशता सों अशुभ बंध। यह तो हम भी मांनी परन्तु और भेद यामें है सो सुन। अशुद्ध पद्धति ऊर्द्धमति को प्रणमन है; ता तैं अधो रूप संसार ऊर्द्ध मति को प्रणमन रूप मोक्ष या नय करि शुद्धता वा में आई सो मानी मानी वा में धोखो

नांहीं है। विशुद्धता सदा काल मोक्ष को कारन है। परन्तु ग्रंथिभेद विना विशुद्धता को जोर नांहीं चलत। जैसे कोऊ तैरू पुरुष नदी में डुबकी मारे फिर उछले, तब देव संयोग सों वा पुरुष के ऊपर नौका आय जाय, तो यद्यपि तैरू पुरुष है तथापि कौन भांति निकले? वा को जोर नांहीं; बहुतेरा कलवल करो पै कछु वसाइ नांहीं। तैसें विशुद्धता की ऊर्द्धता जाननी। ता वास्ते गर्भित शुद्धता ग्रंथि भेद भये मोक्ष मार्ग को चली। अपने स्वभाव करि वर्द्धमान रूप भई तब पूर्ण यथाख्यात प्रगट कहायो। विशुद्धता की जो ऊर्द्धता वहै वा की शुद्धता। और सुनो। जहां मोक्ष मार्ग साध्यो तहां कह्यो कि (सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः) और यों भी कह्यो कि (ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्ष मार्गः) ता को विचार—चतुर्थ गुन स्थानक सों लेय करि चतुर्दशम गुनस्थानक पर्यन्त मोक्ष मार्ग कह्यो। ता को व्योरो—सम्यक रूप ज्ञान धारा विशुद्ध रूप चारित्र की दोऊ धारा मोक्ष को चली। सो ज्ञान सों ज्ञान की शुद्धता, क्रिया सों क्रिया की शुद्धता। जो विशुद्धता में शुद्धता है तो यथाख्यात रूप होत है। जो विशुद्धता में शुद्धता न होती तो ज्ञान गुनशुद्ध होतो, क्रिया अशुद्ध रहती केवली विषैं, सो यों तो नाहीं। या में शुद्धता हीं (थी) ता करि शुद्धता भई। इहां कोई कहैगो कि ज्ञान की शुद्धता करि क्रिया शुद्ध भई। सो यों नाहीं। कोई गुन काहू गुन के सारे नहीं, सब असहाय रूप हैं। और भी सुनो। जो क्रिया पद्धति सर्वथा अशुद्ध होती तो अशुद्धता की एती (इतनी) शक्ति नाहीं जो मोक्ष मार्ग को चलै। ता तैं विशुद्धता में यथाख्यात को अंश हो ता तैं वह अंश क्रम क्रम पूर्ण भयो। ए भैया ढटकनावारे! तैं (तू)

विशुद्धता में शुद्धता मानी कि नाहीं ? जो तैं नहीं मानी तो तेरो द्रव्य याही भांति को परिणम्यो है, हम कहा करहिं ? जो मानी तो शाबासी। यह तो द्रव्यार्थिक की चौभंगी पूरी भई। निमित्त उपादान शुद्ध अशुद्ध रूप विचार समाप्त॥

अब पर्यायार्थिक की चौभंगी सुनो। एक तो वक्ता अज्ञानी, श्रोताभी अज्ञानी सो तो निमित्त भी अशुद्ध उपादान भी अशुद्ध १. दूसरो वक्ता अज्ञानी, श्रोता ज्ञानी सो तो निमित्त अशुद्ध उपादान शुद्ध २. तीसरा वक्ता ज्ञानी, श्रोता अज्ञानी सो निमित्त शुद्ध, उपादान अशुद्ध ३. चौथै वक्ता ज्ञानी, श्रोता भी ज्ञानी सो निमित्त भी शुद्ध, उपादान भी शुद्ध। ४ यह चौभंगी पर्यायार्थिक की साधी। निमित्त उपादान शुद्ध अशुद्ध रूप विचार। इति चोभंगी रूप कारण वचानिका समाप्त।

॥ निमित्त उपादान का दोहा ॥

(प्रश्न)

गुरु उपदेश निमित्त विनु, उपादान बलहीन॥
ज्यों नर दूजे पांउ (पांव) विनु, चलिवे को आधीन ॥ १ ॥
हो जानै था एकही, उपादान सों काज ॥
थकै सहाई पौन विनु, पाणी मांहि जहाज ॥ २ ॥

॥ इन दोऊ को उत्तर ॥

ज्ञान नैन किरिया चरन, दोऊ शिव मग धार ॥
उपादान निहचै जहां, तहां निमित्त व्यौहार ॥ ३ ॥
उपादान निज गुन जहां, तहां निमित्त पर होइ ॥
भेद ज्ञान परवान विधि, विरला बूझै कोइ ॥ ४ ॥

उपादान बल जहां तहां, नहिं निमित्त को दाउ ॥
एक चक्र सों रथ चलै, रवि को यहै सुभाउ ॥ ५ ॥
सधै वस्तु असहाइ जहां, तहां निमित्त है कौन ॥
ज्यों जहाज परवाह में, तिरै सहज़ विनु पौन ॥ ६ ॥
उपादान विधि निर्वचन, है निमित्त उपदेश ॥
वसैजु जैसे देश में, करै सु तैसो तेज ॥ ७ ॥

इति पांच दोहरे, ऊपर के दोनु दोहा का जवाब बनारसीदासकृत समाप्त.

इति श्री निमित्त उपादान कारण भेद निर्णय समाप्तम् ॥

॥ परमार्थ हिंडोलना ॥

॥ राग मल्हार ॥

सहज हिंडोलना हरप हिंडोलना झूलत चेतन राव ।
जहां धरम करम संजोग उपजत रस सुभाव विभाव ॥
जहं सुमन रूप अनूप मंदिर सुरुचि भूमि सुरंग ।
तहां ज्ञान दर्शन खंभ अविचल चरन आड़ अभग ॥
मरुवा सुगुन परजाय विवरनभवर विमल विवेक ।
व्यवहार निश्चय नय सुदंडी सुमति पटली एक ॥ स० ॥ १ ॥
पट कील जहं पट द्रव्य निर्णय अभय अंग अडोल ।
उधम उदय मिलि देहि झोटा शुभ अशुभ कलोल ॥
संवेग संवर निकट सेवक विरति वीरी देत ।
आनन्द कन्द सुछन्द साहिब सुख समाधि समेत ॥ स० ॥ २ ॥
जह क्षिपक उपशम चमर ढारै धरम ध्यान उजीर ।
आगम अध्यातम अंगरक्षक शान्त रस वर वीर ॥
गुन थान विधि दश चारि त्रिया शक्ति निधि विस्तार ।

संतोष मित्र खवास धीरज सुजस खिजमतगार ॥स० ॥ ३ ॥
धारण समता खिमा करुणा चारि सखी चहुं ओर ।
निर्जरा दोउ चतुर दासी करहिं खिजमति जोर ॥
जहं विनय मिली शान्त सुहागिनि कराहि धुनि झनकार ।
गुरुवचन राग सिद्धन्त धुरपद ताल अर्थ विचार ॥ स० ॥ ४ ॥
सदहन सांची मेघ माला दान गरजत घोर ।
उपदेश वरषा अति मनोहर भविक चातक मोर ॥
अनुभूति दामिनि दमक दीसै वहै शील समीर ।
तप भेद तपती उच्छेद परगट भाव रंगित चीर ॥ स० ॥ ५ ॥
कबहूं विचारै करम प्रकृति एकसौ अठताल ।
कबहूं अबंध अदीन अशरण लखत आपहि आप ॥
कबहूं निरंजन नाथ मानत करत सुमिरन जाप ॥ स० ॥ ६ ॥
कबहूं गुनी गुन एक जानत नियत नय निरधार ।
कबहूं सुकर्त्ता करम किरिया कहत विधि व्यवहार ॥
कबहूं अनादि अनन्त चिंतवन कबहुं रहित उपाधि ।
कबहूं सुआतम गुण संभारत कबहु सिद्धि समाधि ॥ स० ॥ ७ ॥
इहि भांति सहज हिंडोल झूलत करत आतम काज ।
भव तरण तारन दुःख निवारण सकल मुनि शिरताज ॥
ते नर विचच्चण सदय लच्चण करत ज्ञान विलास ।
कर जोड़ि भक्ति विशेष विधि सों नमत केशोदास ॥
सहज हिंडोलना माहिं झूलत चेतन राव ॥ ८ ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ इति परमार्थ हिंडोलना ॥

॥ श्री ॥

॥ ध्यानबत्तीसी ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान स्वरूप अनन्त गुन, निराबाध निरुपाधि ॥
अविनाशी आनन्दमय, वंदो ब्रह्म समाधि ॥ १ ॥
भानु उदय दिन के समय, चंद्र उदय निशि होत ॥
दोऊ जाके नाम मय, सो गुरु सदा उद्योत ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

चेतहु प्रानी सुनि गुरु वानी । अमृत रूप सिद्धांत बखानी ॥
परगट दोऊ नय समुझावै । मर्मी होय मर्म सो पावै ॥ ३ ॥
चेतन जड अनादि सजोगी । आपहि कर्त्ता आपहि भोगी ॥
सहज स्वभाव सकति जब जागै । तब निश्चय के मारग लागै ॥ ४ ॥
फिरिके देहबुद्धि जब होई । नय व्यवहार कहावै सोई ॥
भेद * भाव गुन पंडित बूझै । जाको अगम अगोचर सूझै ॥ ५ ॥
प्रथमहिं दान शील तप भाव । नय निहचै व्यवहार लखाव ॥
पर गुन त्यागी बुधि जब होई । निहचै दान कहावै सोई ॥ ६ ॥
चेतन निज स्वभाव में आवै । तब सों निहचै शील कहावै ॥
कर्म निजरा होइ विशेषै । निहचै तप कहिये इह लेखै ॥ ७ ॥

---

* पाठांतर — भिन्न भाव

विमल रूप चेतन अभ्यासै । निहचै भाव तिहां परकासै ॥
अब सद् गुरु व्यवहार बखानै । जाकी महिमा सब जग जानै ॥ ८ ॥
मन वच काय सकति कछु दीजे । सो व्यवहारी दान कहीजे ॥
मन वच काय तजे जब नारी । कहिये सोइ शील व्यवहारी ॥ ९ ॥
मन वच काय कष्ट जब कहिये । ता सों व्यवहारी तप कहिये ॥
मन वच काय लगनि ठहरावै । सो व्यवहारी भाव कहावै ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

दान शील तप भावना, चारों सुख दातार ॥
निहचै सों निहचै मिलै, व्यवहारी व्यवहार ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु च्यार ध्यान हितकारी । पद पिंडस्थ रूप अधिकारी × ॥
रूपातीत कहौं समुझाई । चित निश्चल करि समुझो भाई ॥ १२ ॥
अरिहंत आदि पंच पद लीजे । तिन्ह के गुन का सुमरन कीजे ॥
गुन का खोज करत गुन लहिये । परम पदस्थ ध्यान सो कहिये ॥ १३ ॥
मुद्रा मूरति छबि चतुराई । कलाभेष बल बैस + बड़ाई ॥
रूप रंग रस गंध सुभाषा । ए पिंडस्थ ध्यान की शाखा ॥ १४ ॥
इन की संगति मनसा साधै । लगन सीखि निज गुन आराधै ॥
रहै मगन सो मूढ कहावै । अलख लखाव विचक्षण पावै ॥ १५ ॥
भिन्न भिन्न जड़ चेतन जोवै । गुन विलंछि गुन मांहिं समोवै ॥
यह रूपस्थ ध्यान सुखदाई । चिदानन्द चिद्रूप कहाई ॥ १६ ॥
आपु संभारि आपु सों जोरै । पर गुन सों सब नाता तोरै ॥
लगे समाधि ब्रह्ममय होई । रूपातीत कहावै सोई ॥ १७ ॥

× पाठान्तर साधहि मुक्ति पंथ व्यापारी. + थई.

॥ दोहा ॥

यह पदस्थ पिंडस्थ विधि, अरु रूपस्थ विचार ॥
रूपातीत व्यतीत मल, ध्यान च्यार परकार ॥ १८ ॥

॥ चौपाई ॥

ज्ञानी ज्ञान भेद परकासै । ध्यानी होय सो ध्यान अभ्यासै ॥
आरत रुद्र कुध्यानहिं त्यागै । धर्म सुकल के मारग लागै ॥ १९ ॥
आरत ध्यान चिन्तवन कहिये । जाकी संगति दुर्गति लहिये ॥
इष्ट वियोग विकलता भारी । अरु अनिष्ट संयोग दुःखारी ॥ २० ॥
तन की व्यथा मगन मन झूरै । अग्र सोचकरि वंछित पूरै ॥
ए आरत के च्यारों पाये । महा मोह रस सों लपटाये ॥ २१ ॥
अब सुनु रुद्र ध्यान की शैली । जहां पाप सों मति गति मैली ॥
मन उछाह सों जीव विराधै । हिये हर्ष धरि चौरी साधै ॥ २२ ॥
विकसित झूठ वचन मुख भाषै । आनंदित चित विषया राखै ॥
च्यारों रुद्र ध्यान के पाये । कर्म बंध के हेतु बनाये ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

आरत रुद्र विचार तें, दुःख चिन्ता अधिकाय ॥
जैसे बढ़ै तरंगिनी, महामेघ जल पाय ॥ २४ ॥

॥ चौपाई ॥

आरत रुद्र कुध्यान बखाने । धर्म ध्यान अब सुनहु सयाने ॥
केवल भाषित वाणी मानै । कर्म नाश को उद्यम ठानै ॥ २५ ॥

पूरब कर्म उदय पहिचानै । पुरुषाकार लोक स्थिति जानै ॥
च्यारों धर्म ध्यान के पाये । जे समुझे ते मारग आये ॥ २६ ॥
अब सुनु सुकल ध्यान की बातैं । मिटै मोह की सत्ता जातैं ॥
जोग साधि सिद्धान्त विचारै । आतम गुन पर गुन निरवारै ॥ २७ ॥
उपशम खिपक श्रेणी आरोहै । पृथक वितर्क आदि पद सोहै ॥
उपशम पंथ चढ़ै नाहिं कोई । खिपक पंथ मन निर्मल होई ॥ २८ ॥
तिहां विचार आप ठहराई । छद्मस्त बीतराग कहाई ॥
घनघाती ए कर्म तहां छीजा । एक वितर्क नाम पद बीजा ॥ २९ ॥
लोकालोक जहां परकासी । रहै कर्म की प्रकृति पच्यासी ॥
सूक्ष्म चित्त मनोबल सीजा । सूक्षम क्रिया नाम पद तीजा ॥ ३० ॥
जिनवर आयु निकट जब आवै । तहां अजोग गुण थान कहावै ॥
चरण चतुर्थ साधि सो पावै । परिवृत क्रिया निवृत कहावै ॥ ३१ ॥
अंतिम समै दोय जब रहई । प्रकृति बहत्तर तिहं ठां दहई ॥
पुनि तेरह को करै विनाशा । तब सो पावहि शिवपुर वासा ॥ ३२ ॥
जिन आगम में जैसे कही । भविक जीव तैसेंहि सर्धही ॥
सुकल ध्यान के चारों पाये । मुक्ति पंथ कारन समझाये ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

सुकल ध्यान औषधि लहे, मिटै कर्म को रोग ॥
कोइला छांडै कालिमा, होत अगनि संजोग ॥ ३४ ॥
यह परमारथ पंथ गुन, आगम अनन्त बखान ॥
कहत बनारसि अल्पमति, यथा सकति परवान ॥ ३५ ॥

॥ इति श्री ध्यानबत्तीसी सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ साधुवन्दना ॥

॥ ढाल १ ली ॥

रिसह जिण पमुह चौवीस जिण वंदिये। हेलि ससार ना दुःक्ख सहु छडिये॥ पुडरीकादि गणधार मुणि साहुणी। सार पर वार जग जासु महिमा घणी॥ १॥ भरह नरराय आयंसघरि पत्तओ। सार सिंगार नर नारि सजुत्तओ॥ ध्यान वल कर्म चय करि थया केवली। तेह नो नाम मन ध्याइये वलि वलि॥ २॥ एण परि अट्ठ आइच्च जस महजसो। नर वइ अति वलो मह वलो वर जसो॥ तेजवीरिय नमो दडवीरिय वली। नमूं जलवीरिय कित्त-वीरिय रली॥ ३॥ जम्बु पन्नत्ति ठाणग थीं भाषिया। भर्त्त जिम केवली केवली दाखिया॥ अह समै तेह ना नाम संभारिये। आवता पाप संताप सवि वारिये॥ ४॥ राय भिनिवेशि पएसि संबोहणो। केशी कुमार वर समण गण सोहणो॥ रायपसेणिये अग में जा-णिये। तेह गुरुआ तणा सुगुण मति आणिये॥ ५॥ धन्य ते खंधगो नाम परिवायगो। वीर जिन वचन थयो परम गुण साहगो॥ तुंगिया नेरिये तप संजमै फल कह्यो। उत्तमे श्रावके तहत करि सर्धयो॥ ६॥ पास संतानिया थिवर गुण सायरा। वीर सुपम-गियाहू तुमे तुहकरा॥ निगम अडसहे परिवार सजुत्तओ। विमल संजम धरो सिद्धि वर कत्तओ॥ ७॥

॥ ढाल २ जी ॥

उत्तम हिव शिवराय ऋषि महा सतीय जयन्ती । ऋषभ दत्त देवानन्द नमूं जिण जणणी हुंती ॥ पूरब भव दाखवियें वीर जिण जासु महा बल । जाणि सु दंसण सेठि थयो संजम गण सब्बल॥८॥ राय उदायण राज छंडि देस सिंधू सो वीर। चारित्र पाल्यो अति पवित्र मंदिर गिरि धीर ॥ पंचम अंगै सांभल्याए तेहना पय सरण। दुःख हरण सुखकरण सही टालै जनम मरण ॥९॥ मल्लि जिणेसर पुव्व मित्तबुद्धि नाम । इक्खागराय नृप संख जाणि काशी पुर ठांम ॥ रूपी कुणलाधिपति अंग राजा चंद्र छाय । अदीन शत्रु कुरु राय तिहां पंचालह राय ॥ १० ॥ जित शत्रु ए छः मिलि पास हुवा संजमधारी । विचर्या उग्र विहार शयल जिव उपगारी ॥ मंत्रि सुबुद्धि बोधियोए राजा जितशत्रु। लइ संजम अंतरंग जीत्या जिण शत्रु॥ ११॥ तेतलिपुत्र सुमित्र मकुट पोटिल पडिबोहिय। ध्यान बली ततकाल थयो केवल गुण सोहिय ॥ पुंडरीक मुनिराय हुवा सरवारथसिद्धि । सुर वर लहिशे कर्म खपी तप संजम सिद्धि ॥ १२ ॥ धन धन धर्म घोष सीस धर्म सचि अणगार । जीव उबारी जेण कर्यो कडु तुंब आहार ॥ पंडव पंचै नेमि सिद्धि संबालि संपत्तै । सत्रुंजय अणसण करि सिद्धि थया निर्मल चित्तै ॥ १३ ॥ थावच्चा सुयसे लगाय धन मेघ मुणिंदे । छट्ठे अंगै एह सुणि हुवा परम आणंदे ॥ यादव वंस प्रसिद्ध कह्यो उत्तम नर नारी । आदर संजम आदर्यो ए पहुंता भव पारी ॥ १४ ॥ भूपति अंधक विष्णु माय जसुधारणी जाय । गोयम पमूहा दशे कुमार हुवा मुणिराय ॥ भीखू पडिमा बारवही व्रत सोल वरीसे । पालिय सत्रुंजे सिद्धि थया तसु नामु शिष्षे ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

गोतम समुद्र कुमार, सागर गंभीर स्तिमित(सुमति)अचय पद वंदिय ए। कपिल नें अचोभ, कुमर प्रसेनजित विष्णु नाम दुह छंदिय ए॥ विष्णु पुत्र वलि आठ, धारणी अंगज गज जिम गुरु गुणि गाजताए। अचोभ सागर समुद्र, हिमवत गुणवत अचल धारण जग दीपताए॥ १६॥ पुरण नें अभिचद, मुनिवर आठ ए आठ करम खपिवा भणीए। आणी मन आणंद, तप गुण रयणह संवच्छर महिमा घणी ए। संजम सोल वरीस, पाली विमल गिरि संथारइ सिद्धि गया ए। ते संमरो निशि दीस, धन धन यादव वंश विभूषण हुवा ए॥१७॥ आणी यस कुमर, अनन्तसेन अजितसेन अणि हित रिपु गुण मन धरूं ए। देवसेन शत्रुसेन, ए छः देवकिनन्दन गुण कीरति करू ए॥ काजल सांमल देह, रूप अनोपम सहुए दीसै सम तुल्य ए॥ वांध्या देवानुभाव, भागि सोभागै ए नाग घरणी सुलसा घरै ए॥ १८ ॥ देशणा सुणी बत्रीस, नारि बत्रीसए कोड़ी सोवन जिह परिहरी ए। चउदै पूरव धार, अणसण सत्रुंजे गिरि करि शिव रमणी वरी ए ॥ वसुदेव धारणी पुत्र, सारण यति वर आतम तारण गुण नीलो ए। छंडी रमण पचास, कोडि पचासए सोवन यादव कुल तीलो ए ॥ १९॥ मुनिवर गज सुकुमाल, सोमिल उपसर्गे खिमा खड्ग जिण कर धरयो ए। वसुदेव राय मल्हार, देवकि नन्दन सिद्धि रमण सइचरि वरयो ए ॥ जाणंग शरीर द्रव्य, साधू जाणिय सुर वरि भक्ति कुसम वरषण करयो ए। नाटक गीत निनाद, उच्छव अति घणो जय जय रव मुख उच्चरयो ए ॥ २० ॥ समुह दुमुह कुमार, कुंवरिद्दारक अणादृष्टि मुनिवर तणा ए। वलदेव घर अवतार, माता धारणि जन गावै जस

गुण घणा ए ॥ सोवन कोडि पचास, रमणी पचासय परिहरि परमारथ धरयो ए। सत्रुजे शिहर विचार, जाणी अवसर काल संथारो जिण करयो ए॥ २१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

वसुदेव राय घरणी धारणी। घरणी शील निर्मल धारिणी ॥ तेहना नंदन जालि कुमार। जय जय यादव वंस सणगार ॥२२॥ कृष्ण पुत्र रुक्मणि अंगजात। निरुपम सम दम जगत विख्यात ॥ वारिसेण उवयाल मयाल। पुरससेण प्रजून संभाल ॥ २३ ॥ शंभु कुमर नृप कृष्ण मल्हार। जंबुवती उवरे अवतार ॥ वेदर्भि माता सुपरसिद्धि। पिता प्रजून कुमर अनऋद्धि॥ २४ ॥ सत नेमी दृढ़ नेमी वदीत। अंतर रिपु लीने जिण जीत ॥ समुद्र विजय शिवा देवी मल्हार ॥ यादव वंशे धन अवतार ॥ २५ ॥ जाली प्रमुख ए दसे कुमार। छांडी राज ऋद्धि भंडार ॥ सिंह जेम संजम आदरी। मुक्ति रमणि हेला सुवरी ॥ २६ ॥ पउमावै गोरी गंधार। लक्ष्मणा सुसिमा नामै नार ॥ जंबूवती सतभामा सही। रुकमणि कृष्ण घरणी ए कही ॥ २७ ॥ आठे अग्र महीषी ए जाणि। धरि संजम पहुंची निरवाणि ॥ शंभु कुमर घर अंते उरी। मूलदत्ता बीजी मूलसिरी ॥ २८ ॥ बे बे नेमि जिणेसर पांस। सुणी धरम मन नें उल्लास ॥ दुक्कर तप संजम प्रतिपाल। परमारथ साध्यो ततकाल ॥२९॥ यादव वंश विभूषण थया। नर नारी ए मुक्ती गया ॥ अष्टम अंग कह्या गुण घणा। मुझ नें चरण शरण तेह तणा ॥ ३० ॥ महकाई एक पुरुष प्रधान। तिण प्रणम्या स्वामी वर्द्धमान ॥ संजम पाली सोल वरीस। सिद्ध थया तसु नाऊं सीस ॥ ३१ ॥ अर्जुन माली

पाली दया। परिसह सहवा निश्चल थया॥ छट्ठै तप संजम छ' मास। आदरि कीदो शिव पुर वास॥ ३२॥ कासब खेम धृत धर कैलास। हारचिद नें पूरी मन आस॥ वीर सुदसण भद्र सुभद्र। सुमण भद्र पाम्यो शिव भद्र॥ ३३॥ सुप्रतिष्ट गुण गुरुओ मेह। तृण सम गिणी सहु धन देह॥ चरण करण सत्तरी भडार। वलि टाल्यो जिण भव अवतार॥ ३४॥ बालक माही रमतो बाल। अयमंतो गुण गयण विसाल। श्रीगोतम वहिरत गोचरी। देखी हरखी साथै करी॥ ३५॥ घर तेडी माता नें पास। प्रति लाभ्यो मन नें उल्लास॥ विर पास ससो आवीयो। तप संजम शिव पुर पामीयो॥ ३६॥ मोटो राजा नाम अलख। दुक्कर तप करतो नहु थक्क॥ विपुल गिरि सथारो करी। विर वचन शिव रमणी वरी॥ ३७॥ श्रेणिक नरवै अते- उरी। तेरह तेर क्रिया परिहरी॥ अष्टम अग भापि सुप्रसिद्धि। मुत्ति पुहुंती नीमीय सिद्धि॥ ३८॥ नदा नंदवती संजम अर्ती। नंदुत्तर-उत्तम गुणवती॥ चौथी राणी भणी नदणी। शिवा साधु सम आनदणी॥ ३९॥ मरुता ससम वलि सुमरुत्ता। मह मरुदेवा उपशम जुत्ता॥ भद्र सुभद्रा सुजया जाणी। समणा भूया दीन्न वखाणी॥ ४०॥ समणी शिरोमणि तेरह एह। दुक्कर तप सोपी निज-देह॥ सिद्ध थई कीधो भव अंत। दंसण नाणै सुक्ख अनत॥ ४१॥ दसे अनेरी श्रेणिक नारि। दुक्कर तप करि पहुती पार॥ तेह तणा हिव गुण वरणउ। जिम आणद लहु नव नवउ॥ ४२॥ काली रयणा वलि तप कीध। उत्तम सजम ऋद्ध समृद्ध॥ कण- कावलि सु काली देह। कर्म खप्या तप एह करेह॥ ४३॥ लहुडो सीहन कीडत तप कर्‍यो। महा काली आतम उद्धर्‍यो॥ कणहा राणी संजम लीध॥ महा सीहन कीडत तप कीध॥ ४४॥ देव

सु कन्हा श्रेणिक तणी । जगि जागै जसु महिमा घणी ॥ सत्तमि सत्तमिया एकही जाणि । अट्ठमि आठमिया सुई बखाणि ॥ ४५ ॥ तीजिय छै नवमी नवमिया । चौथी प्रतिमा दसम दसमिया ॥ ये चारै जिण प्रतिमा वही । साधु मारगी जिणवरनी कही ॥ ४६ ॥ मह कन्हा लघु सर्वतो भद्र । तप कर पाम्यो परम समुद्र ॥ सर्वतो भद्र बड़ो तप कह्यो । वीर कन्हा ते निरते लह्यो ॥ ४७ ॥ भद्रोत्तर प्रतिमा जे कही । राम कन्हा साहुणि ते वही ॥ पिउसेण कन्हा मुक्तावली । तप करि पूगी निज मनरली ॥ ४८ ॥ महसेण कन्हा सुगुण प्रधान । तिण कीन्हो आंबिल वर्द्धमान ॥ अंतगढ अंग कह्या गुण घणा । मुझ नें चरण शरण ते तणा ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ५ वीं ॥

हिव श्रेणिक सुत जालि मयालि । उवयाल अनोपम चरण-पालि ॥ थया सिद्धि पुरुष सेण वारीसेण । जीता जिण अंतर शत्रुसेन ॥ ५० ॥ दीहदंत मुनीसर लठदंत । श्रीहल्ल कुंवार समरीसि महन्त ॥ विहास चउवीह बुद्धि धार । जयवंता जाणी अभय कुमार ॥ ५१ ॥ व्रत पाली टाली घणी कषाय । पामियो जेणी अणुत्तर वाय ॥ ते साधु शिरोमणि चरण वंदि । मन हरष धरो जन तणे वृन्द ॥ ५२ ॥ वलि बीजो श्रेणिक ना कुमार । दीहसेण महासेण चरणधार ॥ लठदंत निपुण गुण गूढदंत । शुद्धदंत फुल्लद्रुम प्रसमवंत ॥ ५३ ॥ दूमसेण महादूमसेण सही । सिंहसेण महासेण भयवीह ॥ पुण्यसेण भया ए कुमर तेर । तप टाल्यो जिणि भव भ्रमण फेर ॥ ५४ ॥ काकंदी पुर भद्र कुमार । धन धन्नो धर्म निरति चार ॥ बत्रिस रमणी बत्रिस कोड़ि । धन संयम लीधो

जिण छोडी ॥ ५५ ॥ आंबिल तप पारै छठै सोई । आहार सु तजे न लेई कोई ॥ चउदह सहस श्रवण मंडल मंझारि । श्री वीर प्रसस्यो तप विचारि ॥५६॥ सो नामी अने परिणामधन्य । वंदेवि करि सुनिय जन धन्य ॥ सुनरकत्त मुनी सिय दास । निसल्ल पुल्ल मुनि गुण विकास ॥ ५७ ॥ वंदिवा मुनीसर राम पुत्र । पुठिल्ल माइ पेढाल मुत्र ॥ पौटिल्ल विहल्लद पय नमेसुं । त्रिहुं काले वंछिये फल लहेसुं ॥५८॥ ए बोल्या जिणवर नवमे अंग । अणुत्तर उवाइ नमउ रग ॥ इग्यारमे श्रंग बीह खद । दस बोल्या पूरै साधु खध ॥ ५९ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

कुमर सुबाहु वखाणियेजी, सोहग सुन्दर सार । भोग डुगंदक देवताजी, रूप मयण अवतार ॥ ६० ॥ मुनीसर जय जय गुण भंडार । तस नाम जपउ अनिवार ॥ मुनीसर जय जय गुण भंडार ॥ ६१ ॥ भद्रनन्द जग वंदियेजी, श्रीसुजात व्रतधार । वासुपूज्य सूं वासवोजी, श्रीमहचंद्र कुमार ॥ मुनीसर० ॥ ६२ ॥ श्रमण महाबल जाणियेजी, भद्रनद महचद । वरदत्त ये दस भाषियाजी, सेवै सुर नर वृन्द ॥ मुनीसर० ॥ ६३ ॥ पंच पच सय परिहरीजी, ऋद्धि सहित जिण नार । दस विध जती धर्म आदर्योजी, पूतातहु संसार ॥ मुनीसर० ॥ ६४ ॥ उत्तराध्ययन जे कह्याजी, ते संभारूं साध । सफल कर्यो जिण आपणोजी, धन मानव भव लाध ॥ मुनीसर० ॥ ६५ ॥ कपिल महा ऋष केवलीजी, प्रतिबोध्या जिण भील । भुत्रक भुत्रक सई पंचसैजी चरण करण नहिं ढील ॥ मुनीसर० ॥ ६६ ॥ हरिकैशी वलि वंदियेजी; चित्र मुनीसर जाणि । ब्रह्मदत्त पडिबोहियाजी, बोले मधुरी वाणी ॥ मुनीसर० ॥ ६७ ॥ कमलावती ए बोहियोजी, राजा श्रीइक्कु कुमार ।

भृगु बंभण घरणी जसाजी, तेहनां बेबे कुमार ॥ मुनीसर० ॥६८॥ ये छह अनुक्रमीनिकल्याजी, वैरागे सम काल।उग्रविहारई विहारताजी, सिद्धि थया सुखसाल ॥ मुनीसर० ॥६९॥ नृप संजम मृगया गयोजी, गर्द भिल्लि गुरु पास । वचन सुणी वैरागियोजी, संयत थयो उल्लास॥ मुनीसर० ॥ ७० ॥ राज ऋद्धि जिण परिहरीजी, क्षत्री राजकुमार संयम सों एकट्ठ थयाजी, कीधो धर्म विचार ॥ मुनिसर० ॥७१॥ भर्त्त सग्र मघवा भण्योंजी, नरवह सनतकुमार । शान्तिकुन्थु अर चक्रवैजी, पउममहा वृतधार॥मुनीसर० ॥ ७२ ॥ चतुर चतुर गति चूरणोजी, चक्कीसरहरि खेण । दशम चक्र जग जीतल्लोजी, अंतरंग रिपुसेण ॥ मुनीसर० ॥ ७३ ॥

॥ ढाल ७ वीं ॥

देस देसारण जाणिये, दसारण भद्द नरिन्दूए । वीर जिणेसर वंदतां, जिण जीत्यो सोहम इंदूए ॥७४॥ गाइस गुण गिरुआ तणा, आणी मन आणंदूए, जसु जस त्रिहुं जग झिगमगै, सेवै सुर नर वृन्दू ए ॥ गाइस० ॥ ७५ ॥ देश कलिंग बखाणिये, राजा श्री करकंडुए । द्विमुख पंचालह राजीयो, तारण तरण तरंडुए ॥ गाइस० ॥ ७६ ॥ मिथला नयरी नो अधिपति, नमि नामी मद माणु ए । नृप निनगति गंधारवै, पाम्यो केवल नाणूए ॥ गाइस० ॥७७॥ सेय महाबल वंदीये, स्रमण मृगा पुत्र जाणिये । कुमर अनाथी नाथ थयो, शयल जगे जे प्राणीए ॥ गाइस० ॥ ७८ ॥ उत्तम संजम गहगहै, समुद्र पाल रहै नेमीए । केशी गोतम बे मिल्या, मुगती पहुंता खेमिए ॥ गाइस० ॥ ७९॥ महाण कुल घरै दीपता, जयघोष विजयघोष नाम ए । बोल्या ऋषभल एतला, उत्तरा ध्ययन सुठामें ए ॥ गाइस० ॥ ८० ॥ सोहम

वचन आदर्यो, संजम जंबु कुमार ए । कोडि निन्नाणु परिहरी, नव परणी आठै नारी ए ॥ गाइस० ॥ ८१॥ प्रभव सिझंभ वदीये, जसभद्र श्रीभद्रबाहूए । विजय संबूती बखाणिये, थूल भद्र मुणि साहूए॥ गाइस० ॥ ८२ ॥ आर्य महा गिरि जग जयो, अज्ज सुहत्तिसुसूए । सुठिये सुपडि बद्ध मुणि वरू, तसु नाम दुरित सवि दूरूए ॥ गाइस० ॥८३॥ इन्द्रादिन्न गुरु गाईये, अज्ज दिन्न सुविचारूए । सींह गिरि सीह तणी परै, पाल्यो सयम भारूए ॥ गाइस० ॥ ८४ ॥ बालपणे जाईसरू, वयर कुमार वदीतूए । दस पूरव धर गुणनिलौ, विषय विकारण जीतूए ॥ गाइस० ॥ ८५ ॥ पन्नवणा जिण उद्धरी, धन्य ते आरज सामूए । देव-द्धि गण वर पय जुगै, अहि निसि करू प्रणामू ए ॥ ८६ ॥ गर्गाचार्य वदिये, साधुतणै आचारू ए । सुमति गुपति कर सोभता, नाम लिया निस्तारू ए ॥ गाइस० ॥ ८७ ॥ वलि अनेरा वदिये बाहु बल आद्र कुमारूए। पर वचन वचनै जे मिलै, ते नमता भव पारूए ॥ गाइस० ॥ ८८ ॥

॥ कलश ॥

इम जैन वाणी जोइ जाणी हियै आणी में भण्या ।
भव तरण तारण दु:ख निवारण साधु गुण मुख जे सुण्या॥
इम अछै मुनिवर जे होशे काल अनतै जे हुवा ।
जे सत्त छदैं पास चदै मन आणदे सु ठया ॥ ८९ ॥

॥ इति श्री साधुवन्दना सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ रामायण ॥

॥ राग सारंग ॥

विराजै रामा इन घट मांहि । मर्मी होय मरम सो जानै, मूरख मानै नांहि ॥ वि० ॥ १ ॥ आतमराम ज्ञान गुन लछिमन, सीता सुमति समेत ॥ शुभ पयोग वानर दल मंडित, वर विवेक रन खेत ॥ वि० ॥ २ ॥ ध्यान धनुष टंकोर शोर सुनि, गई विषै दिन भागि ॥ गई भसम मिथ्यामति लंका, बढी धारना आगि ॥ वि० ॥ ३ ॥ जरे अज्ञान भाव राक्षस कुल, लरे निकाचित सूर ॥ जूंझै राग दोष सेनापति, संशय गढ़ चकचूर ॥ वि० ॥ ४ ॥ विलखित कुंभकरन भव विभ्रम, पुलकित मन दरियाव ॥ थकित उदार वीर महि रावन, सेत वन्ध सम भाव ॥ वि० ॥ ५ ॥ मूर्च्छित मंदोदरी दुराशा, सजगे वर हनुमान ॥ घटी चतुर गति परणाति सेना, छुटे क्षिपक गुनवान ॥ वि० ॥६॥ निरखि सकति गुन चक्र सुदर्शन, उदै विभीषन दीन ॥ फिरै कमंध मोह रावन की, प्राणभाव शिर हीन ॥ वि० ॥७॥ इहि विधि सकल साधु घट अन्तर. होइ सहज संग्राम ॥ यह व्यवहार दृष्टि रामाइन, निहचै केवल राम ॥ विराजै रामाइन घट मांहि ॥ ८ ॥



॥ छुट्टा पद ॥

॥ राग आशावरी ॥

राम कहो रहमान कहो कोउ, कान्ह कहो महादेव री ॥ पारसनाथ कहो कोउ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेवरी ॥ राम० ॥ १ ॥ भाजन भेद कहावत नाना, एक मृत्तिका रूप री । तैसें खंड कल्पना रोपित, आप अखंड सरूप री ॥ राम० ॥ २ ॥ निज पद रमे राम सो कहिये, रहम करे रहमान री । करशें करम कान सो कहिये, महादेव निर्वाण री ॥ राम० ॥ ३ ॥ परसे रूप पारस सो कहिये ब्रह्म चीन्हे सो ब्रह्म री । इह विध साधो आप आनंद घन, चेतनमय निःकर्म री ॥ राम० ॥ ४ ॥

॥ राग सारंग ॥

चेतन शुद्धातम कुं ध्यावो। पर परचे धाम धूम सदाई, निज परचे सुख पावो ॥ चे० ॥ १ ॥ निज घर में प्रभुता है तेरी, पर संग नीच कहावो ॥ प्रत्यक्ष रीत लखी तुम ऐसी, गहिये आप सुहावो ॥ चे० ॥ २ ॥ यावत तृष्णा मोह है तुम को, तावत मिथ्या भावो ॥ स्व संवेद ज्ञान लहि करिवो, छंडो भ्रमक विभावो ॥ चे० ॥ ३ ॥ सुमता चेतन पति कुं इण विध, कहे निज घर में आवो ॥ आतम उच्च सुधारस पीये, सुख आनंद पद पावो ॥ चे० ॥ ४ ॥

॥ राग टोडी ॥

कथणी कथे सहु कोई, रहणी अति दुर्लभ होई ॥ कथ० ॥ ए

आंकणी ॥ शुक राम को नाम बखाणै। नवि परमारथ तस जाणै॥ या विध भणी वेद सुणावै। पण अकल कला नवि पावै ॥ कथ० ॥ १ ॥ षट्त्रीश प्रकारें रसोई। मुख गणतां तृप्ति न होई॥ शिशु नाम नहीं तस लेवै। रस स्वादत सुख अति लेवै ॥ कथ० ॥ २ ॥ बंदीजन कडखा गावै। सुणि सूरा सीस कटावै ॥ जब रुंडमुंडता भासै। सहु आगल चारण नासै ॥ कथ० ॥ ३ ॥ कहणी तो जगत मजूरी। रहणी है बंदी हजूरी॥ कहणी साकर सम मीठी। रहणी अति लागै अनीठी ॥ कथ० ॥ ४ ॥ जब रहणी का घर पावै। कथणी तब गिणती आवै॥ अब चिदानंद इम जोई। रहणी की सेज रहे सोई ॥ कथ० ॥ ५ ॥

॥ राग आशावरी ॥

मारग सांचा कोउ न बतावै ॥ जासूं जाय पूछिये ते तो, अपनी अपनी गावै ॥ मारग० ॥ ए आंकणी ॥ मतवारा मतवाद वाद धर, थापत निज मत नीका। स्यादवाद अनुभव बिन ता का, कथन लगत मोहे फीका॥ मा० ॥ १ ॥ मत वेदान्त ब्रह्मपद ध्यावत, निश्चय पख उर धारी ॥ मीमांसक तो कर्म वदे ते, उदय भाव अनुसारी ॥ मा० ॥ २ ॥ कहत बौद्ध ते बुद्ध देव मम, क्षणिक रूप दरसावै। नैयायिक नय वाद ग्रही ते, करता कोउ ठहरावै॥ मा०॥ ३ ॥ चारवाक निज मनःकल्पना, शून्य वाद कोउ ठाणै ॥ तिन में भये अनेक भेद ते, अपणी अपणी ताणै ॥ मा० ॥ ४ ॥ नय सरवंग साधना जा में, ते सर वंग कहावै ॥ चिदानंद ऐसा जिन मारग, खोजी होय सो पावै ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ समाप्तम् ॥